यूरोप की लोक कथाऐं–2

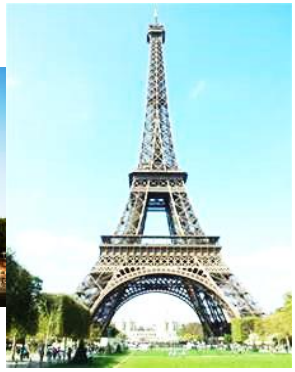

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Europe Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of Europe-2)
Cover Page picture: Big Ben (London), Colosseum (Rome), Eiffel Tower (Paris)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Europe

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

यूरोप की लोक कथाऐं–2 7

1 राजा माइडैस 9

2 ताश खेलने वाला 16

3 उत्तरी हवा और सूरज 21

4 भूखा भेड़िया 28

5 बैबो और एक बड़े साइज़ वाला आदमी 32

6 राजकुमार दयालु 43

7 एक चूहा 54

8 बेकर का आलसी बेटा 64

9 प्यार के तीन सन्तरे 70

10 घमंडी रानी 80

11 सुनहरे सितारों वाले लड़के 87

12 मॉ का लाड़ला जैक 102

13 मुर्गीखाने में लोमड़ा और साही 127

14 मौत की आवाज 132

15 कुत्ता, बिल्ली, चूहा 139

16 छोटा आधा मुर्गा 143

17 बादशाह के नये कपड़े 156

18 तीन सुनहरे सन्तरे 167

19 जादुई शीशा 184

20 चूहा और हाथी 190

21 गाय का सिर 194

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

यूरोप की लोक कथाऐं–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से बड़ा है। यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इस महाद्वीप की लोक कथाओं के बिना दुनियॉ का लोक कथा साहित्य अधूरा लगता है।

इस महाद्वीप में कुल मिला कर **50** से ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – इंगलैंड, नौर्स देशों के पॉच देश[1], जर्मनी, इटली आयरलैंड आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। शेष देशों की लोक कथाऐं "यूरोप की लोक कथाऐं" पुस्तक के अन्तर्गत दी गयी हैं।

इस महाद्वीप में सिन्डरैला की कहानी बहुत मशहूर है और वह इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही सुनी जाती है। सिन्डरैला के अलावा यहॉ कुछ और भी कथाऐं ऐसी हैं जो इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही जाती है। इस महाद्वीप की सबसे ज़्यादा कथाऐं, ब्रिटेन और जर्मनी की लोक कथाऐं, ग्रिम्स और ऐन्ड्रू लैंग की कथाओं के संग्रहों में मिलती हैं। कुछ अनुवादकों ने इटली की लोक कथाओं पर भी ध्यान दिया है। दूसरे देशों की लोक कथाऐं कम मिलती हैं और कुछ देशों की लोक कथाऐं तो मिलती ही नहीं हैं।

हालॉकि इस महाद्वीप से लोक कथाऐं हज़ारों में लिखी जा सकती हैं पर इस समय हमने यहॉ की केवल इंगलैंड, जर्मनी, आयरलैंड, नौर्स और इटली की लोक कथाओं पर खास ध्यान दिया है। इनकी कथाऐं हमने इन देशों के नाम से ही प्रकाशित की हैं। "यूरोप की लोक कथाऐं–1"[2] पुस्तक में हमने यूरोप के केवल उन देशों की लोक कथाऐं ही प्रकाशित की थीं जिन देशों की कथाऐं कम हैं।

"यूरोप की लोक कथाऐं–1" में यरोप के सारे देशों की कथाऐं नहीं आ पायीं सो शेष बचे हुए देशों की लोक कथाऐं "यूरोप की लोक कथाऐं–2" में प्रकाशित कर रहे हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऍ भी तुम लागों को वैसे ही बहुत पसन्द आयेंगी जैसे "यूरोप की लोक कथाऐं–1" की लोक कथाऐं आयी थीं। यूरोप की ये लोक कथाऐं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से तुम लोग पढ़ नहीं सकते वे सब अब तुम हिन्दी में पढ़ सकोगे।

---

[1] Nordic or Norse or Scandinavian countries are five – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

[2] "Europe Ki Lok Kathayen-1"

संसार के सात महाद्वीप

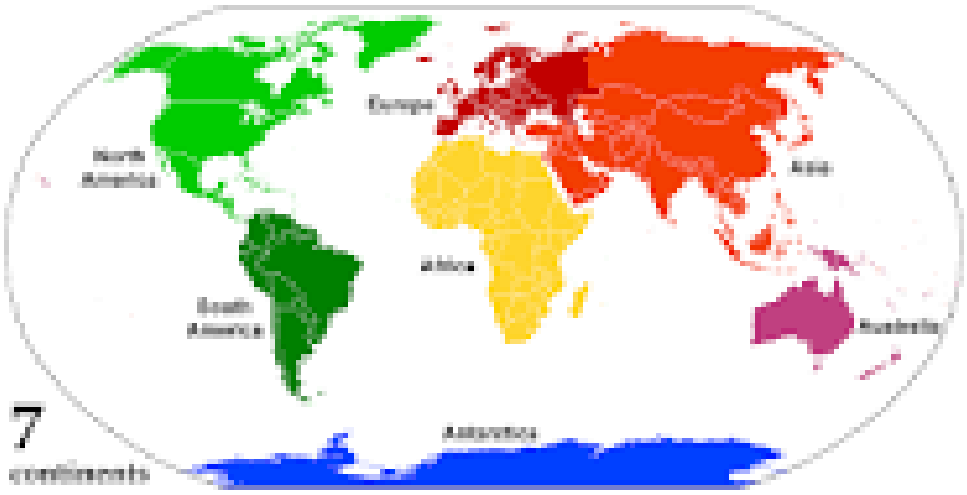

There are approximately 52 countries in Europe, but there are two distinctive geographical regions -
--The first one is United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland (4 countries) – United Kingdom, Great Britain or Britain is an island on which there are three countries – England, Scotland, Wales. Later Northern Ireland joined them, so now the “United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland” includes the Northern part of Ireland too.
-- The other one is Norse, or Nordic or Scandinavian countries (5 countries). There are five countries in Nordic Countries – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

1 राजा माइडैस[3]

यह लोक कथा यूरोप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह वहॉ की बहुत ही मशहूर लोक कथा है और दुनियॉ के बहुत सारे देशों में कही सुनी जाती है। तो लो तुम भी पढ़ो यह लोक कथा अब हिन्दी में।

यह बहुत पुरानी बात है कि यूनान देश में माइडैस नाम का एक राजा रहता था। उसके एक प्यारी सी बेटी थी जिसका नाम था मैरीगोल्ड[4]। राजा अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

यह राजा बहुत अमीर था और ऐसा कहा जाता है कि उसके पास दुनियॉ के किसी भी राजा से बहुत ज़्यादा सोना था। उसके बड़े से किले का एक बड़ा सा कमरा तो केवल सोने के टुकड़ों से ही भरा हुआ था।

धीरे धीरे माइडैस सोने का इतना लालची हो गया कि उसको सोने के अलावा दुनियॉ की और कोई चीज़ अच्छी ही नहीं लगती थी।

यहॉ तक कि वह उसको अपनी प्यारी सी गुलाबी गालों वाली बेटी से भी ज़्यादा चाहने लग गया था। इसके अलावा उसकी सोना पाने की इच्छा और भी बढ़ती ही जा रही थी।

[3] The King Midas – a folktale of Greece, Europe.
[4] Marigold – name of the daughter of King Midas

एक दिन वह अपने सोने वाले कमरे में बैठा सोना देख देख कर बहुत खुश हो रहा था कि उसके सामने एक परी लड़का[5] आ खड़ा हुआ।

उस लड़के का चेहरा एक अजीब रोशनी से चमक रहा था। उसके टोप और पैरों में पंख लगे हुए थे। उसके हाथ में एक अजीब सी दिखायी देने वाली जादू की छड़ी थी। उस जादू की छड़ी के ऊपर भी पंख लगे हुए थे।

उस परी लड़के ने कहा — "राजा माइडैस, तुम तो दुनियॉ के सबसे अमीर आदमी हो। दुनियॉ में और दूसरा कोई ऐसा राजा नहीं जिसके पास तुम्हारे पास जितना सोना हो।"

राजा बोला — "हॉ, यह सच हो सकता है। देखो मेरा यह कमरा पूरा सोने से भरा हुआ है। पर मुझे अभी और सोना चाहिये क्योंकि मेरे लिये सोना ही दुनियॉ में सबसे ज़्यादा अच्छी और सबसे ज़्यादा सुन्दर चीज़ है।"

लड़के ने पूछा — "क्या तुम यह बात यकीन के साथ कह सकते हो कि दुनियॉ में सोने से ज़्यादा अच्छी और कोई चीज़ नहीं है?"

राजा बोला — "हॉ, यह बात मैं यकीन के साथ कह सकता हूॅ।"

[5] Translated for the words "Fairy Boy" – normally fairies are women, but there are men also.

लड़का बोला — "अगर मैं तुम्हारी किसी एक इच्छा को पूरी करूँ तो क्या तुम और सोना लेना चाहोगे?"

राजा बोला — "अगर तुम मेरी केवल एक इच्छा पूरी करोगे तो मैं तो बस यही माँगूगा कि जो भी चीज़ मैं छू लूँ वह सोना हो जाये।"

लड़का बोला — "तो चलो मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी कर देता हूँ। कल सुबह सूरज निकलने के बाद जो भी चीज़ तुम छुओगे वह सोना बन जायेगी। पर मैं तुमको यह पहले से बता दूँ कि तुम्हारी यह इच्छा तुमको खुश नहीं कर पायेगी।"

राजा बोला — "मैं यह खतरा मोल लेने के लिये तैयार हूँ।"

अपनी इच्छा इतनी जल्दी पूरी होती देख कर तो राजा को रात भर नींद नहीं आयी। अगले दिन वह सुबह सवेरे जल्दी ही उठ गया।

वह यह देखने के लिये बहुत उत्सुक था कि उस परी लड़के की बात सच निकलती है या नहीं। अगर उसकी बात सच निकलती है तब तो उसके पास बहुत सारा सोना हो जायेगा और वह दुनियाँ का सबसे अमीर आदमी हो जायेगा।

सो जैसे ही सूरज निकला उस लड़के की बात की सच्चाई की जाँच के लिये उसने अपना पलंग धीरे से छुआ – लो वह तो तुरन्त ही सोने का हो गया। राजा की खुशी का ठिकाना न रहा।

खुश हो कर उसने फिर अपनी कुर्सियॉ और मेज छुईं। तो लो, वे सब भी सोने की हो गयीं। अब तो राजा खुशी से पागल सा हो गया। वह अपने कमरे में घूम घूम कर वहॉ रखी हर चीज़ को छूने लगा और उसकी छुई हुई हर चीज़ सोने में बदलने लगी।

कुछ देर तक यह जादू देख कर वह सन्तुष्ट हो गया कि उस लड़के की कही बात सच हो रही थी। सो अब उसने नाश्ता करने जाने का विचार किया।

वह मेज पर पहुॅचा और पानी का गिलास उठा कर पानी पीना चाहा तो वह तो गिलास भी सोने का हो गया। पर जैसे ही उसने गिलास मुॅह से लगाया और पानी उसके होठों से लगा तो वह पानी उसके होठों से लगते ही सोने का हो गया और वह पानी ही नहीं पी सका।

फिर उसने डबल रोटी उठा कर खानी चाही तो वह भी उसके हाथ से छूते ही सोने की हो गयी। फिर उसने कुछ मॉस खाना चाहा तो वह भी सोने का हो गया।

इस तरह वहॉ उसने जो भी कुछ छुआ वह सब सोने का हो गया और वह कुछ भी नहीं खा सका और बिना कुछ खाये पिये ही चला आया।

तभी उसकी प्यारी बेटी बागीचे में से दौड़ी दौड़ी आयी। सारी ज़िन्दा चीज़ों में वह अपनी बेटी को ही सबसे ज़्यादा प्यार करता था।

उसके आते ही राजा ने उसको अपनी गोद में उठा लिया। पर यह क्या? हाथों से छूते ही उसकी प्यारी बेटी भी सोने की मूर्ति बन गयी।

राजा यह देख कर तो इतना डर गया जैसे किसी ने उसकी ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ छीन ली हों। अब वह और नहीं सह सका। उसने उस परी लड़के को तुरन्त ही आवाज लगायी जिसने उसकी यह इच्छा पूरी की थी।

राजा ने उससे भीख मॉगी — "तू अपना यह भयानक वरदान वापस ले ले ओ परी लड़के। मेरी सारी जमीन ले ले, मेरा सारा सोना ले ले, मेरी हर चीज़ ले ले, पर मेरी बेटी मुझे वापस दे दे।"

वह लड़का तुरन्त ही वहॉ आ गया और बोला — "क्या तुम अभी भी यही सोचते हो कि सोना ही दुनियॉ में सबसे बड़ी चीज़ है?"

राजा रो कर बोला — "नहीं नहीं, मुझे अब इस पीले सोने को देखने से भी नफरत हो गयी है।"

लड़के ने पूछा — "तो क्या अब तुमको अपना यह "सुनहरा वरदान" नहीं चाहिये?"

राजा बोला — "नहीं, अब मुझे अपना सबक मिल गया है। अब मैं यह बिल्कुल भी नहीं सोचता कि सोना ही दुनियॉ की सबसे सुन्दर और अच्छी चीज़ है। तुम अपना यह वरदान वापस ले लो।"

वह लड़का बोला — "ठीक है। यह लो, यह घड़ा लो और बाहर बागीचे के फव्वारे से इसमें पानी भर लाओ। वह पानी उन सब चीज़ों पर छिड़क दो जिनको तुमने छुआ है और वे सोने की हो गयी हैं। उस पानी के छिड़कते ही वे सब पहले जैसी हो जायेंगी।"

राजा ने उस लड़के से तुरन्त ही वह घड़ा ले लिया और बाहर बागीचे की तरफ भागा। पानी भर कर सबसे पहले वह अपनी बेटी की तरफ भागा भागा आया और उस पर वह पानी छिड़का।

तुरन्त ही सोने की वह मूर्ति उसकी प्यारी बेटी मैरीगोल्ड बन गयी। उसने उसको प्यार से तुरन्त ही चूम लिया।

फिर उसने वह पानी उन सब चीज़ों पर छिड़का जो जो उसने छुई थीं। पानी छिड़कते है वे सब चीज़ें फिर से अपने असली रूप में आ गयी थीं। उसकी डबल रोटी, मॉस, मक्खन सभी कुछ असली हो गया था।

राजा ने सुबह से कुछ खाया नहीं था। उसे भूख लग रही थी सो वह अपनी बेटी को गोद में उठा कर खाने की मेज पर ले गया। वहॉ जा कर सबसे पहले उसने ठंडा पानी पिया। ओह कितना स्वादिष्ट था वह ठंडा पानी। वह अब भूखों की तरह नाश्ता कर रहा था।

इस घटना के बाद राजा को सोने से इतनी नफरत हो गयी कि उसने अपने कमरे में रखी हर चीज़ जो उसने छुई थी – पलंग, कुर्सी,

मेज और और भी कुछ, उस सब पर वह पानी छिड़क दिया। वे सब वापस अपने असली रूप में आ गयीं।

उसके बाद उसने सोने के लिये अपना प्यार छोड़ दिया।

2 ताश खेलने वाला[6]

यूरोप की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूनान देश की लोक कथाओं से ली है। यह भी एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

एक बार एक आदमी था जो ताश खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "एक दिन क्राइस्ट को दोपहर का खाना खिलाने के लिये बुलाओ।"

उसकी पत्नी ने क्राइस्ट को खाने का न्यौता भेजा। क्राइस्ट ने कहा "ठीक है मैं आऊँगा।" सो दोपहर को क्राइस्ट अपने सारे शिष्यों के साथ ताश खेलने वाले के घर खाना खाने आये।

जब ताश खेलने वाले की पत्नी ने इतने सारे लोग देखे तो वह बोली — "मेरे पास इतनी सारी रोटी तो नहीं है।"

क्राइस्ट बोले — "मेरा ख्याल है कि होगी। यह देखो मेरे पास यह रोटी है आज हम यही खायेंगे।"

खाने की मेज लगायी गयी और वे सब खाना खाने बैठे। क्राइस्ट ने रोटी को आशीर्वाद दिया और सबने खाना खाया। वह रोटी काफी ही नहीं बल्कि जरूरत से भी ज़्यादा थी।

[6] The Cardplayer – a folktale from Greece, Europe. Translated by Nick Nicholas in English. Adapted from the Web Site http://mw.lojban.org/papri/cardplayer

खाना खाने के बाद क्राइस्ट ने शराब पी और ताश खेलने वाले से पूछा कि वह क्राइस्ट से क्या चाहता था। क्राइस्ट के शिष्यों ने उसको सलाह दी कि वह उनसे स्वर्ग का राज्य माँग ले।

पर ताश खेलने वाले ने कहा — "मेरे घर में एक सेब का पेड़ है। मेरे घर बहुत सारे लोग आते हैं और उस पेड़ से वे सेब तोड़ कर ले जाते हैं। सो मैं यह चाहता हूँ कि जो कोई भी इस पेड़ से सेब तोड़े वह इससे चिपक जाये और जब तक मैं उसे न छुड़ाऊँ वह उस पेड़ से न छूटे।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट ने शराब का दूसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या और दूँ?"

क्राइस्ट के शिष्यों ने उससे फिर कहा स्वर्ग का राज्य माँग लो पर वह फिर बोला — "नहीं, अबकी बार मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मैं जब भी ताश खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट ने शराब का तीसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "अब तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

इस बार उसने कहा — "स्वर्ग का राज्य।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट यह कह कर वहॉ से चले गये और वह आदमी ताश खेलने चला गया। अब क्या था वह आदमी तो क्राइस्ट के वरदान से जिसके साथ भी ताश खेलता था उसी को जीत लेता था।

कुछ समय बाद क्राइस्ट को तो सूली पर चढ़ा[7] दिया गया और वह आदमी ताश खेलता रहा।

जब क्राइस्ट स्वर्ग के राज्य में पहुॅचे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये एक देवदूत[8] भेजा। वह देवदूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले से कहा — "तुम अब काफी खेल चुके अब तुम्हारी ज़िन्दगी खत्म। चलो स्वर्ग चलो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। मैं चलता हूॅ। तब तक तुम इस सेब के पेड़ से थोड़े से सेब खाओ और बस मैं तुम्हारे साथ अभी चलता हूॅ।"

वह देवदूत उस पेड़ से सेब तोड़ने गया पर जैसे ही उसने उस पेड़ को छुआ वह उससे चिपक गया। उसने ताश खेलने वाले से कहा कि वह उसको उस पेड़ से छुड़ा ले।

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है मैं तुमको छुड़ाने आता हूॅ पर जब मैं चाहूॅगा तभी आऊॅगा उससे पहले नहीं।" और यह कह कर वह इधर उधर घूमता रहा।

[7] Translated for the word "Crucified".

[8] Translated for the word "Angel"

जब वह इधर उधर घूमते घूमते थक गया तब वह देवदूत के पास आया और बोला — "मैं अब तुमको इस पेड़ से छुड़ाता हूँ और तुम्हारे साथ चलता हूँ।" कह कर उसने देवदूत को उस पेड़ से छुड़ाया और उसके साथ चल दिया।

रास्ते में नरक पड़ा। वहाँ हैडेस[9] अपने बारह छोटे साथियों के साथ बैठा था तो ताश खेलने वाला उससे बोला — "मैं तुमसे ताश की एक बाजी खेलना चाहता हूँ। अगर मैं हार गया तो मैं तुम्हारे पास हमेशा के लिये रह जाऊँगा और अगर तुम हार गये तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे साथी मुझे दे देना।"

हैडेस राजी हो गया और उसने ताश खेलना शुरू कर दिया। अब क्राइस्ट के वरदान के साथ उससे कोई जीत तो सकता नहीं था सो वह जीत गया और हैडेस से वह उसके बारह छोटे साथी ले कर चल दिया।

अब वह स्वर्ग आया। जब क्राइस्ट ने उस आदमी के साथ दूसरे लोगों को आते देखा तो उस आदमी से कहा — "मैंने तो केवल तुमको ही आने को कहा था पर तुम तो बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले आये हो।"

वह आदमी बोला — "मैंने भी तो खाने के लिये केवल आपको ही बुलाया था और आप तेरह लोग मेरे घर आये थे। मैं भी अपने साथ अपने बारह लोगों को ले कर आया हूँ।"

[9] Hades is the Devil

यह सुन कर क्राइस्ट ने सारे तेरह लोगों को स्वर्ग में आने की इजाज़त दे दी।

3 उत्तरी हवा और सूरज[10]

यह लोक कथा यूरोप के यूनान देश की ईसप की कहानियों से ली गयी है।

कुछ दिनों से उत्तरी हवा अपनी तेज़ सॉस फेंक फेंक कर सड़क के किनारों से पेड़ों से गिरी सूखी पीली पत्तियॉ साफ करने में लगा हुआ था। कभी कभी वह आसमान में तैरते बादलों को उछाल उछाल कर चिढ़ाता भी रहता था।

इस काम में उसको बड़ा मजा आ रहा था। कभी वह अपनी सॉस इधर फेंक देता कभी उधर। कभी वह इससे अपनी शान बघार लेता कभी उससे। खास कर के जब वह सूरज को देखता तो उसकी यह इच्छा और तेज़ हो जाती।

वह एक लम्बी सॉस लेता उसे अपने मुँह में भरता और सूरज की तरफ फेंक देता। इस तरह से वह अपनी पुरानी लड़ाई को बनाये रखने के लिये यह सब करता रहता।

सूरज जमीन को गर्म करने के लिये और कोहरे को हटाने के लिये मुस्कुरा कर नीचे धरती की तरफ देखता। वह झीलों और

[10] North Wind and the Sun – a fable from Greece, Europe. From Aesop's Tales.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192
Retold by Mike Lockett.
[My Note: The Greek historian Herodotus mentioned in passing that "Aesop the fable writer" was a slave who lived in Ancient Greece during the 5th century BC]

नदियों के जमते हुए पानी को गर्म करता जब तक वह तंग करने वाली उत्तरी हवा लोगों को तंग करने नहीं आ जाता।

उसके आने के बाद सूरज की मुस्कुराहट तब तक के लिये चली जाती जब तक कि उत्तरी हवा वहॉ से चला नहीं जाता।

जब उत्तरी हवा वहॉ फिर आता तो वह सूरज के पास पहुँच कर उससे कहता कि "देखो मैं कितना मजबूत और ताकतवर हूँ और तुम? तुम क्या हो।" और उसको कुछ कुछ बोलता रहता।

सूरज भी उसकी बात और उसके दिये हुए खराब नामों को न सुनने का बहाना करता हुआ आसमान में चलता रहता। उसके लिये दिन कहीं ज़्यादा अच्छा होता अगर वह बिना उत्तरी हवा के चलता रहता।

पर उत्तरी हवा की तरफ ध्यान न देने से तो काम नहीं बनता था। वह तो अपनी ताकत दिखाने के लिये बस बार बार सूरज के पास आ जाता और कभी उसके मुँह पर धूल के बादल फेंक जाता तो कभी उसके रास्ते में धूल भरी हवा उड़ा जाता। इससे आसमान में उसका रास्ता रुक जाता।

सूरज को मालूम था कि यह कुछ ही समय की बात है क्योंकि अगर वह चाहता तो वह किसी भी समय उससे हमेशा के लिये अपनी लड़ाई खत्म भी कर सकता था कि उन दोनों में कौन ज़्यादा ताकतवर था।

एक दिन सूरज रुका और रुक कर उसने उत्तरी हवा की तरफ देखा। सूरज को मालूम था कि उत्तरी हवा काफी ताकतवर था।

क्योंकि उत्तरी हवा ने यह सब सूरज को कई मौकों पर बड़ी अच्छी तरह से समझा दिया था कि वह उससे ज़्यादा ताकतवर है और सूरज ने उसकी ताकत की काफी तारीफ भी की थी पर उत्तरी हवा को सूरज से अपनी तारीफ से कुछ और ज़्यादा की उम्मीद थी।

वह चाहता था कि सूरज इस बात को स्वीकार करे कि वह उत्तरी हवा से कम ताकतवर था।

सूरज के लिये उत्तरी हवा के बराबर की ताकत को स्वीकार करना भी ठीक था पर यह तो हो ही नहीं सकता था कि वह उत्तरी हवा के अहम को सन्तुष्ट करने के लिये उत्तरी हवा से यह कहे कि उत्तरी हवा उससे ज़्यादा ताकतवर है।

सो एक दिन फिर इस बात को ले कर बहस शुरू हुई कि दोनों में कौन ज़्यादा ताकतवर है। उस दिन उत्तरी हवा ज़ोर से बहता हुआ सूरज के पास आया और बहुत शोर के साथ उसके सामने रुक गया।

बजाय उत्तरी हवा को अपनी जलती हुई निगाहों से देखने के सूरज ने अपने स्वभाव के अनुसार उसकी तरफ देख कर अपनी पलकें झपकायीं और मुस्कुरा दिया।

उत्तरी हवा उसके कानों में फुसफुसाया "गुड मौर्निंग सूरज।"

इस बार वह सूरज से शान्ति से बात करना चाहता था। वह बोला "तुम तो आज वाकई बहुत चमकीले लग रहे हो। मुझे लगता नहीं कि तुमने इस बात पर ध्यान भी दिया कि नहीं कि मैंने कल ही सड़कों का सारा कूड़ा उड़ा कर फेंक दिया।

मुझे मालूम नहीं कि ऐसा कोई और भी है जो एक दिन में इतना सारा काम कर सकता है।"

सूरज ने मान लिया कि वह बहुत अच्छा था पर फिर भी वह उससे बोला "पर इस दुनियॉ में जहॉ हम रहते हैं हम सब लोगों की अपनी अपनी एक जगह है।"

सूरज के इतना नम्र होने पर ध्यान न देते हुए उत्तरी हवा उससे फिर बोला "अच्छा तो अब यह बताओ कि तुम यह बात कब मानने जा रहे हो कि मैं तुमसे ज़्यादा ताकतवर हूॅ।" इस समय वह अपनी पुरानी बहस फिर से शुरू करने के लिये बिल्कुल तैयार था।

पर उस दिन सूरज उसको उसकी इस बात का कुछ जवाब देता कि उसने एक सीटी की आवाज सुनी। उसने चारों तरफ देखा तो उसको एक आदमी सड़क पर जाता हुआ दिखायी दिया।

पर वह आदमी तो उन दोनों में से किसी की तरफ भी ध्यान नहीं दे रहा था, न तो सूरज की तरफ और न ही हवा की तरफ। वह तो उनके झगड़े से बिल्कुल ही बेखबर अपनी धुन में सीटी बजाता चला जा रहा था।

पर उसकी सीटी ने सूरज का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया था। जैसे ही उसने नीचे देखा तो देखा कि वह आदमी तो एक कोट पहने हुए था।

उसके कोट को देख कर उसके मन में एक विचार आया कि आज इस हवा को अच्छा सबक सिखाया जा सकता है ताकि यह हमेशा के लिये अपनी लड़ाई खत्म कर दे।

सो वह बोला — "मैं यह बात मान सकता हूँ कि तुम मुझसे ज़्यादा ताकतवर हो अगर तुम इसके लिये मुझसे मुकाबले के लिये तैयार हो तो।"

अब उत्तरी हवा तो बहुत घमंडी था इसलिये वह तो उसके इस मुकाबले के लिये मना कर ही नहीं सकता था सो वह बोला — "मैं तुमको किसी भी मुकाबले में हरा सकता हूँ। बोलो मुकाबला बोलो।"

सूरज बोला — "ठीक है तो फिर बस यही शर्त रही कि जो कोई भी यह मुकाबला जीतेगा वही सबसे ज़्यादा ताकतवर समझा जायेगा।"

वह फिर आगे बोला — "देखो यह आदमी सड़क पर जा रहा है। इसने कोट पहना हुआ है। जो कोई भी इसका कोट उतरवा देगा वही ज़्यादा ताकतवर होगा।"

उत्तरी हवा बड़े घमंड से बोला — "ठीक है तो यही शर्त रही।"

अब उत्तरी हवा तो बड़े से बड़े पेड़ तक गिरा सकता था यह हल्का सा कोट उसके लिये क्या चीज़ थी।

तुरन्त ही वह आसमान से नीचे कूद गया और उसने उस आदमी कोट के नीचे से एक बहुत तेज़ फूँक मारी जिससे उसका कोट काफी ऊपर को उठ गया और उसके चेहरे पर जा कर लगा। उस आदमी ने अपना कोट नीचे किया और अपना चलना जारी रखा।

यह देख कर उत्तरी हवा को गुस्सा आ गया और वह और बहुत तेज़ और ठंडा हो कर चला। आदमी ने अब अपना कोट और कस कर लपेट लिया और उसका कालर भी ऊपर उठा कर अपनी गरदन से लपेट लिया।

तीसरी बार वह और तेज़ चला पर उसकी यह तेज़ी भी उसका कोट उतरवाने में कुछ काम न कर सकी बल्कि उसने तो ठंड के मारे अपने हाथ भी कोट के अन्दर ढक लिये और अपने कोट को अपने शरीर के चारों ओर और कस कर लपेट लिया।

अब सूरज की बारी थी। सूरज चमका तो गर्म हो गया। ठंडी हवा के बाद यह गर्मी उस आदमी को अच्छी लगी। उसने अपना सिर ऊपर उठाया और सूरज की तरफ देखा।

सूरज थोड़ा और चमका तो उस आदमी ने अपनी बाँहें कोट में से बाहर निकाल लीं। सूरज चमकता रहा तो उसकी गर्मी से उसने अपनी बाँहें नीचे कर लीं और कोट को छोड़ दिया।

सूरज थोड़ा और चमका तो उसने अपने कोट के बटन खोल दिये। और फिर सूरज थोड़ा और चमका तो उसने अपना कोट निकाल दिया और ठंडा होने के लिये एक पेड़ की छॉह में जा कर बैठ गया।

सूरज ने उत्तरी हवा से कुछ नहीं कहा। बस उसने उत्तरी हवा की तरफ मुस्कुरा कर देखा, नम्रता से घूमा और अपने रास्ते चल दिया।

अब किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं थी। उन दोनों को पता चल गया था कि सूरज के नम्र व्यवहार ने वह कर दिखाया जो उत्तरी हवा का ठंडा और सख्त व्यवहार नहीं कर सका था।

4 भूखा भेड़िया[11]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के लैटविया देश की है।

एक बार एक भेड़िया बहुत भूखा था सो वह अपना खाना ढूँढने निकला। जब वह अपना खाना ढूँढता ढूँढता जा रहा था तो उसको एक बड़ा मोटा सा बकरा[12] दिखायी दे गया।

वह बोला — "मिस्टर बकरे, मुझे बहुत भूख लगी है मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

बकरा बोला — "मगर तुम हो कौन? अगर तुम मुझको खाना ही चाहते हो तो पहले मुझे यह तो जानना ही चाहिये न कि तुम हो कौन।"

"मैं भेड़िया हूँ, बहुत भूखा भेड़िया। मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

बकरा बोला — "नहीं, तुम भेड़िये नहीं हो, तुम तो कुत्ते हो।"

भेड़िया बोला — "नहीं, मैं कुत्ता नहीं हूँ, मैं भेड़िया हूँ, और मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

बकरा बोला — "ठीक, अगर तुम भेड़िये हो तब मैं तुमको अपने आपको खाने दूँगा। तुम उस पहाड़ी के नीचे अपना मुँह बड़ा

---

[11] The Hungry Wolf – a folktale from Latvia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=228
Retold and written by Mike Lockett.

[12] Translated for the word "Ram"

सा खोल कर खड़े हो जाओ। मैं उस पहाड़ी के नीचे की तरफ भागता हुआ आऊँगा और तुम्हारे मुँह में आ कर कूद जाऊँगा।"

भेड़िया पहाड़ी के नीचे जा कर खड़ा हो गया और अपना मुँह खोल लिया। उधर बकरा पहाड़ी पर चढ़ गया और वहाँ से जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था दौड़ कर नीचे आया।

उसने अपने सींग नीचे कर रखे थे सो उनके भेड़िये से टकराने की वजह से वह भेड़िया तो नीचे गिर पड़ा और वह खुद दूर भागता चला गया।

भेड़िया उठा और सोचने लगा — "मुझे नहीं लगता कि मैं इस बकरे के लिये भूखा हूँ। मुझे अपने शिकार के लिये कहीं और चलना चाहिये।" सो वह कोई और शिकार ढूँढने के लिये चल दिया। तभी उसको एक घोड़ा दिखायी दिया।

वह बोला — "मिस्टर घोड़े, मैं बहुत भूखा हूँ मैं तुमको खाऊँगा।"

घोड़ा बोला — "मगर तुम हो कौन? इससे पहले कि तुम मुझे खाओ मैं यह जानना चाहूँगा कि तुम हो कौन?"

भेड़िया बोला — "मैं भेड़िया हूँ।"

घोड़ा बोला — "नहीं, तुम मुझे भेड़िये नहीं लगते, तुम तो मुझे कुत्ता लगते हो।"

"नहीं मैं कुत्ता नहीं हूँ मैं भेड़िया हूँ और मैं तुमको खाने वाला हूँ क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है।"

घोड़ा बोला — "ठीक है। अगर तुम भेड़िया हो तो मैं तुमको अपने आपको खाने दूँगा। पर मैं बहुत पतला सा हूँ। तुम मुझे मेरी पूँछ से खाना शुरू करो। जब तुम मुझे खा रहे होगे तो मैं अपने आपको मोटा करने के लिये घास खाता रहूँगा।"

सो भेड़िया घोड़े को उसकी पूँछ से खाने के लिये उसके पीछे पहुँच गया। उसने पहला कौर खाने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि घोड़े ने अपने पिछले पैरों से उसके मुँह पर मारा।

बेचारा भेड़िया पहाड़ से नीचे की तरफ लुढ़कता ही चला गया। काफी नीचे पहुँचने पर वह उठा और सोचने लगा — "मुझे नहीं लगता कि मैं इस घोड़े के लिये भूखा हूँ। मुझे अपने शिकार के लिये कहीं और जाना चाहिये।"

सो वह फिर से किसी और शिकार को ढूँढने के लिये चल दिया। आगे चलने पर उसको एक सूअर दिखायी दिया। वह बोला — "मिस्टर सूअर, मैं तुमको खाऊँगा क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है।"

सूअर बोला — "मगर तुम हो कौन? इससे पहले कि तुम मुझे खाओ मैं यह जानना चाहूँगा कि तुम हो कौन?"

भेड़िया बोला — "मैं भेड़िया हूँ।"

सूअर बोला — "नहीं, तुम भेड़िया नहीं हो तुम तो कुत्ता हो।"

भेड़िया बोला — "नहीं मैं कुत्ता नहीं हूँ मैं भूखा भेड़िया हूँ और मैं तुमको खाने वाला हूँ।"

सूअर बोला — "ठीक है। अगर तुम भेड़िया हो तो मैं तुम्हें अपने आपको खाने दूँगा। पर मैं पहले तुमको अपने ऊपर चढ़ा कर घुमाना चाहूँगा तब तुम मुझको खा लेना। आओ मेरे ऊपर बैठ जाओ।"

भेड़िये ने पहले कभी सूअर की सवारी नहीं की थी सो उसको लगा कि इसकी सवारी करने में तो बड़ा मजा आयेगा। भेड़िया तुरन्त ही सूअर की पीठ पर कूद कर चढ़ कर बैठ गया।

भेड़िये को अपनी पीठ पर चढ़ा कर सूअर एक बाड़ के नीचे से भागा। भेड़िया उस बाड़ से ज़ोर से टकरा गया और उसकी पीठ से नीचे गिर गया।

तभी वहाँ शहर के कुत्ते आ गये। भेड़िया बोला — "मुझे नहीं लगता कि मैं इस सूअर के लिये भूखा हूँ। हर कोई देखो, मैं कुत्ता नहीं हूँ, मैं तो भेड़िया हूँ, कुत्ते तो वे रहे।"

यह कह कर भेड़िया वहाँ से भाग गया और कुत्ते उसके पीछे लग गये। बेचारा भूखा भेड़िया।

5 ब्रैबो और एक बड़े साइज़ वाला आदमी[13]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नीदरलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है जब बड़े साइज़ के आदमी धरती पर बहुत हुआ करते थे। उसी समय की बात है कि वहॉ एक एन्टीगौनस[14] नाम का एक बड़े साइज़ का आदमी रहता था।

उसकी मॉ तो उसको इस नाम से नहीं पुकारती थी पर किसी ने उसको यह बता दिया था कि यह नाम यूनान के एक बहुत बड़े जनरल का नाम था सो उसने अपना वही नाम रख लिया था।

वह बहुत ही बदतमीज और बेरहम किस्म का आदमी था। उसका किला शैल्ट नदी[15] के किनारे पर था जहॉ आजकल ऐन्टवर्प[16] शहर बसा हुआ है।

फ्रांस और हौलैंड से बहुत सारे जहाज़ इस शैल्ट नदी के नीचे की तरफ जाया करते थे। उनमें लकड़ी ऊन लोहा चीज़ मछली रोटी कपड़े जो भी उस देश में बनता था लदा होता था। बहुत सारे व्यापारी तो वहॉ केवल इसी व्यापार से अमीर हो गये थे। इसलिये उनके बच्चों के पास खेलने के लिये बहुत सारे खिलौने थे।

---

[13] Brabo and the Giant – a folktale from Netherlands, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_folktale_10.html

[14] Antigonus – name of a Greek General

[15] Sheldt River. This river is in Belgium.

[16] Antwerp city is in Belgium.

यह नदी बहुत ही शानदार गहरी और चौड़ी थी। जहाज़ के कप्तानों को इस नदी में जहाज़ चलाने में बहुत मजा आता था क्योंकि इस नदी में चट्टानों का कोई डर नहीं था और जिन जिन देशों से हो कर यह बहती थी वे सब देश बहुत सुन्दर थे।

इसलिये रोज ही इस नदी में सैंकड़ों की तादाद में सफेद मस्तूल वाले जहाज़ समुद्र की तरफ जाते हुए या फिर समुद्र की तरफ से आते हुए देखने को मिल जाते।

बहुत सारे लड़के लड़कियॉ अपने लकड़ी के जूते पहने अक्सर ही इन जहाज़ों को आते जाते देखने के लिये नदी के किनारे पर आ कर खड़े हो जाते।

जो जहाज़ समुद्र की तरफ से अन्दर की तरफ आ रहे होते थे वे चीनी शराब सन्तरे नीबू औलिव और खाने की और दूसरी बहुत सारी अच्छी चीज़ें और गर्म कपड़े बनाने के लिये ऊन ले कर आते थे।

बहुत सारे हाथ का सामान बनाने वाले अपना बनाया सामान भी ले कर आते थे और वहॉ सुन्दर और बढ़िया घर, शानदार चर्च और बहुत सारी बिल्डिंग बनाने में सहायता करते थे। इससे बेल्जियन लोग बहुत खुश रहते थे।

लेकिन एक दिन यह नीच बड़े साइज़ का आदमी इस देश में जहाज़ों को रोकने के लिये और उनसे पैसे मॉगने के लिये आ गया तब से वहॉ के लोग दुखी हो गये।

वहॉ नदी के किनारे उसने अपना एक बहुत बड़ा और मजबूत किला बना लिया जिसके चारों तरफ उसने चार ऊॅची ऊॅची दीवारें बनवा लीं और जमीन के नीचे अॅधेरे तहखाने बनवा लिये। उनमें लोगों को मोमबत्ती जला जला कर रास्ता ढूॅढना पड़ता था।

लोगों को यही आश्चर्य था कि वह सब किस लिये था पर जल्दी ही उन्होंने इस बात का भी पता चला लिया।

इस बड़े साइज़ के आदमी के पास एक गॉठों वाला डंडा था जो ओक पेड़ की लकड़ी का बना हुआ था। एक दिन इस डंडे को ले कर वह शहर भर में इधर उधर घूमा और शोर मचा मचा कर सबको बड़े वाले चौराहे पर आने के लिये कहा।

जब सब लोग वहॉ इकट्ठा हो गये तो उसने उनसे कहा — "आज से मेरी आज्ञा के बिना न कोई जहाज़ यहॉ से जायेगा और न कोई जहाज़ यहॉ आयेगा। हर जहाज़ के कप्तान को मुझे टैक्स देना पड़ेगा चाहे वह नकद दे या सामान के रूप में दे।

और जो भी आदमी टैक्स देने से मना करेगा उसके हाथ कटवा कर उसको नदी में फिंकवा दिया जायेगा। तुम सब सुनो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

और जो कोई ऐसे किसी जहाज़ की सहायता करेगा जो बिना टैक्स के जाना चाहेगा चाहे वह दिन में हो रात में, उसके दोनों हाथों के अॅगूठे काट दिये जायेंगे और उसको अॅधेरे तहखाने में एक महीने के लिये डाल दिया जायेगा।

इसलिये सब मेरी बात ध्यान से सुनो और मेरी आज्ञा का पालन करो।"

ऐसा कह कर उस बड़े साइज़ के आदमी ने अपना डंडा ऊपर उठा कर हवा में घुमाया और एक गरीब देहाती आदमी की गाड़ी पर मारा जिससे उसकी गाड़ी टूट फूट गयी। यह उसने अपनी ताकत दिखाने के लिये किया था।

सो उस दिन के बाद से हर जहाज़ आते जाते समय बड़े साइज़ के आदमी के किले से हो कर जाता और भारी टैक्स देता। चाहे कोई अमीर होता या गरीब हर एक को टैक्स देना पड़ता।

अगर कोई कप्तान टैक्स देने से मना करता तो उसको एक पत्थर पर अपने दोनों हाथ, एक के ऊपर एक, रखने को कहा जाता। फिर वह बड़े साइज़ का आदमी अपनी कुल्हाड़ी उठाता और उससे उसके दोनों हाथ काट देता। उसके बाद उसको नदी में फेंक दिया जाता।

अगर किसी जहाज़ का कप्तान टैक्स देखने से हिचकिचाता क्योंकि उसके पास पैसे नहीं होते थे तो उसको तहखाने में डाल दिया जाता। वह वहॉ तब तक रहता जब तक उसका कोई आदमी उसका टैक्स दे कर उसको छुड़ा नहीं लेता।

इस सबसे वह शहर बहुत जल्दी ही बदनाम हो गया। अब फ्रांस के जहाज़ बाहर नहीं जाते थे और स्पेन के जहाज़ अन्दर नहीं आते थे। व्यापारियों का व्यापार डॉवाडोल होने लगा और वे रोज

गरीब से और गरीब होने लगे। यह देख कर कुछ लोगों ने तो शहर ही छोड़ दिया और कुछ लोग रात में जहाज़ ले जाने लगे। कुछ लोग चुपचाप से बड़े साइज़ के आदमी के किले से गुजरने लगे।

पर बड़े साइज़ के आदमी के चौकीदार भी जो किले की मीनारों पर खड़े रहते थे बहुत चौकन्ने थे। वे उल्लुओं की तरह जगे रहते थे और गिद्धों की तरह से लालची थे। जैसे ही वे जहाज़ के कप्तानों को इस तरह से टैक्स बचाता देखते तो वे उन पर झपट पड़ते उनके हाथ काट डालते और उनको नदी में फेंक देते।

अगर वे शहर के लोगों को जहाज़ पर देखते तो उनके दोनों हाथ के अँगूठे काट कर उनको तहखाने में फेंक देते।

इस तरह से शहर की शान नष्ट होती जा रही थी क्योंकि विदेशी व्यापारी इस बड़े साइज़ के आदमी के देश में अपने जहाज़ भेजने से डरते थे। शहर की साख भी खत्म होती जा रही थी।

जर्मन लोग इस शहर को "हाथ काटने वाला" या "हाथ फेंकने वाला" और डच लोग इसको ऐन्टवर्प कहने लगे थे। ऐन्टवर्प का मतलब भी वही होता था।

एक बार ब्रैबैन्ट का ड्यूक[17] इस बड़े साइज़ वाले आदमी से मिलने आया और उससे उसने कहा कि वह यह सब बन्द कर दे। यहाँ तक कि उसने उस बड़े साइज़ के आदमी की नाक के नीचे

[17] Duke of Brabant (name of a place). A Duke (male) or duchess (female) can either be a monarch ruling over a duchy or a member of the nobility, historically of highest rank below the monarch.

अपना घूँसा भी हिलाया, उसके किले पर हमला करने की और उसको जलाने की धमकी भी दी पर ऐन्टीगौनस ने उसकी तरफ देख कर केवल अपनी उँगलियाँ चटका दीं और हँस दिया।

उसके बाद उसने अपने किले को और ज़्यादा मजबूत करवा लिया और कप्तानों को टैक्स न देने पर हाथ कटवा कर नदी में फेंकने का और या फिर दोनों हाथों के अँगूठे काट कर अपने तहखाने में डालने का काम जारी रखा। नदी की मछलियाँ ऐसे कप्तानों को खा खा कर खूब मोटी होती जा रही थीं।

शहर में एक बहुत ही बहादुर और ताकतवर नौजवान रहता था जिसका नाम था ब्रैबो। वह ब्रैबैन्ट में ही रहता था। उसको अपने देश और उसके लाल काले और पीले झंडे पर बड़ा गर्व था। वह अपने लौर्ड का भी बड़ा वफादार था। उसने अपने लौर्ड की सहायता करने का निश्चय किया।

उसने किले के नक्शे की अच्छी तरह से जाँच पड़ताल की और उसने उसमें एक खिड़की ढूँढ ली जिसमें से वह ऐन्टीगौनस के कमरे में जा सकता था।

फिर वह इ्यूक के पास गया और उससे वायदा करवाया कि उसके सिपाही बड़े साइज़ के आदमी के किले के दरवाजे से अन्धाधुन्ध उसके किले में घुस जायेंगे जबकि वह खुद उस बदतमीज से लड़ेगा। जब वे उसके किले का दरवाजा तोड़ रहे होंगे तो वह दीवार के सहारे किले में ऊपर चढ़ जायेगा।

उसने ड्यूक से कहा कि ऐन्टीगौनस कुछ भी नहीं है बस केवल अपनी शान बघारने वाला है। और हमको उसे ऐन्टीगौनस की बजाय उसको शान बघारने वाले के नाम से ही पुकारना चाहिये।

ड्यूक इस हमले के लिये तैयार हो गया सो एक अँधेरी रात को ड्यूक के एक हजार सबसे अच्छे सिपाही अपने सबसे अच्छे हथियार और झंडे ले कर बड़े साइज़ के आदमी के किले की तरफ चल दिये।

पर उन्होंने अपने साथ कोई ढोल या भोंपू आदि कुछ नहीं लिया जो शोर मचाता। क्योंकि शोर मचाने से वह बड़े साइज़ का आदमी और उसके पहरेदार सब चौकन्ने हो जाते और यही वे चाहते नहीं थे।

जब वे किले के पास वाले एक बड़े से जंगल में पहुँचे तो वहाँ उन्हांने आधी रात होने का इन्तजार किया। शहर और देश के सारे कुत्ते जो पॉच मील के घेरे में थे उनका सबको पकड़ कर बन्द कर दिया गया था ताकि वे भौंक कर बड़े साइज़ वाले आदमी को न जगा दें। इसके अलावा उनको बहुत सारा खाना दे दिया गया था ताकि वे खाना खा कर फिर सो जायें।

जैसे ही उन सिपाहियों को इशारा मिला वे सब जहाज़ के मस्तूल और पेड़ों के तने ले कर उसके किले के दरवाजे तोड़ कर अन्दर घुस गये। मुख्य पहरेदार को काबू कर के उन्होंने मोमबत्तियाँ जलायीं

और तहखाने का ताला खोल कर उसमें से आधे भूखे लोगों को बाहर निकाला।

उनमें से कुछ तो बिल्कुल ही पीले पड़े हुए थे और बहुत सारे लोग डंडों की तरह से पतले दुबले हो रहे थे। वे तो खड़े भी मुश्किल से हो पा रहे थे।

उसी समय वह जगह जहॉ कुत्तों को बन्द कर के रखा गया था उसे खोल दिया गया। वहॉ से सब कुत्ते, बच्चों से ले कर शिकारी कुत्तों तक, चिल्लाते भौंकते निकल पड़े हो जैसे वे सभी जानते हों कि वहॉ क्या हो रहा था और वे भी उसका आनन्द लेना चाह रहे हों।

पर वह बड़े साइज़ का आदमी कहॉ था? कोई भी कप्तान उसको नहीं ढूँढ पाया। न तो कोई कैदी और न ही कोई मुख्य पहरेदार ही यह बता पाया कि वह कहॉ छिपा हुआ है।

पर ब्रैबो उस बड़े आदमी को जानता था कि वह बिल्कुल भी बहादुर नहीं है बल्कि एक शान बघारने वाला कायर है। इसलिये वह लड़का उससे बिल्कुल भी नहीं डर रहा था।

उसके कुछ साथियों ने दीवार के सहारे एक लम्बी सी सीढ़ी रखने में उसकी सहायता की। उसके बहुत सारे साथी बाहर के दरवाजे की रक्षा के लिये चले गये और वह खुद उस सीढ़ी पर चढ़ गया।

वहॉ से वह एक जगह टूटी हुई दीवार में घुस कर किले में दाखिल हो गया। यह जगह भी खिड़की की तरह कटी हुई थी जो उन लोगों के लिये काटी गयी थी जो तीर कमान चला कर पहरेदारी करते हों।

हाथ में तलवार लिये ब्रैबो बड़े साइज़ वाले आदमी के कमरे की तरफ बढ़ा। उस नौजवान को अपने कमरे में देख कर बड़े साइज़ का आदमी अपना डंडा पकड़ कर उसको मारने के लिये बढ़ा और उस डंडे से ब्रैबो को इतनी जोर से मारा कि वह डंडा ही फर्श में अन्दर तक घुस गया।

उधर ब्रैबो उसका यह वार बचा गया और पल भर में ही उसने अपनी तलवार घुमा कर बड़े साइज़ के आदमी का सिर काट कर खिड़की के बाहर फेंक दिया।

जैसे ही वह सिर नीचे गिरा वहॉ बहुत सारे कुत्ते आ गये। उनमें से सबसे बड़े कुत्तों में से एक ने वह ट्रौफी उठायी और उसको ले कर भाग गया।

पर बड़े साइज़ के आदमी के हाथों का क्या हुआ? वे ब्रैबो ने खुद काटे जो उस किले की सबसे ऊॅची मीनार पर खड़ा था। यह देख कर नीचे खड़े लोगों ने खूब खुशियॉ मनायीं और खूब तालियॉ बजायीं।

सबसे अच्छी बात तो यह थी कि सब लोगों को पता था कि क्या हो रहा है और वे सब ब्रैबो की बहुत तारीफ कर रहे थे।

अगले ही पल ऐन्टवर्प के सारे घरों में मोमबत्तियॉ जल उठीं और सारा शहर जगमगाने लगा।

किले के दरवाजे से कुछ लड़कियॉ आयीं जो सफेद कपड़े पहने हुई थी पर उनकी लीडर पीले लाल और काले रंग के कपड़े पहने थी जो ब्रैबेन्ट के झंडे के रंग थे। वे सब ब्रैबो की बहादुरी के गीत गा रही थीं।

ऐन्टवर्प के एक बड़े आदमी ने कहा — "अब हमको शहर के बदनामी वाले नाम छोड़ देने चाहिये और उसको एक नया नाम देना चाहिये।"

वहॉ के राजा ने कहा — "नहीं नहीं। हमको इसका वही नाम रखना चाहिये और सब शान्ति चाहने वाले जहाज़ों को फिर से बुलाना चाहिये। ऐन्टवर्प की बॉहें किले के ऊपर दो लाल हाथ के रूप में रहनी चाहिये।"

सारे नागरिक चिल्लाये — "ऐसा ही हो।"

ब्रैबैन्ट का ड्यूक भी राजी हो गया और उसने ब्रैबो की बहादुरी के लिये शहर को और भी कई फायदे दे दिये।

इसके बाद तो फिर बहुत सारे देशों के हजारों जहाज़ वहॉ से अपना सामान उतारते चढ़ाते गुजरने लगे और ऐन्टवर्प का बन्दरगाह और सब बन्दरगाहों से आगे निकल गया और फिर से बहुत अमीर हो गया।

आज भी वहॉ के चौराहे पर ब्रैबो की कॉसे[18] की मूर्ति लगी हुई है। बिना सिर का और बिना हाथ का ऐन्टीगोनस भी वहीं पर पड़ा हुआ है। उसके शरीर पर ऐन्टवर्प का किला खड़ा हुआ है। और इस सबके ऊपर बहादुर ब्रैबो खड़ा हुआ है।

ब्रैबो के हाथ में ऐन्टैगोनस की एक बॉह है जिसको वह शैल्ट नदी में फेंकने वाला है।

[18] Translated for the word “Bronze” metal

6 राजकुमार दयालु[19]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पोलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि पोलैंड देश में एक राजा राज करता था। उसके एक ही बेटा था जिसका नाम था राजकुमार दयालु। जब वह बीस साल का हुआ तो उसने अपने पिता से कहा कि वह बाहर घूमने जाना चाहता है।

उसके पिता ने उसको यात्रा के लिये तैयार कर दिया। उसको एक बहुत बढ़िया घोड़ा दिया सवारी के लिये और एक खास नौकर दिया उसकी रक्षा के लिये और अपने आशीर्वाद के साथ उसको विदा किया।

राजकुमार ने अपने पिता से विदा ली, घोड़े पर सवार हुआ और अपनी विदेश यात्रा पर निकल पड़ा। वह कई देश गया, भगवान की बनायी दुनियॉ देखने के लिये, बहुत कुछ सीखने के लिये और एक अक्लमन्द और एक बेहतर आदमी बन कर घर लौटने के लिये।

[19] Prince Kindhearted – a folktale from Poland, Europe . Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_Folktale_5.html

एक बार राजकुमार एक शान्त मैदान से गुजर रहा था कि उसको एक गरुड़[20] एक हंस का पीछा करता दिखायी दे गया। गरुड़ ने उस हंस को करीब करीब पकड़ ही लिया था कि राजकुमार ने उस गरुड़ को अपनी गोली का निशाना बना दिया।

गरुड़ मर गया और हंस नीचे आ गया। हंस बोला — "राजकुमार दयालु, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। यह हंस नहीं है जो तुम्हें धन्यवाद दे रहा है बल्कि यह अदृश्य नाइट[21] की लड़की है जो तुम्हें धन्यवाद दे रही है। और तुमने उसको एक गरुड़ के पंजे से नहीं बल्कि एक नीच जादूगर राजा कोश्चेव[22] के पंजे से बचाया है।

मेरे पिता तुमको तुम्हारी सेवा के लिये तुम्हें बहुत कुछ देंगे। याद रखना जब भी कभी तुम किसी परेशानी में हो या तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत हो तो तुम तीन बार कहना "ओ अदृश्य नाइट, मेरी सहायता करो। ओ अदृश्य नाइट, मेरी सहायता करो। ओ

[20] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

[21] Invisible Knight – a knight is a person granted an honorary title of "knighthood" by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity

[22] King Koscheyv, or Koschei, or Koshchey is a Slovac folktales character. Koschev, means skeleton, is an archetypal male antagonist, described mainly in Polish, Russian, Ukranian and Czeck folktales as a very old and ugly-looking man. He is also known as "Koschei, the Deathless". Vitali Vitaliev describes him in his book "Granny Yaga" (or Baba Yaga) as a tall, although in excellent health, but still extremely and almost inhumanly thin.

अदृश्य नाइट, मेरी सहायता करो।" तो वह जरूर आयेगा और तुम्हारी सहायता करेगा।

वह हंस यह कह कर तुरन्त ही उड़ गया। राजकुमार उसको देखता रह गया और जब तक देखता रहा जब तक वह उसकी ऑखों से ओझल नहीं हो गया। वह अपनी यात्रा पर फिर से चल दिया।

उसने बहुत सारे ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ पार किये, गहरी नदियों से हो कर गुजरा, कई देशों को पार किया। आखिर में वह एक ऐसे रेगिस्तान में आ गया जहॉ वह केवल आसमान और दूर तक फैला हुआ रेत ही देख सकता था।

वहॉ कोई आदमी नहीं रहता था, किसी ने किसी जानवर की आवाज भी नहीं सुनी थी, कोई पेड़ पौधा भी दिखायी नहीं देता था। सूरज अपनी पूरी तेज़ी से चमक रहा था और वहॉ कहीं पानी भी नहीं दिखायी देता था।

क्योंकि राजकुमार इधर उधर जा कर बहुत सारी जगह देखने के लिये बहुत उत्सुक था पर उसको इस बात का अन्दाज ही नहीं था कि वहॉ कितना सूखा था सो वह रेगिस्तान में अन्दर की तरफ चलता गया और चलता गया।

सूरज बहुत ज़ोर से चमक रहा था। गर्मी बढ़ गयी थी सो कुछ समय बाद राजकुमार को प्यास लग आयी तो उसने पानी की तलाश

में अपने नौकर को एक तरफ भेजा और खुद दूसरी तरफ चल दिया। काफी दूर जाने के बाद उसे एक कुँआ दिखायी दिया।

वह वहीं दूर से ही चिल्लाया — "वापस आ जाओ मुझे पानी की जगह मिल गयी है।"

वह और उसका नौकर दोनों ही उस कुँए को उस रेगिस्तान में देख कर बहुत खुश थे पर थोड़ी ही देर में उनकी खुशी गायब हो गयी क्योंकि उनके पास पानी निकालने के लिये तो कुछ था ही नहीं।

राजकुमार ने अपने नौकर से कहा — "ऐसा करो कि तुम घोड़े से उतरो। मैं तुमको एक लम्बी रस्सी से इस कुँए में नीचे उतारता हूँ और फिर तुम उसका पानी ऊपर ले आना।"

नौकर बोला — "नहीं राजकुमार, मैं आपसे ज़्यादा भारी हूँ और आप मुझे नहीं सँभाल पायेंगे इसलिये मैं रस्सी पकड़ता हूँ और आपको कुँए में नीचे उतारता हूँ।"

सो राजकुमार ने अपनी कमर में रस्सी बाँध ली और कुँए में नीचे उतर गया। वहाँ जा कर उसने ठंडा पानी पिया और कुछ पानी अपने नौकर के लिये ले कर नौकर को यह बताने के लिये कि वह अब रस्सी ऊपर खींच ले रस्सी को थोड़ा सा झटका दिया।

लेकिन बजाय राजकुमार को ऊपर खींचने के नौकर बोला — "सुनो ओ राजकुमार, बचपन से ले कर अब तक तुम शाही ज़िन्दगी

जीते रहे हो। तुमने सारे सुख भोगे हैं। सबका प्यार पाया है। और मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी बदकिस्मती की ज़िन्दगी जी है।

अब तुम मेरा नौकर बनने के लिये राजी हो और मैं राजकुमार तभी मैं तुमको इस कुँए में से निकालूँगा वरना अपनी आखिरी प्रार्थना कर लो क्योंकि अब मैं तुम्हें डुबोने जा रहा हूँ।"

राजकुमार तो यह सुन कर सकते में आ गया। वह गिड़गिड़ाया — "मेरे प्यारे नौकर, तुम मुझे इस तरह मत डुबोओ क्योंकि मुझे डुबोने से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। तुम्हें मेरे जैसा अच्छा मालिक कहीं नहीं मिलेगा। और तुम्हें यह भी मालूम है कि कत्ल करने वाले की दूसरी दुनियॉ में क्या सजा होती है।"

नौकर बोला — "मुझे दूसरी दुनियॉ में जो कुछ मिलेगा मैं वह सह लूँगा पर इस दुनियॉ में तो मैं तुमको दुख दे कर ही रहूँगा।" कह कर उसने रस्सी ढीली करनी शुरू कर दी।

राजकुमार नीचे से चीखा — "रुक जाओ, रुक जाओ। मैं तुम्हारा नौकर और तुम मेरे राजकुमार। यह मेरा वायदा है।"

नौकर बोला — "मुझे तुम्हारी बातों पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं है। कसम खाओ कि तुमने अभी जो कुछ कहा है वह तुम मुझे लिख कर दोगे। क्योंकि तुम्हारे शब्द तो हवा में खो गये पर लिखा हुआ तो हम लोगों के लिये हमेशा रहेगा।"

राजकुमार बोला — "मैं कसम खाता हूँ कि यह मैं तुमको लिख कर भी दूँगा।"

नौकर ने तुरन्त ही एक कागज और एक पेन्सिल कुँए में फेंक दी और राजकुमार से कहा — "लो, लिखो इस कागज पर कि "इस कागज को लाने वाला लड़का राजकुमार दयालु है जो अपने नौकर के साथ यात्रा कर रहा है जो उसके पिता के राज्य का एक मामूली नागरिक है।"

यह नोट लिख कर राजकुमार ने उस कागज को ऊपर भेज दिया। नौकर ने वह नोट पढ़ा और राजकुमार को ऊपर खींच लिया। उसने राजकुमार को अपने कपड़े पहना दिये और उसके कीमती कपड़े खुद पहन लिये। उन्होंने आपस में अपने अपने कवच और घोड़े भी बदल लिये और वे अपनी यात्रा पर फिर से चल दिये।

करीब एक हफ्ते बाद वे एक राज्य की राजधानी में पहुँचे। जब वे वहाँ के राजा के महल के पास पहुँचे तो नकली राजा ने नकली नौकर को अपना घोड़ा थमाया और उसको घुड़साल में जाने के लिये बोला और वह खुद राजगद्दी वाले कमरे की तरफ चला गया।

वहाँ जा कर वह राजा से बोला मैं आपकी बेटी का हाथ माँगने आया हूँ जिसकी सुन्दरता और अक्लमन्दी के बारे में दुनियाँ जानती है। अगर आप राजी हैं तो आपको हमारी दोस्ती मिलेगी नहीं तो फिर हम इसको लड़ाई से तय करेंगे।

यह सुन कर राजा बोला — "तुम तो शाही तरीके से बिल्कुल ही नहीं बोल रहे हो जैसे कि एक राजकुमार को बोलना चाहिये। लगता है कि तुम्हारे राज्य में अच्छे तौर तरीके नहीं इस्तेमाल किये जाते।

मेरे होने वाले दामाद अब तुम मेरी बात सुनो। मेरा राज्य इस समय मेरे दुश्मनों के कब्जे में है। उसने मेरे बहुत सारे अच्छे अच्छे सिपाहियों को अपने कब्जे में कर रखा है और अब वे मेरी राजधानी की तरफ बढ़ रहे हैं।

अगर तुम मेरे राज्य को मेरे उस दुश्मन से बचा लोगे तो इनाम के तौर पर मैं अपनी बेटी का हाथ तुम्हारे हाथ में दे दूँगा।"

"ठीक है।" नकली राजकुमार बोला। "अगर वे आपकी राजधानी तक आ पहुँचे हैं तो आप चिन्ता न करें मैं आपके दुश्मन को यकीनन भगा दूँगा। कल सुबह तक आपके देश में कोई दुश्मन नहीं रहेगा।"

शाम को वह महल के बाहर गया और अपने नकली नौकर को बुला कर उससे कहा — "सुनो, शहर के बाहर जाओ और वहाँ कुछ दुश्मन हैं उनको जा कर भगा आओ। तुम्हारी इस सेवा के बदले में मैं तुम्हारा वह नोट तुमको वापस कर दूँगा जिसमें तुमने अपना राज्य मुझे दे दिया था और मेरे नौकर बनने की कसम खायी थी।"

असली राजकुमार ने नकली राजकुमार से अपना कवच ले कर पहना और अपने घोड़े पर सवार हो कर शहर के बाहर आ गया बाहर आ कर वह तीन बार ज़ोर से चिल्लाया "ओ अदृश्य नाइट मेरी सहायता करो। ओ अदृश्य नाइट मेरी सहायता करो। ओ अदृश्य नाइट मेरी सहायता करो।"

अदृश्य नाइट तुरन्त ही बोला — "मैं यह रहा। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ? मैं तुम्हारे लिये कुछ भी करने को तैयार हूँ क्योंकि तुमने मेरी बेटी को जादूगर राजा कोश्चेव[23] से बचाया था।"

राजकुमार दयालु ने उसको वहाँ के राजा की वह दुश्मन सेना दिखायी और उनको वहाँ से भगाने के लिये कहा। उस अदृश्य नाइट ने एक सीटी बजायी और अपने अक्लमन्द घोड़े को तुरन्त आने के लिये कहा।

तुरन्त ही ज़ोर की ऑधी चलने लगी, बिजली चमकने लगी, धरती कॉपने लगी और एक बड़ा आश्चर्यजनक घोड़ा वहाँ आ खड़ा हुआ।

उसके ऊपर सुनहरी जीन बिछी थी और सुनहरी लगाम लगी थी। उसके नथुनों से आग निकल रही थी, उसकी आखों से चिनगारियॉ निकल रहीं थीं और उसके कानों से धुँए के बादल निकल रहे थे।

[23] Koshchev is a Russian folktale character.

वह अदृश्य नाइट उस घोड़े पर कूद कर बैठ गया और राजकुमार से बोला — "लो यह जादू की तलवार लो और दुश्मन पर बॉयी तरफ से वार करो। मैं अपने इस सुनहरी जीन वाले घोड़े पर बैठ कर दुश्मन पर दॉयी तरफ से वार करता हूँ।"

इस तरह दोनों ने दुश्मन पर दोनों तरफ से वार किया। बॉयी तरफ से दुश्मन लकड़ी की तरह कट रहा था और दॉयी तरफ से वह पूरे के पूरे जंगल की तरह से कट रहा था। एक घंटे में ही दुश्मन की सारी सेना गायब हो गयी।

कुछ सिपाही वहीं मरे पड़े रह गये कुछ भाग गये। राजकुमार दयालु और अदृश्य नाइट दोनों ने आपस में हाथ मिलाये और एक मिनट के अन्दर ही नाइट का घोड़ा पहले लाल चमकती रोशनी में बदला, फिर धुँए में बदल कर गायब हो गया। राजकुमार चुपचाप महल लौट आया।

उस शाम राजकुमारी बहुत दुखी थी। वह रात भर सो नहीं सकी सो वह वह अपनी खिड़की के पास बैठी बाहर देखती रही। उसी समय उसने नकली राजकुमार और उसके नकली नौकर को आपस में बात करते सुना।

तब उसको पता चला कि शहर में क्या हो रहा था। उसने छिपे हुए नाइट को भी गायब होते देख लिया था और नकली नौकर को भी महल में आते देख लिया था।

फिर उसने देखा कि कैसे नकली राजकुमार महल से निकला और कैसे उसने शाही कवच अपने नौकर से बदला और फिर कैसे उसके बाद नकली नौकर सोने के लिये तबेले की तरफ चला गया।

अगले दिन सुबह उस देश का राजा अपना राज्य दुश्मनों से आजाद देख कर बहुत खुश हुआ और उसने नकली राजकुमार को बहुत सारी बेशकीमती भेंटें दीं।

पर जब राजा ने अपनी बेटी की सगाई की घोषणा नकली राजकुमार से की तो उसकी बेटी असली राजकुमार का हाथ पकड़ कर अपने पिता के पास ले गयी।

असली राजकुमार उस समय खाने की मेज लगा रहा था। वह अपने पिता से बोली — "मेरे प्रिय पिता जी, राजा और जो भी सब यहॉ मौजूद हैं, आप सब सुनें।

यह आदमी मेरा पति है जिसे भगवान ने यहॉ भेजा है। इसी ने हमें दुश्मनों से बचाया है और यही असली राजकुमार है। और यह आदमी जो अपने आपको राजकुमार कहता है एक झूठा और बेईमान आदमी है।"

उसके बाद राजकुमारी ने वह सब कह सुनाया जो पिछली रात उसने देखा और सुना था। फिर बोली अगर यह असली राजकुमार है तो अपने असली राजकुमार होने का कोई सबूत पेश करे कि यह वाकई असली राजकुमार है।

नकली राजकुमार ने तुरन्त ही वह नोट राजा को पेश किया जो असली राजकुमार ने उसे कुँए में लिख कर दिया गया था।

राजा ने उसे खोला और सबके सामने ज़ोर से पढ़ा — "इस नोट को लाने वाला झूठा और राजकुमार दयालु का नौकर आपसे माफी चाहता है और उचित सजा की आशा करता है। यह नोट इसने राजकुमार दयालु से कुँए में लिखवाया था।"

यह सुन कर तो वह नीच नौकर भौंचक्का रह गया। उसके मुँह से निकला — "अरे इसमें यह लिखा है?"

राजा यह सुन कर बोला — "अगर तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा तो तुम खुद पढ़ कर देख लो।"

नौकर बोला — "राजा साहब, मुझे तो पढ़ना ही नहीं आता।"

वह राजकुमार दयालु के पैरों में पड़ गया और दया की भीख माँगने लगा लेकिन उसे वही सजा मिली जो उसको मिलनी चाहिये थी।

राजकुमारी की शादी राजकुमार दयालु से कर दी गयी और फिर वे लोग बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

7 एक चूहा[24]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पोलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह एक ऐसी छोटी सी लड़की की कहानी है जो किसी से नहीं डरती थी जब तक कि वह कुछ बड़ी नहीं हो गयी।

यह छोटी लड़की अपने माता पिता और एक बड़े भाई के साथ रहती थी। यह अपने बड़े भाई को बहुत प्यार करती थी। यह परिवार एक बहुत ही सुन्दर शहर में रहता था जो न बहुत बड़ा था और न बहुत छोटा न बहुत अमीर था और न बहुत गरीब। यह शहर उत्तर पश्चिमी पोलैंड की तरफ स्थित था।

वहॉ बहुत सारे शहर ऐसे थे जिनमें लोग रहना पसन्द करते थे। यह शहर भी कुछ ऐसा ही था। असल में उस शहर में जिधर भी जाओ तो अगर तुम बहुत शान्त हो और बहुत ध्यान से देखो तो

तुमको वहॉ बहुत सारे ऐसे प्राणी मिल जाते जो हमारे तुम्हारे शहरों में होते हैं।

तुम्हारे चारों तरफ लोमड़ियॉ गिलहरियॉ चूहे छोटी चिड़ियें कबूतर कभी कभी कछुए या तोते भी होते हैं जो अपने अपने घरों से सड़कों और छतों पर घूमने आ जाते हैं।

[24] The Mouse – a folktale from Poland, Europe.
Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/361/preview

छोटी लड़की और उसके भाई को ये सारे जानवर बहुत पसन्द थे – और वे जानवर भी जो उनके शहर में दिखायी देते थे और वे जानवर भी जो दूर जंगल में रहते थे और वे जानवर भी जो सारी दुनियॉ के रेगिस्तानों में रहते थे।

इन बच्चों को इन जानवरों के बारे में जानने में भी बहुत अच्छा लगता था। वे आपस में ऐसे खेल भी खेलते थे जिससे वे इन जानवरों के बारे में एक दूसरे की जानकारी का इम्तिहान लिया करते थे।

हालॉकि बड़ा भाई इन इम्तिहानों को जल्दी पास कर लिया करता था पर छोटी लड़की भी इस जानकारी में धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी।

भाई पूछता — "बड़ा खरगोश कितनी तेज़ भागता है?"

इस पर छोटी लड़की जवाब देती — "मैं तुम्हें बता दूँगी कि बड़ा खरगोश कितनी तेज़ भागता है अगर तुम मुझे यह बता दो कि दुनियॉ का सबसे ज़्यादा जहरीला सॉप कौन सा है।"

हालॉकि छोटी लड़की अपने बड़े भाई की तरफ इम्तिहान लेने की नजर से देखती पर यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं थी।

हालॉकि बड़ा भाई सब जानवरों को बहुत प्यार करता था पर वह चूहों से बहुत डरता था। और इसकी वजह से छोटी लड़की ने देखा कि वह भी चूहों से डरने लगी थी। हालॉकि उसको यह पता नहीं चला कि ऐसा क्यों था।

एक साल जब शहर में गर्मियॉ आयीं तो बड़ा भाई इतना बड़ा हो गया था कि उसको अपने दोस्तों के साथ कैम्प में रहने की इजाज़त मिल गयी थी। सो उसको तो कैम्प भेज दिया गया और छोटी लड़की को उसकी नाना नानी के घर भेज दिया गया जो पास के एक गॉव में रहते थे।

छोटी लड़की को अपनी नानी के साथ खेतों में इधर उधर घूमना और पौधों के नाम जानना बहुत अच्छा लगता था। उसको वहॉ की पास की झील में अपने नाना के साथ तैरना और अपने हाथों से छोटी छोटी मछलियॉ पकड़ना भी बहुत अच्छा लगता था।

पर सबसे अच्छा उसको उन दोनों के साथ जंगल में घूमने जाना लगता था। जब भी वे घूमने जाते तो सबसे पहले वे मुशरूम देखते जो बारिश के बाद जमीन में से निकल आते।

छोटी लड़की वहॉ से कुछ रसभरी भी चुनती कुछ रोज़बैरी चुनती जिनसे उसकी नानी जाड़ों के लिये जैम बना कर रखती।

जब वे लोग घर आ जाते तो छोटी लड़की मुशरूम के टुकड़ों में छेद कर के उनको एक धागे में पिरोती जिससे उनकी एक माला सी बन जाती। उस माला को वह अपने गले में पहन लेती।

उसके नाना शाम के खाने के लिये मछली तैयार करते और वह खुद अपनी नानी के साथ हॅसती और खेलती। कभी कभी वे सोचते

कि किसमस पेड़ को बहुत सारे मुशरूम की मालाओं से सजाने में कितना मजा रहता।

जब वे लोग जंगल में घूमते रहते तो कभी कभी नाना नानी और छोटी लड़की को कोई हिरन दिखायी दे जाता या फिर कोई सोया सोया सा उल्लू जो रात भर अपने खाना ढूँढने के लिये इधर उधर घूमने की वजह से उनींदा उनींदा रहता।

यह सब अक्सर नहीं होता क्योंकि ऐसी जगहों पर ऐसे जानवरों को देखने के लिये बहुत शान्त रहना पड़ता है और छोटी लड़की अपनी नानी के साथ हमेशा गाती ही रहती या फिर एक ऐसी भाषा में कहानियॉ सुनाती रहती जो उन्होंने बरसों में सीखी थी।

इसके अलावा शान्त रहना भी तो बहुत मुश्किल काम था जब नानी के साथ आनन्द करना हो तो।

अब तुम सोच सकते हो नानी के आश्चर्य का क्या ठिकाना रहा होगा जब एक दिन वह छोटी लड़की रसोईघर में डर के मारे चिल्लायी।

नानी यह सोच कर छोटी लड़की के पीछे भागी कि कहीं कोई ऐक्सीडैन्ट न हो गया हो पर जब वह रसोईघर में आयी तो उसने देखा कि छोटी लड़की को तो कोई चोट नहीं आयी बल्कि वह तो खाने की मेज के ऊपर बहुत डरी हुई खड़ी है और कोने में रखी एक झाड़ू की तरफ इशारा कर रही है।

नानी ने पूछा — "क्या बात है बेटी?"

छोटी लड़की चिल्लायी — "मैंने एक चूहा देखा नानी।"

नानी हॅसी और बोली — "अरे तो क्या तुम एक छोटे से चूहे से डर गयीं। क्या इस चूहे के बडे बड़े दॉत थे या लाल लाल अंगारे जैसी ऑखें थीं या बड़े तेज़ पंजे थे जिनसे उसने तुम्हारे ऊपर हमला किया?"

छोटी लड़की बोली — "नहीं नानी यह तो छोटा सा फूला हुआ चूहा था जैसा कि कोई साधारण चूहा होता है।"

नानी हॅसती रही तो जल्दी ही छोटी लड़की भी उसके साथ हॅसने लगी। नानी ने फिर छोटी लड़की को मेज पर से नीचे उतारा और पूछा — "मेरी उस निडर बेटी को क्या हुआ जो सारे जानवरों को प्यार करती है और हर चीज़ को जानने की इच्छा रखती है। वह लड़की तो कभी चूहे से नहीं डरेगी।"

छोटी लड़की ने इस सवाल पर कुछ सोचा और फिर जवाब दिया — "हर बार जब भी मेरा भाई कोई चूहा देखता है तो वह बहुत डर जाता है। मैंने सोचा अगर वह चूहों से डरता है तो जरूर ही वे भयानक होते होंगे क्योंकि वह तो बहुत बहादुर है। और क्योंकि वह डरता है तो मैं भी डरती हूॅ।"

नानी ने पूछा — "पर क्या तुम सचमुच डरती हो या फिर तुम जैसे ही कोई चूहा देखती हो तो तुम उससे डरने का नाटक करती हो। चूहा तुम्हारे हाथ से कोई बड़ा तो नहीं है।"

छोटी लड़की ने फिर इसके बारे में सोचा और बोली — "नहीं मैं सचमुच तो नहीं डरती पर पता नहीं।"

नानी वहीं मेज के पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गयी और छोटी लड़की वहीं उसकी गोद में बैठ गयी। नानी बोली — "बहुत सारे लोग बहुत सारी बेवकूफी वाली चीज़ों से डरते रहते हैं जिनकी कोई वजह नहीं होती। मैं नहीं चाहती कि तुम वैसे लोगों में से एक बनो।

ऐसी आदतें जब लोग बड़े हो जाते हैं तो वे उनको बहुत परेशान करने वाली हो जाती हैं। अब अगर तुम ऐसी बातों की ठीक से परवाह नहीं करोगी तो कल को तुम अपने तहखाने से शराब लाने में भी डर सकती हो क्योंकि वहाँ पर तो कोई चूहा हो सकता है। या फिर तुम अपने बागीचे से डर सकती हो जहाँ रात में कुछ चूहे चक्कर काट रहे हो सकते हों।

या फिर तुम किसी ऐसे आदमी से भी डर सकती हो जो तुमसे कुछ अलग सा दिखायी देता हो या फिर वह किसी और देश से आया हो।

इस तरह के डरने का कोई मतलब नहीं होता जब तक कि उसकी कोई ठीक वजह न हो।

इसके अलावा क्या तुमको यह कुछ अजीब सा नहीं लगता कि तुम जंगल या झील से तो डरती नहीं हो और एक छोटे से चूहे से डरती हो।"

छोटी लड़की कुछ हिचकिचाती हुई बोली — "मुझे मालूम है नानी पर मैं क्या करूँ मैं मजबूर हूँ। हर बार जब भी मैं कोई चूहा देखती हूँ तो मैं चिल्लाना चाहती हूँ। असल में मुझे वे अच्छे नहीं लगते जैसे कि वे दिखते हैं या फिर जिस तरीके से वे इधर उधर घूमते फिरते हैं।"

नानी मुस्कुरायी और बोली — "यह कोई अच्छी बात नहीं है। इसमें उनकी कोई गलती नहीं है कि वे कैसे दिखायी देते हैं या फिर कैसे घूमते हैं। वे इसी तरह से इस दुनियाँ में आये हैं। और फिर वे जैसे दिखते हैं उससे वे अपनी शक्ल बदल भी तो नहीं सकते। क्या वे बदल सकते हैं?

मुझे मालूम है कि अगर एक बार किसी के खिलाफ कोई विचार बना लिया जाये तो उसको बदलना बहुत मुश्किल है पर तुम उसकी उन बुरी बातों की बजाय उनकी अच्छी बातों पर अपना ध्यान दे सकती हो जिनसे तुम उनकी बड़ाई कर सको।

अगर तुम ऐसा करोगी तो उनकी डरावनी चीज़ें छोटी और बहुत छोटी होती जायेंगी और जल्दी ही फिर सब गायब भी हो जायेंगी।"

छोटी लड़की की अभी भी यह बात कोई खास समझ में नहीं आयी थी इसलिये उसने नानी से पूछा — "नानी आप मुझे यह बतायें कि चूहे आपको इतने अच्छे क्यों लगते हैं आप उनके अन्दर क्या देखती हैं?"

नानी ने मेज पर से अपनी चाय की केटली उठायी अपने प्याले में एक प्याला चाय पलटी और बोली — "लगता है कि अब मुझे तुम्हें एक कहानी सुनानी पड़ेगी।

तुम्हें याद होगा कि मैंने तुमसे कहा था कि जब मैं तुमसे जितनी बड़ी तुम अब हो उससे बस थोड़ी सी ही बड़ी थी तब हमारे देश में एक लड़ाई छिड़ी थी।"

छोटी लड़की ने हॉ में सिर हिलाया पर ध्यान से कहानी सुनती रही। नानी ने अपनी कहानी जारी रखी — "उन दिनों बच्चों के लिये सड़क पर खेलना बहुत ही खतरनाक था क्योंकि जिस राज्य की सेना ने हम पर हमला किया था उसके सिपाही बहुत ही गुस्से वाले थे अगर हमने ज़्यादा शोर मचाया या उनको परेशान किया तो वह हमको पीट भी सकते थे।

उन दिनों समय बड़ा खराब था। हमारे सबके पास कभी काफी खाना नहीं होता था। चूहों को देखना एक तमाशा रहता था क्योंकि उनको देख कर हम अपनी मुश्किलों को भूल जाते थे।

उन्होंने मुझे सिखाया कि बिना आवाज किये कैसे चलना चाहिये और इस तरह से दूसरे की निगाहों से कैसे बचना चाहिये। उस छोटी सी चालाकी सिखाने के लिये उनका बहुत बहुत धन्यवाद।

इस कला को सीखने से मैं अपनी दोस्तों से जो सड़क के उस पार रहती थीं दबे पॉव मिलने चली जाती थी और हम लड़कों के बारे में गपशप मारते थे।"

छोटी लड़की ने देखा कि यह कहते कहते नानी के चेहरे पर एक मुस्कान खेल गयी। जब नानी ने देखा कि छोटी लड़की उसकी तरफ देख रही है तो उसने अपने चाय के प्याले में से एक घूँट चाय का पिया और यह दिखाया कि वह बिल्कुल भी नहीं मुस्कुरा रही थी।

नानी आगे बोली — "उन्होंने मुझे एक चीज़ और सिखायी और वह था किसी भी बदलाव की स्थिति में तुरन्त ही यह सोचना कि क्या करना चाहिये और फिर उसको करना। तुमने देखा होगा कि जब उनके चारों ओर कुछ भी बदलाव होता है तो चूहा कितनी जल्दी अपने बिल में छिप जाता है या फिर लम्बी घास में छिप जाता है।

चूहों को इस तरह छिपते देख कर मैंने भी सिपाहियों से छिपना और मुश्किलों को दूर रखना सीख लिया था। उनसे मैंने यह भी सीखा कि किस तरीके से सिपाहियों को धोखा दे कर उनके सामने सामने से ज़्यादा खाना ले लेना चाहिये।

अगर हम चूहों का पीछा करते तो हमें अनाज के कुछ और दाने मिल जाते थे जिनसे हम ज़्यादा रोटी बना सकते थे। क्या पता हम लोग शायद इन चूहों की वजह से ही लड़ाई का वह समय ठीक से निकाल पाये हों।"

छोटी लड़की तो नानी की यह बातें सुन कर भौंचक्की रह गयी कि नानी जब छोटी थी तब वह कैसे लड़कों के बारे में बात किया

करती थी या सिपाहियों के पास से खाना ले आती थी। और यह सब उसने केवल चूहों से सीखा।

छोटी लड़की ने सोचा शायद चूहे इतने बुरे भी नहीं हैं।

उसी समय उस चूहे को जिसने उस लड़की को डरा दिया था लगा कि अब उसका मन उसकी तरफ से बदल गया है सो उसने अपने छिपने की जगह यानी झाड़ू के पीछे से अपना सिर बाहर निकाला।

छोटी लड़की ने उसको हवा में सूँघते हुए देखा। उसकी मूँछें चारों तरफ को हिल रही थीं। उसकी छोटी सी पूँछ भी मुड़ी जा रही थी।

यह देख कर छोटी लड़की ने सोचा शायद नानी का ऐसी डरावनी चीज़ों को देखने का अपना तरीका होगा तभी तो मेरी नानी किसी से डरती नहीं हैं।

अचानक चूहे ने भाग कर फर्श पार किया और रसोईघर के दरवाजे से हो कर बागीचे की तरफ भाग गया। जब उसने उस चूहे को बाहर भागते देखा तो उसने सोचा कि वह चूहे को और ज़्यादा दया से देखेगी अब वह उससे डरेगी नहीं।

और जब वह घर जायेगी तो वह यह कहानी अपने बड़े भाई को भी सुनायेगी ताकि उसके भाई का दिमाग भी इन चूहों की तरफ से बदल सके।

8 बेकर का आलसी बेटा[25]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल में एक स्त्री बेकर[26] थी। उसके एक बहुत ही आलसी बेटा था। जब सारे बच्चे आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करने के लिये जाते थे तो उसको भी लकड़ी लाने के लिये कहा तो जाता था पर वह वहॉ जाता कभी नहीं था।

अपने ऐसे आलसी बेटे को देख कर उस स्त्री को बहुत दुख होता था पर उसकी समझ में नहीं आता कि वह उसके बारे में करे तो करे क्या।

सो एक दिन उसने उस बेटे को जबरदस्ती उन बच्चों के साथ लकड़ियॉ लाने के लिये भेज दिया तो वह भी दूसरे बच्चों के साथ चला गया।

पर जैसे ही वह जंगल पहुॅचा तो दूसरे बच्चे तो लकड़ियॉ और पेड़ों की छोटी छोटी शाखें इकट्ठा करने में लग गये पर वह एक नदी

[25] Baker's Idle Son – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the book "Portugese Folk-Tales" This tale is available at : https://surlalunefairytales.com/a-g/fisherman-wife/stories/bakersidleson.html .

[26] Baker is the man or woman who bakes bread, biscuits, cookies cakes etc… Baking is a process of cooking food. See her picture above.

के किनारे अपना खाना खाने बैठ गया जो वह अपने घर से लाया था।

जब वह खाना खा रहा था तो एक मछली वहॉ आयी और उसका गिरा हुआ खाना खाने लगी। आखिर उसने उसको पकड़ लिया। मछली ने उससे प्रार्थना की कि अगर वह उसको मारे नहीं और छोड़ दे तो वह उसकी हर इच्छा पूरी करेगी।

पर उस आलसी लड़के को उस मछली पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर जो मेरे साथ वाले सब बच्चों के लकड़ी के ढेरों से भी बड़ा हो मेरे सामने आ जाये। और वह मेरे बिना छुए ही यहॉ से मेरे घर तक चलता जाये।"

तुरन्त ही लकड़ी का बॅधा हुआ एक बहुत बड़ा ढेर उसके सामने आ गया। जब उसने लकड़ी के उस ढेर को ठीक से देख लिया तभी उसने उस मछली को समुद्र में जाने दिया।

अब वह घर वापस चला। घर जाते समय वह बीच में महल के सामने से गुजर रहा था तो महल की खिड़की पर राजकुमारी बैठी हुई थी।

राजकुमारी के साथ साथ साथ राजा भी बैठा था। उसको उस लकड़ी के ढेर को अपने आप चलते देख कर बहुत आनन्द आया।

राजकुमारी को भी वह देखने में इतना अच्छा लगा कि वह हॅस पड़ी।

उसको हॅसते देख कर आलसी लड़का बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि राजकुमारी के एक बेटा हो और उसको यह पता न चले कि उसका पिता कौन है।"

राजकुमारी को उसी समय से लगने लगा कि उसको बच्चे की आशा हो आयी है। जब राजा को यह पता चला तो वह यह जान कर उससे बहुत नाराज हुआ। उसने उसको उसकी प्रिय दासियों के साथ एक महल में कैद कर दिया। समय आने पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया।

वह आलसी लड़का फिर जंगल लौटा तो वह मछली फिर आयी और उसने लड़के को बताया कि उस राजकुमारी के बेटा हुआ है।

मछली के कहे अनुसार उसने राजा के महल के सामने एक महल बनवाया जो राजा के महल से भी ज़्यादा शानदार था। इसके महल के बागीचे में हर रंग के फूल थे और उनमें एक फलों के पेड़ों का बागीचा भी था। इस फल के बागीचे में एक सन्तरे का पेड़ था जिस पर बारह सुनहरी सन्तरे लगे थे।

पर यह सब तो उसे उस मछली और परियों का दिया हुआ था। वह खुद तो बहुत आलसी था। महल बन जाने के बाद वह

आलसी लड़का उस महल में गया और एक राजकुमार बन कर रहने लगा। दूसरे लोग उसको केवल राजकुमार की तरह से ही जानते थे किसी और तरह जानते ही नहीं थे।

एक दिन राजा ने उस लड़के के पास यह सन्देश भेजा कि वह उसका महल देखना चाहता है। उस आलसी लड़के ने कहा कि वह खुशी से अपना महल उसको दिखायेगा। उसने राजा और उसके सारे दरबारियों को सुबह के नाश्ते के लिये बुला लिया।

राजा और उसके दरबारी उसका महल देख कर बहुत खुश हुए कि उसमें कितने आराम के साधन थे। महल देखने के बाद वे उसका बागीचा देखने गये।

बागीचे में इतने सारे फूल देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य तो उन सबको सन्तरे का पेड़ देख कर हुआ जो उसके फलों के बागीचे में लगा हुआ था और जिस पर सुनहरी सन्तरे लगे हुए थे।

उस आलसी लड़के ने राजा और उसके दरबारियों से कहा कि वे वहॉ से कुछ भी ले जा सकते था सिवाय सुनहरी सन्तरों के।

सब कुछ देख कर वे सब नाश्ते के लिये महल लौटे और नाश्ते के लिये बैठे। जब नाश्ता खत्म हो गया तो राजा और दरबारी लोग अपने महल जाने के लिये लौटे।

जाते समय उस लड़के ने राजा से कहा कि वह उन सबको अपने महल में बुला कर बहुत खुश था और उसने उनका बहुत

अच्छे से स्वागत किया पर वह इस बात से बहुत दुखी था कि इतने अच्छे स्वागत के बावजूद उसका एक सन्तरा गायब था।

दरबारियों ने तो साफ मना कर दिया कि उनमें से किसी ने उसका कोई सन्तरा नहीं लिया। उन्होंने उस लड़के को अपने कोट उतार कर भी दिखाये ताकि वह खुद अपनी ऑखों से यह देख सके कि उसका उनको अपराधी ठहराना ठीक नहीं था।

राजा को यह सुन कर बहुत शर्म आयी क्योंकि अब केवल वही एक देखने से रह गया था।

उसने अपना कोट उतारा पर जॉच करने पर उसकी जेबों से कुछ नहीं मिला। सो वह जब अपने कोट को दोबारा पहनने लगा तो उस लड़के ने उससे एक बार फिर से अपनी जेबें देखने के लिये कहा क्योंकि जब वह सन्तरा उसके दरबारियों ने नहीं लिया तो जरूर उसी ने लिया होगा।

सो राजा ने फिर से अपनी जेब में हाथ डाला तो उसको अबकी बार अपनी जेब में एक सन्तरा मिल गया। उसने वह सन्तरा अपनी जेब से निकाल लिया।

पर राजा यह देख कर बहुत परेशान हो गया कि यह सन्तरा उसकी जेब में आया कहॉ से? क्योंकि उसने तो सन्तरा छुआ भी नहीं था। उसको बहुत शर्म आयी।

आलसी लड़के ने कहा कि आप चिन्ता न करें क्योंकि यही राजकुमारी के साथ भी हुआ जिसने यह जाने बिना एक बेटे को जन्म दिया कि उसका पिता कौन था।

इस तरह मछली के ऊपर पड़ा हुआ जादू टूट गया। अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गयी और उसने राजकुमारी से शादी कर ली।

और वह आलसी लड़का एक बहुत ही अमीर आदमी बन कर अपने घर लौट गया।

9 प्यार के तीन सन्तरे[27]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल के एक राजा को शिकार का बहुत शौक था। एक दिन वह शिकार खेलने जंगल में गया। वहॉ उसको एक बहुत दुखी बुढ़िया मिली। वह भूख से मरी जा रही थी।

उस राजकुमार के पास उसको देने के लिये उस समय पैसे तो नहीं थे पर उसके पास काफी सारा खाना था जो वह अपने महल से रास्ते में खाने के लिये लाया था।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनको उस बुढ़िया को जो कुछ भी वह अपने साथ खाना ले कर आया था वह सब उसको देने के लिये कहा।

बुढ़िया ने खूब पेट भर कर खाया पिया और खाने पीने के बाद राजकुमार को बहुत धन्यवाद दिया। वह बोली कि वह उसको उसके बदले में कुछ और नहीं दे सकती थी क्योंकि उसके पास कुछ और था ही नहीं।

---

[27] The Three Citrons of Love – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/oldsite/books/portugual/pedroso/ralston.html This story is not only told in Portugal but such stories are also told in several countries. A collection of such stories told in the world is available from hindifolktales@gmail.com under the title “Teen Santare Jaisi Kahaniyan”.

पर फिर भी उसके पास तीन सन्तरे थे जो उसने राजकुमार को दिये और उससे कहा कि वह किसी भी हालत में उनको न खोले और जब खोले तो किसी पानी की जगह के पास ही खोले और लम्बा लम्बा खोले, न कि चौड़ाई में।

राजकुमार ने उससे वे सन्तरे ले लिये उसको धन्यवाद दिया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

कुछ दूर जाने पर राजकुमार को लगा कि उसको एक सन्तरा खोल कर देखना चाहिये कि उसमें क्या था। पर वह यह भूल गया कि उस बुढ़िया ने उसको वह सन्तरा पानी के पास खोलने के लिये कहा था।

जैसे ही उसने वह सन्तरा खोला उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। सन्तरे में से निकलते ही उसने पीने के लिये पानी माँगा। उसने कहा कि अगर उसको पीने के लिये पानी नहीं मिला तो वह मर जायेगी।

अब राजकुमार के पास पानी तो था नहीं सो वह उसको पानी नहीं दे सका सो वह बेचारी लड़की मर गयी। राजकुमार को उसके मरने का बहुत दुख हुआ। पर क्योंकि उसके पास अभी दो सन्तरे और बचे थे इसलिये वह इस लड़की की मौत को झेल गया।

वह अपनी यात्रा पर और आगे बढ़ा। आगे चल कर उसने एक सन्तरा और खोला पर इस बार भी वह यह भूल गया कि उसको उसे पानी के पास खोलना था।

उसने जैसे ही दूसरा सन्तरा खोला उसमें से भी एक पहले से भी सुन्दर लड़की निकली। बाहर निकलते ही उसने भी राजकुमार से पानी माँगा पर राजकुमार के पास पहले की तरह से पानी नहीं था और इस तरह बिना पानी के पहले की तरह से वह लड़की भी मर गयी। अबकी बार राजकुमार को बहुत दुख हुआ।

पर वह फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया। पर अबकी बार उसको तीसरा सन्तरा बिना पानी की जगह के खोलने की हिम्मत नहीं हुई कि कहीं ऐसा न हो कि इसमें से भी कोई लड़की निकले और वह भी बिना पानी के मर जाये।

पर उसको यह जानने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी कि इस तीसरे सन्तरे में क्या हो सकता था सो उसने पानी ढूँढना शुरू किया ताकि उसके पास वह यह तीसरा सन्तरा खोल कर यह देख सके कि उसमें क्या था।

पानी मिलने पर उसने वह तीसरा सन्तरा खोल दिया। उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहले वाली लड़कियों से कहीं ज्यादा सुन्दर थी। उसने भी निकलते ही पानी माँगा। इस बार राजकुमार के पास पानी था सो उसने तुरन्त ही उसको पानी पिला दिया।

पर क्योंकि वह लड़की बहुत ही पतली और नाजुक सी थी राजकुमार उसको अपने साथ अपनी यात्रा पर आगे नहीं ले जा सकता था सो उसने महल लौटने का विचार किया।

उसने उससे पास के एक पेड़ पर चढ़ जाने के लिये कहा और खुद उसके लिये एक गाड़ी लाने चला गया। सो वह लड़की तो पेड़ पर चढ़ गयी और राजकुमार वहॉ से अपने महल चला गया।

कुछ देर बाद एक नीग्रो[28] स्त्री जो बहुत ही बदसूरत थी अपने मालिक के लिये वहॉ पानी भरने आयी। उसने पानी में झॉका। पानी बहुत साफ और शान्त था। उस पानी में उसको उस सुन्दर लड़की की जो पेड़ पर बैठी थी परछाईं दिखायी दी।

उसको लगा कि वह उसका खुद का चेहरा था सो वह कह उठी — "अरे तुम तो इतनी सुन्दर हो फिर तुम किसी का पानी क्यों भरती हो? तोड़ दो इस घड़े को।" और यह कह कर उसने उस घड़े को जमीन पर मार मार कर तोड़ दिया।

उधर पेड़ पर बैठी लड़की यह सब देख कर मुस्कुरा रही थी। केवल मुस्कुराना ही नहीं बल्कि वह तो ज़ोर से हॅसना भी चाह रही थी पर कहीं वह नीग्रो स्त्री उसको सुन न ले और देख न ले इस वजह से डर रही थी। पर फिर उससे रहा नहीं गया और वह ज़ोर से हॅस पड़ी।

[28] Negro – African origin people are called Negro.Negro is a race. A Negro can be recognized easily by his curly hair.

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर उस नीग्रो स्त्री ने चारों तरफ देखा कि कौन हॅसा पर उसको कोई दिखायी नहीं दिया। काफी देर के बाद उसको पेड़ पर बैठी वह लड़की दिखायी दी।

उसको देख कर उसने कई तरह के इशारों से उसको पेड़ से नीचे आने के लिये कहा पर उस लड़की ने यह कहते हुए उसको नीचे आने से मना कर दिया कि वह वहॉ राजकुमार का इन्तजार कर रही थी और वह तब तक नीचे नहीं आ सकती थी जब तक राजकुमार न आ जाये।

पर उस नीग्रो स्त्री ने जो एक जादूगरनी भी थी उसको फिर से नीचे आने की जिद की — "आओ तुम नीचे आ जाओ ताकि मैं कम से कम तुम्हारा मुॅह तो साफ कर दूॅ।"

उसने इतनी जिद की कि उस लड़की को पेड़ से नीचे उतरना ही पड़ा। उसके नीचे उतरते ही उस स्त्री ने उसको पकड़ लिया और उसका मुॅह और सिर धोने का बहाना करने लगी।

उसने उससे बहुत सारे सवाल भी पूछे। उस लड़की ने उसके सब सवालों के सही सही जवाब दे दिये।

जब उस जादूगरनी को सब कुछ मालूम चल गया जो वह जानना चाहती थी तो उसने अपने पास से एक पिन निकाली और उस लड़की के सिर में घुसा दी। जैसे ही उसने वह पिन उसके सिर में घुसायी उसी समय वह लड़की एक फाख्ता बन गयी और उड़ गयी।

उसके बाद वह नीग्रो स्त्री उस लड़की की जगह उस पेड़ पर जा कर बैठ गयी और राजकुमार का इन्तजार करने लगी। इस सबके जल्दी ही बाद राजकुमार भी वापस आ गया।

उसने पेड़ के ऊपर देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो वहॉ एक बहुत सुन्दर लड़की छोड़ कर गया था और वहॉ तो यह नीग्रो स्त्री बैठी हुई है।

वह उस पर बहुत गुस्सा हुआ तो वह नीग्रो स्त्री रोने लगी और बोली कि किसी ने उसके ऊपर एक ऐसा जादू कर दिया है जिससे वह कभी तो सुन्दर हो जाती है और कभी ऐसी नीग्रो जैसी हो जाती है।

राजकुमार ने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको पेड़ से नीचे उतरने के लिये कहा। फिर उसके ऊपर दया कर के वह उसको घर ले आया।

अगले दिन वह सुबह सवेरे बहुत जल्दी उठा और अपने बागीचे में टहलने के लिये चला गया। कुछ देर बाद ही उसने एक सफेद फाख्ता देखी जो उसको बागीचे के माली से बात कर रही थी — "राजकुमार उस काली, बदसूरत और बुरी नीग्रो स्त्री के साथ कैसे अपने दिन गुजार रहे हैं?" और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली ने उसको तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह राजकुमार के पास पहुॅचा और उससे यह सब कह कर उसके हाल चाल पूछे — "आप मुझसे उसे क्या जवाब दिलवाना चाहते हैं?"

राजकुमार बोला — "उसको कहना कि मैं ठीक हूँ और खुशी खुशी रह रहा हूँ।"

अगले दिन वह फाख्ता फिर वापस आयी और माली से बोली — "ओ मेरे बागीचे के माली, राजकुमार उस काली बदसूरत नीग्रो के साथ कैसे रह रहे हैं?"

माली ने कहा कि वह खुशी से रह रहे हैं और अच्छी ज़िन्दगी बिता रहे हैं।

इस पर वह फाख्ता बोली — "और मैं बेचारी दुनियॉ में बिना किसी काम के इधर उधर उड़ती फिर रही हूँ।" इस पर माली फिर से राजकुमार के पास गया और राजकुमार से जा कर वह कहा जो उस फाख्ता ने उससे कहा था।

तब राजकुमार ने माली को एक रिबन का जाल बिछाने के लिये कहा ताकि वह उस फाख्ता को उस जाल में फॉस कर पकड़ सके। क्योंकि वह उसको बहुत अच्छी लग गयी थी। माली ने उसको पकड़ने के लिये रिबन का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर वहॉ आयी और उसने माली से फिर वही पूछा तो माली ने फिर वही जवाब दिया।

फिर उसने इधर उधर देखा तो खुद को फॉसने के लिये रिबन का जाल देख कर ज़ोर से हॅसी और बोली — "यह रिबन का जाल मेरी टॉगों को फॅसाने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और फाख्ता ने जो कहा था वह उससे जा कर कह दिया। अबकी बार राजकुमार ने उसको पकड़ने के लिये चॉदी के तारों का जाल बिछवाया। सो माली ने उसको पकड़ने के लिये इस बार चॉदी के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से फिर वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहलवाता चला आ रहा था।

फिर वह चॉदी के तारों का जाल देख कर बोली — "हा हा हा हा, यह चॉदी के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको सोने के तारों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार सोने के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से फिर वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहलवाता चला आ रहा था।

फिर वह सोने के तारों का जाल देख कर बोली — "हा हा हा हा, यह सोने के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको हीरों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार हीरों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी। पर अबकी बार उसने इधर उधर नहीं देखा और उस जाल में आ कर फॅस गयी और बोली — "हॉ, यह जाल मुझे पकड़ने के लिये ठीक है।" और इस तरह उस फाख्ता ने अपने आपको उस जाल में फॅस कर पकड़वा लिया।

माली उस फाख्ता को पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया। जैसे ही उस नीग्रो स्त्री ने देखा कि उसकी वह फाख्ता पकड़ी गयी वह राजकुमार से बोली कि वह अपने आपको बहुत बीमार महसूस कर रही थी और उस बीमारी को ठीक करने के लिये उसको उसी फाख्ता का सूप चाहिये जो उसने अभी पकड़ी है।

यह सुन कर राजकुमार ने कहा कि यह फाख्ता मारे जाने के लिये नहीं थी और वह उस फाख्ता को प्यार से सहलाने लगा। उसने उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसको लगा कि उसके सिर में तो एक पिन घुसी हुई थी। उसने उस पिन को तुरन्त ही खींच कर बाहर निकाल दिया।

पिन के बाहर निकलते ही वह फाख्ता फिर से एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और उसी शक्ल में आ गयी जिस शक्ल में राजकुमार उसको पेड़ पर चढ़ा कर गया था। उसको अचानक अपने सामने देख कर राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब उसने राजकुमार को वह सब बताया जो उस नीग्रो स्त्री ने उसके साथ किया था। यह सुनते ही राजकुमार ने उस नीग्रो स्त्री को मरवाने का हुकुम दे दिया।

मरने के बाद उस नीग्रो स्त्री की खाल का एक ढोल बनवा दिया गया और उसकी हड्डियों की सीढ़ियॉ बनवा दी गयीं जिनसे हो कर उसकी रानी अपने पलंग पर चढ़ती थी।

उसने उस लड़की से शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

10 घमंडी रानी[29]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही घमंडी रानी थी। एक दिन उसने अपनी दासियों से पूछा — "क्या मेरे चेहरे के अलावा और कोई ज़्यादा सुन्दर चेहरा है?"

उन्होंने कहा — "नहीं रानी जी नहीं।"

यही सवाल जब उसने अपने नौकरों से पूछा तो उन्होंने भी यही कहा — "नहीं रानी जी नहीं।"

एक बार उसने यही सवाल अपने महल के देखभाल करने वालों से पूछा तो चैम्बरलेन[30] ने कहा — "आप यह जान लें हर मैजेस्टी कि ऐसा एक चेहरा है।"

यह सुन कर रानी की इच्छा यह जानने की हुई कि वह चेहरा किसका है। चैम्बरलेन बोला — "महारानी जी आपकी बेटी का।"

रानी ने तुरन्त ही एक गाड़ी तैयार करवायी उसमें राजकुमारी को बिठाया और अपने एक नौकर से कहा कि वह उसे देश में कहीं दूर ले जाये और उसका गला काट दे और उसकी जबान काट कर ले आये।

---

[29] The Vain Queen – a folktale from Portugal, Europe. Taken from the Web Site: http://www.surlalunefairytales.com/oldsite/books/portugual/pedroso/vainqueen.html .

[30] Chamberlain is the person responsible to look after the affair of the palace.

रानी का हुक्म सुन कर उसके नौकर चल दिये पर जब वे उसको ले कर उस जगह आये जहॉ उनको उसे मारना था तो वहॉ उन्होंने कुछ और निश्चय किया।

उन्होंने राजकुमारी से कहा — "राजकुमारी जी आपको तो मालूम नहीं है कि आपको यहॉ किसलिये भेजा गया है। पर हम आपको कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।"

तभी उनको वहॉ एक कुतिया दिखायी दे गयी उन्होंने उसे मार दिया और उसकी जीभ काट ली। उन्होंने राजकुमारी से कहा "हमारा काम हो गया। हम इसे ले जा कर रानी जी को दे देंगे।" क्योंकि रानी ने उनसे कहा था कि वे उसे मार दें और उसकी जीभ काट कर उसके पास ले जायें।

फिर उन्होंने राजकुमारी से कहा कि वह अब कहीं किसी दूर जगह चली जाये और फिर इस शहर में कभी वापस न आये। वह उनको धोखा न दे।

लड़की बेचारी वहॉ से चली गयी। इधर उधर घूमते हुए काफी देर के बाद वह एक खेत में बने मकान में पहुॅच गयी। वह उसके अन्दर गयी तो उसको कुछ सूअरों के निशान के अलावा कुछ दिखायी नहीं दिया।

वह उसमें और आगे बढ़ी तो वह पहले कमरे में आयी वहॉ उसको पाइन की लकड़ी की एक आलमारी रखी दिखायी दे गयी। दूसरे कमरे में उसको एक पलंग दिखायी दिया जिस पर एक पुराना

गद्दा पड़ा हुआ था। तीसरे कमरे में गयी तो वहाँ एक अँगीठी थी और एक मेज पड़ी हुई थी।

वह मेज के पास गयी और उसकी एक ड्रौअर खोली तो उसमें उसे कुछ खाना मिल गया जिसको उसने आग पर पकने के लिये रख दिया। फिर उसने एक मेजपोश बिछाया और जैसे ही उसने खाना शुरू किया उसने किसी आदमी के अन्दर आने की आवाज सुनी।

लड़की यह देख कर बहुत डर गयी और मेज के नीचे छिप गयी। पर उस आदमी ने उसको छिपते हुए देख लिया था सो उसने उसे बाहर निकलने के लिये कहा। उसने कहा कि उसको शरमाने की जरूरत नहीं है।

दोनों ने मेज पर बैठ कर खाना खाया। रात को भी दोनों ने साथ साथ ही खाना खाया। फिर आदमी ने पूछा — "तुम मेरी बेटी बन कर रहना पसन्द करोगी या पत्नी बन कर?"

लड़की ने कहा — "बेटी बन कर।"

तब आदमी ने अपना पलंग अलग से लगाया और दोनों सोने चले गये। इस ढंग से वे कुछ दिन खुशी खुशी रहते रहे।

एक दिन आदमी ने लड़की से कहा कि वह थोड़ा बाहर जा कर घूम कर आये। लड़की बोली कि बाहर जाने के लिये उसकी पोशाक बहुत अच्छी नहीं है।

पर आदमी गया और एक आलमारी में रखे हुए देश में पहने जाने वाले बहुत सारे लड़कियों के पहनने वाले कपड़े दिखाये।

लड़की ने उनमें से कपड़े पहने और बाहर चली गयी। बाहर उसको एक भला आदमी मिला जो उसी की तरफ आ रहा था।

लड़की उसको देख कर डर गयी। उसकी तरफ से अपना मुँह फेर लिया और अपने घर में जा कर छिप गयी। रात को जब आदमी घर लौटा तो उसने लड़की से पूछा कि उसको बाहर जाने में अच्छा लगा या नहीं। लड़की ने बड़ी ढीलीढाली आवाज में जवाब दिया कि हॉ मुझे अच्छा लगा।

अगले दिन आदमी ने फिर उसको बाहर घूमने भेजा। उस दिन भी लड़की ने उसी आदमी को फिर से अपनी तरफ आते देखा। वह उसको देख कर फिर बहुत डर गयी और घर आ कर छिप गयी।

शाम को आदमी ने घर आ कर उससे फिर पूछा कि क्या उसे बाहर जा कर अच्छा लगा।

लड़की ने जवाब दिया — "नहीं।"

आदमी ने पूछा — "क्यों।"

लड़की बोली — "मुझे रोज़ एक आदमी मिलता है जो मेरी तरफ आता है। ऐसा लगता है कि वह मुझसे कुछ कहना चाहता है। इसलिये मैं अब दोबारा नहीं जाना चाहती।"

आदमी ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

अब यह भला आदमी एक राजकुमार था। वह इस लड़की से दो बार मिलने के बाद ही उससे प्यार करने लगा था। वह बाद में भी उससे मिलने आया पर वह उसको दिखायी नहीं दी तो वह उसके

प्यार में बीमार हो गया। बहुत सारे डाक्टर आये पर कोई उसको ठीक नहीं कर पाया। उन्होंने बताया कि राजकुमार को क्या बीमारी थी।

रानी ने तुरन्त ही राज्य में घोषणा करवा दी कि जिस लड़की ने भी राजकुमार को देखा हो वह तुरन्त राजमहल आये उसे भारी इनाम दिया जायेगा और उसकी शादी राजकुमार से कर दी जायेगी। पर क्योंकि लड़की कभी घर से बाहर गयी नहीं थी तो उसको किसी तरह की घोषणा का पता ही नहीं था।

रानी ने यह देखते हुए कि अभी तक कोई लड़की राजमहल नहीं आयी थी अपने एक आदमी को सारी जगह ढूँढने के लिये भेजा। आदमी गया और उसने दरवाजे पर ठक ठक की और उस लड़की से कहा कि राजा ने उसे तुरन्त ही महल बुलाया है। और अगर वह राजमहल में गयी तो उसे बहुत इनाम दिया जायेगा।

लड़की ने आदमी से कहा कि उसके जवाब के लिये वह कल आये। उस शाम जब वह उस आदमी से मिली तो उसे बताया जो कुछ भी उसके साथ हुआ था। आदमी ने कहा कि अगले दिन जब वह आदमी आये तो वह उससे कहे कि रानी खुद उसे लेने के लिये आये तभी वह राजमहल जायेगी। वह खुद राजमहल नहीं जायेगी।

अगले दिन जब राजमहल से आदमी आया तो लड़की ने कहा कि उसकी अपना फैसला बताने में डर लग रहा है। आदमी ने कहा कि वह आराम से अपना फैसला सुना सकती है जो भी वह उससे

कहेगी वह रानी जी को जा कर बता देगा। लड़की ने उससे वही कह दिया जो उस आदमी ने उससे कहने के लिये कहा था।

उस आदमी ने राजमहल जा कर रानी जी से वही कह दिया जो लड़की ने उससे कहा था तो रानी तो बहुत गुस्सा हो गयी। पर उसी समय राजकुमार को दौरा सा पड़ा तो उसे देख कर रानी को लगा कि कहीं राजकुमार अपनी इस बीमारी में मर न जाये सो उसने खुद ही जाने का फैसला किया।

उसने तुरन्त ही अपनी गाड़ी तैयार करने का हुक्म दिया और लड़की के पास गयी। जब वह उसके घर के पास पहुँच रही थी तो उसने देखा कि वह घर एक महल में बदल रहा था।

और वह आदमी जिसने उसको शरण दी थी वह एक ताकतवर सम्राट में बदल गया। उसके सूअर सब इयूक में बदल गये और लड़की एक सुन्दर राजकुमारी बन गयी। उस महल में बहुत सारा खजाना आ गया।

जब रानी ने यह देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गयी। उसने लड़की को महल में बुलाने के लिये बार बार माफी माँगी।

उसने लड़की से कहा कि उसका बेटा उसको देखते ही उसके लिये पागल सा हो उठा है और वह उससे शादी करना चाहता है वरना वह मर जायेगा। अगर उसकी खुशी हो तो वह उसकी शादी अपने बेटे से कर के बहुत खुश होगी।

लड़की राजी हो गयी उसने रानी की बात मान ली। उनकी शादी बहुत धूमधाम से हो गयी और फिर वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

11 सुनहरे सितारों वाले लड़के[31]

एक बार की बात है कि क्या हुआ, जो हुआ सो हुआ क्योंकि अगर वह न हुआ होता तो आज यह कहानी यहाँ नहीं होती। यह कहानी हमने तुम्हारे लिये रोमेनिया देश की कहानियों से ली है।

सो एक बार की बात है कि एक जगह एक बादशाह रहता था जो आधी दुनियाँ पर राज करता था। और उस आधी दुनियाँ में एक बूढ़ा गड़रिया अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके तीन बेटियाँ थीं – अन्ना, स्ताना और लैपटिट्ज़ा।[32]

इनमें अन्ना सबसे बड़ी थी और बहुत सुन्दर थी। वह इतनी सुन्दर थी कि जब भी वह भेड़ चराने के लिये ले जाती तो भेड़ें भी जब तक वह उनके साथ रहती खाना भूल जातीं। स्ताना इतनी सुन्दर थी कि भेड़िये जो भेड़ों को खा जाते वे भेड़ों की रक्षा करने लग जाते।

पर लैपटिट्ज़ा जो सबसे छोटी थी उसकी खाल ही इतनी सफेद थी जितने दूध के ऊपर के झाग। उसके बाल इतने मुलायम थे जितने किसी मेमने की सबसे अच्छी ऊन। कुल मिल कर वह अपनी

---

[31] Boys With the Golden Stars – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site: https://fairytalez.com/the-boys-with-the-golden-stars/
This Romanian tale has appeared in Andrew Lang's Fairy Books
Also at : https://fairytalez.com/twins-golden-star/ by the title "The Twins With the Golden Star"

[32] Anna, Stana and Laptitza – names of the three daughters of the herdman.

दोनों बहिनों की सुन्दरता को मिला कर उनसे भी सुन्दर थी। इतनी सुन्दर कि वह बस अकेली ही उतनी सुन्दर थी।

एक बार एक गर्मी के दिन जब धूप बहुत तेज़ थी तीनों बहिनें स्ट्रौबैरी तोड़ने जंगल गयीं जो पहाड़ों के पास ही था। वहॉ पहुँच कर वे यह देखने के लिये कि सबसे बड़ी बड़ी बैरीज़ कहॉ लगी हुई हैं इधर उधर देख ही रही थीं कि उनको घोड़ों की टापों की आवाज सुनायी पड़ी।

वह आवाज इतनी तेज़ थी कि लगता था जैसे कोई बहुत फौज वहॉ आ रही हो। पर वहॉ फौज वौज कोई नहीं थी केवल बादशाह अपने साथियों के साथ शिकार पर निकला हुआ था।

वे सभी सुन्दर नौजवान थे। वे अपने अपने घोड़ों पर ऐसे बैठे हुए थे जैसे वे उन्हीं का हिस्सा हों। पर इनमें सबमें सुन्दर और नौजवान था बादशाह खुद।

जैसे जैसे वे उन लड़कियों के पास आ पहुँचे उन्होंने उनकी सुन्दरता को देखा तो उन्होंने अपने घोड़ों की लगाम खींची और उनको धीरे कर लिया।

अन्ना बोली — "देखो बहिनों। अगर उनमें से किसी ने मुझे अपनी पत्नी बना लिया तो मैं उसके लिये ऐसी रोटी बनाऊँगी जिसको खा कर वह हमेशा जवान और बहादुर रहेगा।"

स्ताना बोली — "और अगर इनमें से कोई मुझसे शादी कर लेगा तो मैं अपने पति के लिये एक ऐसी कमीज बनाऊँगी कि उसे

पहन कर जब वह ड्रैगनों से लड़ने पानी में जायेगा तो वह भीगेगा नहीं। और अगर वह आग में जायेगा तो वह उसमें जलेगा नहीं।"

लैपटिट्ज़ा बोली — "और अगर कोई मुझसे शादी करेगा तो मैं उसको जुड़वॉ बेटे दूँगी जिन दोनों के माथे पर एक एक सुनहरा तारा लगा होगा और जो ऐसे चमकेगा जैसे आसमान में तारे चमकते हैं।"

हालॉकि उन्होंने यह सब नीची आवाज में कहा फिर भी बादशाह और उसके साथ जाते नौजवानों ने उसे सुन लिया। यह सुन कर उन्होंने अपने घोड़े पीछे की तरफ मोड़ लिये।

बादशाह बोला — " मैं तुम्हें तुम्हारे कहने पर स्वीकार करता हूँ। तुम मेरी सबसे सुन्दर रानी होगी।" कह कर उसने लैपटिट्ज़ा को उसकी स्ट्रौबैरीज़ के साथ अपने घोड़े पर बिठा लिया।

उसके दो दोस्तों ने लैपटिट्ज़ा की दोनों बड़ी बहिनों को ले लिया और वे सब अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर महल की तरफ चल दिये। अगली सुबह सबकी शादी हो गयी। अगले तीन दिन तक राज्य भर में दावतें और हॅसी खुशी मनायी जाती रही।

खुशियों का समय जब खत्म हो गया तो लोगों ने सुना कि अन्ना ने मक्का मॅगवायी है। और उस मक्का की उसने वह रोटी बनायी है जिसकी बात वह स्ट्रौबैरीज़ तोड़ते समय कर रही थी।

इसके बाद कुछ दिन रात और बीत गये कि लोगों ने दूसरी खबर सुनी कि स्ताना ने बहुत सारी रुई मॅगवायी है जिसको सुखा

और कात कर उसका कपड़ा बनाया है और फिर उसने उसकी अपने आप ही वह कमीज सिली है जिसके बारे में वह स्ट्रौबैरीज़ के खेत में बात कर रही थी।

बादशाह की मॉ सौतेली थी। उसकी अपने पहले पति से एक बेटी थी जो उसी के साथ महल में रहती थी। रानी हमेशा ही यह सोचती थी कि उसकी अपनी बेटी रानी बनेगी न कि वह दूध जैसी सफेद रंग की दूध वाले की बेटी। इसलिये वह उस लड़की से बहुत नफरत करती थी और हमेशा उसका कुछ न कुछ बुरा करने की सोचती रहती थी।

पर वह उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती थी क्योंकि बादशाह दिन रात उसके साथ रहता था। इसलिये वह यह भी सोचती रहती थी कि इस लड़की को बादशाह से अलग कैसे किया जाये।

आखिर जब उसकी सारी तरकीबें बेकार गयीं तो उसने अपने भाई से कहा कि वह बादशाह के ऊपर हमला कर दे और अपनी बड़ी सी फौज ला कर पास के कुछ शहरों पर कब्जा कर ले। उसके भाई का देश उनके बराबर में ही था।

इस बार उसकी यह तरकीब काम कर गयी। नौजवान बादशाह इस इरादे के साथ गुस्से में भर कर उठ खड़ा हुआ कि इस लड़ाई के लिये वह अपनी पत्नी की भी नहीं सुनेगा। जितने भी सिपाही उस समय उसके पास थे उसने उन सबको इकट्ठा किया और दुश्मन से लड़ने चल दिया।

रानी के भाई ने यह सोचा भी नहीं था कि बादशाह इतनी जल्दी तैयार हो जायेगा इसलिये वह उसका सामना करने के लिये भी तैयार नहीं था। बादशाह ने उस पर उसी समय हमला बोल दिया जब उसका ध्यान ही लड़ाई की तरफ नहीं था और उसकी फौज की दिशा ही बदल दी। उनको वापस भेज दिया।

बादशाह जीत गया। शान्ति की शर्तें तय हुईं और वह जल्दी से जल्दी घर लौटा। तीसरे दिन वह घर आ गया।

पर उसी दिन सुबह सुबह ही जब तारे धुँधले पड़ने लगे तो लैपटिट्ज़ा ने दो लड़कों को जन्म दिया। उनके बाल सुनहरी थे और उनके माथों पर सुनहरे सितारे थे।

बादशाह की सौतेली माँ जो यह सब देख रही थी उनको उठा कर ले गयी। उसने महल के एक कोने में बादशाह की खिड़की के नीचे एक गड्ढा खोदा और उन दोनों को उसमें दफ़ना दिया और उनकी जगह दो कुत्ते के बच्चे रख दिये।

जब बादशाह घर पहुँचा तो उसको खबर मिली तो वह तुरन्त ही लैपटिट्ज़ा के कमरे में गया। कुछ कहने सुनने की कोई जरूरत ही नहीं थी। उसने अपनी आखों से देखा कि उसने अपना वायदा नहीं निभाया था जो उसने स्ट्रौबैरीज़ के खेत में किया था। उसका तो दिल ही टूट गया पर फिर भी उसको उसे सजा तो देनी ही थी।

वह दुखी हो कर कमरे से बाहर चला गया और अपने नौकरों को यह हुक्म दिया कि रानी को गर्दन तक मिट्टी में दबा दो ताकि हर

एक को पता चल जाये कि बादशाह को धोखा देने का क्या नतीजा होता है।

जल्दी ही सौतेली माँ की इच्छा पूरी हुई। बादशाह ने उसकी बेटी को अपनी रानी बना लिया। इस बार भी खुशियाँ तीन दिन और तीन रात तक मनायी गयीं।

चलो अब देखते हैं कि उन दोनों बच्चों का क्या हुआ। इन दोनों बेचारे बच्चों को कब्र में भी आराम नहीं था। जहाँ इन बच्चों को दफ़नाया गया था वहाँ दो बहुत सुन्दर ऐस्पन के पेड़ उग आये।

सौतेली माँ ने जब उन पेड़ों को देखा तो वह उन दोनों पेड़ों से भी नफरत करने लगी क्योंकि वे उसको उसके जुर्म की याद दिलाते थे। उसने हुक्म दिया कि उन दोनों पेड़ों को उखाड़ फेंका जाये।

पर बादशाह ने यह सुन लिया तो उसने कहा कि उन पेड़ों को कोई छुएगा भी नहीं। उसने कहा — "उनको वहीं रहने दो। मुझे वे वहीं बहुत अच्छे लग रहे हैं। मैंने इतने सुन्दर ऐस्पन के पेड़ पहले कभी नहीं देखे।"

वे ऐस्पन के पेड़ ऐसे बढ़ते रहे जैसे पहले कोई ऐस्पन का पेड़ कभी बढ़ा ही नहीं। वे हर दिन में और हर रात में एक साल जितने बड़े हो जाते। और सुबह के समय जब तारे डूबने लगते तब तो वे पलक झपकते ही इतने बढ़ जाते जितना कि वे तीन साल में बढ़ते।

अब उनकी शाखें महल की खिड़कियों को भी ढकने लगी थीं। जब वे हवा से हिलते तो बादशाह कमरे में बैठा बैठा उनकी आवाज सुनता रहता।

सौतेली मॉ समझ गयी कि यह सब क्या है। उसका दिमाग किसी भी बुरी बात को सोचने के लिये रुकता ही नहीं था। अब वह उन पेड़ों को नष्ट करने के लिये बड़ी तेज़ी से घूम रहा था।

पर यह काम कोई आसान काम नहीं था। पर स्त्री की इच्छा शक्ति पत्थर में से भी तेल निकाल सकती है और उसकी चालाकियॉ अच्छे अच्छे वीरों को मात दे सकती है।

ऐसी कौन सी चीज़ है जो मीठे शब्दों से नहीं पायी जा सकती। और अगर इनसे कामयाबी न मिले तो ऑसुओं का इस्तेमाल करना चाहिये।

एक सुबह रानी अपने पति के बिस्तर के किनारे पर पर बैठी हुई थी और वह उससे बहुत देर तक मीठी मीठी बात करती रही। पर आखिर बादशाह भी तो इन्सान ही होते हैं वह उसकी बातों में आ गया।

खीझ कर उसने कहा — "ठीक है ठीक है तुम जैसा चाहो करो जब तुम चाहो इन पेड़ों को कटवा दो। परन्तु उनमें से एक पेड़ की लकड़ी का पलंग मेरे लिये बनवा दो और दूसरे पेड़ की लकड़ी का पलंग अपने लिये।"

रानी को इसी बात से सन्तुष्ट होना पड़ा। अगले दिन रानी ने ऐस्पन के दोनों पेड़ कटवा दिये गये। और शाम तक राजा और रानी के लिये उनके पलंग बना कर तैयार थे।

जब बादशाह अपने पलंग पर लेटा तो उसे लगा कि वह अपने बोझ से सौ गुना ज़्यादा भारी हो गया है फिर भी उसको उस पलंग पर लेट कर बहुत शान्ति मिल रही है। जबकि रानी को लगा जैसे वह कॉटों के बिस्तर पर लेटी हो। वह तो रात भर अपनी ऑखें ही बन्द नहीं कर पायी।

बादशाह जब गहरी नींद सो गया तो उसका पलंग बहुत ज़ोर से चर्राने लगा। हर चर्राने का रानी के लिये कोई मतलब था। उसको लग रहा था जैसे कोई उससे कुछ कह रहा है और जिसे वह केवल खुद ही समझ रही है।

एक पलंग ने दूसरे पलंग से पूछा — "छोटे भैया क्या तुम्हारे लिये यह बहुत भारी है?"

दूसरा पलंग जिस पर बादशाह लेटा हुआ था बोला — "नहीं बिल्कुल नहीं। मुझे तो बल्कि बहुत आनन्द मिल रहा है कि मेरे प्यारे पिता मुझ पर आराम कर रहे हैं।"

पहले पलंग ने कहा — "पर मुझे बहुत भारी लग रहा है क्योंकि मेरे ऊपर एक नीच आत्मा सोयी हुई है।"

इस तरह से दोनों पलंग सुबह होने तक आपस में बात करते रहे। रानी सारी रात उनकी बातें सुनती रही।

सुबह होते ही रानी ने उस पलंग से पीछा छुड़ाने की सोची। उसने दो दूसरे पलंग बनवाये जो बिल्कुल वैसे ही थे जिन पर वह पिछली रात सोये थे। और जब बादशाह शिकार पर चला गया तब रानी ने उनको बदलवा दिया।

यह कर के रानी ऐस्पन के पलंगों को आग में जब तक जलवाया जब तक उसकी राख नहीं रह गयी। फिर भी जब वे जल रहे थे तो रानी ने उनकी वही बातें सुनी जिन्हें केवल वही समझ सकी।

उसने फिर वह राख बटोरी और चारों तरफ फैला दी ताकि वह नयी जगहें चली जायें और उनका यहॉ कुछ न रह जाये।

पर उसने तो देखा नहीं कि उन पेड़ों को जलाते समय दो चिनगारियॉ उसमें से छिटकीं और हवा में उड़ कर पास वाली नदी में जा पड़ीं। नदी में गिर कर वे दो छोटी मछलियॉ बन गयीं जिनकी सुनहरी खाल थी। दोनों मछलियॉ इतनी एक सी थीं कि उन दोनों को अलग करना मुश्किल था।

एक दिन राजा के मछियारे राजा के नाश्ते लिये नदी पर मछली पकड़ने गये। वहॉ जा कर उन्होंने जाल डाला। जैसे ही आखिरी तारा डूबा उन्होंने अपना जाल खींच लिया। उनके जाल में बहुत मछलियॉ फॅस गयी थीं पर उनमें दो सुनहरी मछलियॉ भी थीं।

ऐसी मछलियॉ तो कभी किसी ने देखी नहीं थीं। सो जब मछियारों ने उन्हें देखा तो वे तो उनको देख कर ही आश्चर्यचकित

हो गये। आपस में बात कर के उन्होंने निश्चय किया कि वे इन मछलियों को बादशाह को भेंट में दे देंगे।

तभी एक मछली बोली — "नहीं नहीं हमें वहॉ मत ले जाइये क्योंकि हम उसी जगह से आये हैं जहॉ आप हमें ले जायेंगे। वहॉ तो हमें मार दिया जायेगा।"

"पर फिर हम तुम्हारा क्या करें?"

दूसरी मछली बोली — "आप जायें और इन पेड़ों पर जो ओस पड़ी है वह सब इकट्ठी कर लायें और हमें उसमें तैरने दें। उसको बाद हमें फिर धूप में लिटा दें। उसके बाद हमारे पास तब तक नहीं आयें जब तक धूप से हमारे ऊपर की ओस की बूँदें न सूख जायें।"

मछियारों ने वही किया जो उन्होंने उनसे करने के लिये कहा। वे गये और ओस इकट्ठा कर लाये और उसमें इनको तैरा दिया। उसके बाद उन्होंने उनको धूप में लिटा दिया जब तक उनके शरीर पर से ओस की बूँदें न सूखें।

जब मछियारा लौट कर आया तो तुम क्या सोचते हो कि उसने क्या देखा? उसने दो लड़के देखे। दो राजकुमार देखे जिनके बाल सुनहरी थे और उन दोनों के माथे पर सुनहरे सितारे थे। दोनो देखने में इतने एक से लग रहे थे कि कोई भी उनको पहली नजर में देख कर जुड़वॉ कह सकता था।

दोनों बच्चे बहुत तेज़ी से बढ़ रहे थे। एक दिन में एक साल जितना बढ़ जाते थे और एक रात में एक साल और। पर सुबह में

जब सितारे डूबने लगते तब वे तीन साल जितने बड़े हो जाते। वे अपनी लम्बाई के अलावा और चीज़ों में भी बढ़ रहे थे – तीन गुना उम्र में और तीन गुना अक्लमन्दी में।

जब तीन दिन और तीन रात गुजर गये तो वे बारह साल की उम्र के हो गये और उनमें चौबीस साल जैसे नौजवानों की ताकत आ गयी और छत्तीस साल की उम्र वालों जैसी अक्लमन्दी।

उसके बाद वे बोले "अब हमें हमारे पिता के पास ले चलिये।"

मछियारों ने उन दोनों को एक एक भेड़ की खाल की टोपी दी जिसने उनके आधे आधे चेहरे को ढक लिया था। उनके सुनहरे बालों और सुनहरे तारे को पूरी तरह से ढक लिया था। इस तरह से वह उनको दरबार में ले चला।

जब वे बादशाह के पास पहुँचे उस समय दोपहर हो रही थी। मछियारा पास में खड़े हुए एक औफीसर के पास पहुँचा तो एक लड़के ने उससे कहा "हम बादशाह से मिलना चाहते हैं।"

औफीसर ने कहा — "बादशाह इस समय खाना खा रहे हैं। पहले उनको खाना खा लेने दो।"

दूसरे लड़के ने अपना पैर पटकते हुए कहा — "नहीं। अभी अभी जब वह खाना खा रहे हैं हम उनसे तभी मिलना चाहते हैं।"

और जो कुछ नौकर वहाँ खड़े हुए थे वे ऐसे शैतान बच्चों को महल से बाहर निकालने के लिये आगे बढ़े पर वे बच्चे उनके हाथों

से से पारे[33] की तरह से फिसल कर एक बड़े कमरे में घुस गये। उस कमरे के दरवाजे के पास एक नौकर खड़ा था उन्होंने उससे कहा "हमें अन्दर आना है।"

नौकर बोला "यह तो नामुमकिन है।"

दूसरे लड़के ने नौकरों को इधर उधर धक्का देते हुए कहा — "ऐसा क्या। अच्छा देखते हैं।"

पर नौकर तो कई थे और लड़के केवल दो। सो कुछ लड़ाई का सा शोर हो गया जो बादशाह के कानों तक पहुँचा।

बादशाह ने गुस्से से पूछा — "यह क्या हो रहा है।"

राजकुमार अपने पिता की आवाज सुन कर रुक गये। एक नौकर ने बादशाह के पास जा कर कहा — "दो लड़के हैं जो जबरदस्ती महल में अन्दर आना चाहते हैं।"

बादशाह बोला — "ऐसे कौन हैं जो जबरदस्ती महल के अन्दर आना चाहते हैं। किसकी इतनी हिम्मत है। ये कौन से लड़के हैं।"

नौकर बोले — "यह तो हम नहीं जानते बादशाह जी। पर वे आप जैसे लगते हैं क्योंकि उनके अन्दर तो शेरों की सी ताकत है। उन्होंने तो दरवाजे पर खड़े पहरेदारों को भी इधर उधर कर दिया है। जितने वे ताकतवर हैं उतने ही वे घमंडी भी हैं क्योंकि वे अपने सिर से अपनी टोपी भी नहीं हटा रहे।"

[33] Translated for the word "Quicksilver"

बादशाह ने यह सुना तो वह गुस्से से लाल हो गया। वह चिल्लाया — "उनको बाहर निकाल दो। उनके पीछे कुत्ते छोड़ दो।"

राजकुमारों ने कहा — "तुम लोग हमें छोड़ दो हम अपने आप ही चले जायेंगे।"

इतने कठोर शब्दों को सुन कर मन में दुखी हो कर कह कर वे पीछे हट गये। वे दरवाजे तक ही पहुँचे होंगे कि एक नौकर उनके पीछे पीछे भागा भागा आया।

"बादशाह का हुक्म है कि आपको अन्दर ले आया जाये। रानी साहिबा आपको देखना चाहती हैं।"

राजकुमारों ने एक पल सोचा और फिर जिस रास्ते से वे आये थे उसी से वापस चले गये। वे सीधे बादशाह के पास पहुँचे। उनकी टोपी अभी भी उनके सिरों पर ही थी।

बादशाह एक लम्बी सी मेज के एक तरफ बैठे हुए थे। मेज फूलों से सजी हुई थी और वहाँ बहुत सारे मेहमान भी बैठे हुए थे। बादशाह के बराबर में बारह गद्दियों के बीच में रानी साहिबा बैठी हुई थीं।

जब राजकुमार अन्दर घुसे तो एक गद्दी नीचे गिर पड़ी। अब वहाँ केवल ग्यारह गद्दियाँ ही रह गयीं।

एक दरबारी ने कहा — "अपनी अपनी टोपियाँ उतारो।"

बच्चों ने कहा — "ढका सिर दूसरे के लिये इज़्ज़त की निशानी है इसलिये हम जैसे हैं हमें वैसे ही रहने दो।"

बादशाह बोला — "कोई बात नहीं।" उसका गुस्सा बच्चों की ठंडी मीठी आवाज सुन कर कुछ ठंडा पड़ गया था। "जैसे तुम चाहो खड़े रहो पर मुझे तुम लोग यह तो बताओ कि तुम लोग हो कौन। कहॉ से आये हो और तुम्हें क्या चाहिये।"

बच्चे बोले — "हम दोनों जुड़वॉ हैं एक ही डंडी से दो कल्ले फूटे हैं। वह डंडी अब टूट चुकी है। उसका आधा हिस्सा जमीन के नीचे है और दूसरा आधा इस मेज पर है। हम बहुत दूर की यात्रा कर के आये हैं।

हम हवा के बहने में बोले थे। हम लकड़ी में फुसफुसाये थे। हमने पानी में गाया पर अब हम आपको आदमियों की भाषा में एक कहानी सुनाना चाहते हैं जो आपको बिना जाने ही पता है।"

इसके बाद रानी की दूसरी गद्दी नीचे गिर पड़ी।

रानी यह सुन कर चिल्लायी "इनको इनकी बेवकूफियों के साथ इनके घर भेज दो।"

पर बादशाह को कुछ रुचि हो आयी सो वह बोला — "नहीं नहीं। बोलने दो इन्हें। तुम तो इनको देखना चाहती थीं पर मैं इनको सुनना चाहता हूॅ। जारी रखो बच्चों अपनी कहानी जारी रखो।"

रानी चुप हो गयी पर राजकुमारों ने अपनी कहानी गानी शुरू कर दी — "एक बार की बात है कि एक बादशाह था।" और तीसरी गद्दी नीचे गिर पड़ी।

जब तक राजकुमारों की कहानी खत्म हुई रानी के पास अब कोई गद्दी नहीं थी। उसकी एक एक कर के सब गद्दियॉ नीचे गिर पड़ी थीं। उसी समय उन्होंने अपने सिर से टोपी हटायी तो टोपी के नीचे से उनके सुनहरे बाल और माथे का सुनहरा तारा चमक उठा।

बादशाह और वहॉ बैठे सभी की ऑखें जा कर उन पर ठहर गयीं। बच्चे बेचारे इतनी सारी निगाहों की ताकत नहीं सह सके।

और फिर आखीर में वही हुआ जो शुरू में होना था। लैपटिट्ज़ा बादशाह के पास बैठी। सौतेली की मॉ की बेटी को महल में सबसे नीचा सिलाई करने वाला नौकर बना दिया गया। सौतेली मॉ को एक घोड़े से बॉध दिया गया और उसे दौड़ा दिया गया।

तबसे कोई भी नहीं भूला कि किसी का बुरा चाहने और करने वाले का नतीजा खराब होता है।

12 मॉ का लाड़ला जैक[34]

एक बार की बात है कि कुछ हुआ, क्योंकि अगर वह न हुआ होता तो आज यह कहानी यहॉ नहीं होती। यह कहानी भी हमने तुम्हारे लिये रोमेनिया देश की कहानियों से ली है।

तो एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके एक बच्चा था। यह बच्चा उसके सात बच्चों में सबसे छोटा था जो लौर्ड[35] ने उसको दिये थे। इसलिये यह बच्चा जन्म से ही उसके लिये अच्छी किस्मत लाने वाला था। उसका नाम रखा गया जैक।[36] क्योंकि हर नये नये अमीर बनने वाले का और बेवकूफों का नाम जैक ही रखा जाता है।

पिता अपने इस छोटे से जैक को बहुत प्यार करता था। वह तो बस उसकी ऑखों का तारा था। यह इसलिये भी था कि वह उसके सातों बच्चों में उम्र में सबसे छोटा, साइज़ में भी सबसे छोटा और गोल मटोल था।

पर उसके पिता को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं था। वह तो बस घर में आता था जाता था। प्रगट हो जाता था गायब हो

[34] Mother's Darling Jack – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site: https://fairytalez.com/mothers-darling-jack/ By Mite Kremnitz

[35] Lord here means Jesus Christ

[36] Jack – name of the seventh child of the man.

जाता था। घर तो उसके लिये केवल सोने की जगह थी। घर में मॉ ही केवल घर की मालकिन थी।

वह एक को नहलाती तो दूसरे को खाना खिलाती तीसरे को मल मल कर नहलाती पर जैक अपनी मॉ का बेटा था। मॉ का प्यारा था अपनी मॉ का सबसे सुन्दर और होशियार बच्चा था।

कहावत है कि किसी को किसी का सब कुछ बन जाना भी ठीक नहीं है जैसे सबसे नीचे से सबसे ऊॅचा बनना या किसी बच्चे का घर के ऊपर राज करना। जैक रोज रोज बड़ा हो रहा था। और जितना वह बड़ा होता जा रहा था उतना ही वह झगड़ालू जिद्दी और अपनी इच्छाऐं मनवाने वाला होता जा रहा था।

सो घर में अक्सर, और अक्सर ही नहीं बल्कि हमेशा ही उस लड़के को ले कर कुछ न कुछ गुस्से की बातें होती रहतीं। जैक को हमेशा ही कुछ कठोर शब्द सुनने पड़ते पर उनका उसके ऊपर कोई असर नहीं पड़ता। उसको अक्सर ही सजायें मिलती रहतीं।

पर जैक तो सातों में सबसे छोटा था सो जो भी उसको कोई सजा देता उसी को सहना पड़ता न कि उसे जो गलती करता। अगर पिता उसको मारता तो मॉ उसके ऑसू पोंछती। अगर मॉ उसको मारती तो वह यह ध्यान रखती कि उसके पिता को यह पता न चल जाये।

यह एक बुरा उदाहरण है कि अगर कोई बच्चा कोई बर्तन तोड़ दे तो मॉ को उसके टूटे हुए टुकड़े मॉ को उठाने पड़ें। इसका

मतलब कि घर में कुछ भी ठीक नहीं है। अब इसके बारे में और क्या कहना।

अब उसके बारे में बातें भी बन्द हो गयी थीं। जैक जितना बड़ा होता गया उतना ही वह घर में किसी की न सुनने वाला भी होता गया। और कहना न मानने की आदत कहना न मानने वाले के ऊपर बहुत भारी होती है।

अगर उसका पिता उसको कुछ सिखाना चाहता और कहता — "मेरे प्यारे जैक। देखो ऐसा कर लो यह ठीक है। बैलों को गाड़ी के आगे इस तरीके से लगाया जाता है। या कील को पहिये में इस तरह से ठोका जाता है या थैले इस तरह से उठा कर ले जाये जाते हैं।"

या वह उसको कुछ और सिखाने की कोशिश करता तो जैक का दिमाग कहीं और लगा होता और वह जवाब देता — "उॅह। मुझे अपने आप करने दो न।" और फिर एक के बाद एक कई "मुझे अपने आप करने दो न।" पीछे लग जाते।

जैक अब बहुत बड़ा हो गया था पर उसको यह नहीं मालूम था कि हल में हैन्डिल होते हैं। मिल ओखली मूसल से अलग है। गाय और बैल में क्या फर्क है। तो वह कोई भी काम ठीक से नहीं कर पाता था।

एक दिन पिता एक मेले में जाने के लिये तैयार हो रहा था। सब कुछ तैयार था सिवाय एक पिन के जिसे जूए[37] में लगना था।

जैक चिल्लाया — "पिता जी मैं भी आपके साथ आ रहा हूँ।"

पिता बोला — "अच्छा हो अगर तुम घर पर ही रहो। तुम कहीं बाजार में खो न जाओ।"

जैक फिर बोला — "नहीं पिता जी मैं भी आपके साथ जाना चाहता हूँ।"

"नहीं मैं तुम्हें नहीं ले जाऊँगा।"

"मैं जाऊँगा।"

"मैं तुम्हें नहीं ले जाऊँगा मैंने कहा न।"

हर आदमी जानता है कि जिद्दी बच्चे कैसे होते हैं अगर उनको किसी काम के लिये मना करो तो वे उसी काम को करते हैं। सो इस मामले में भी उसका पिता कुछ नहीं कर सका। उसने जैक को गाड़ी में बिठाया और मेले की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसने जैक से कहा — "ध्यान रखना तुम मेरे साथ साथ ही रहना।"

"जी पिता जी।"

[37] Translated for the word "Yoke" – it is kept on the necks of the bullock while they are harnessed to the cart. See its picture above.

परिवार की याद में यह शायद पहली बार था जब उसने "जी हॉ" बोला था।

जब तक वे गॉव की सीमा तक पहुँचे तब तक जैक उस गाड़ी में ऐसे बैठा रहा जैसे उसे किसी ने गाड़ी में कीलों से जड़ दिया हो। जब गॉव की सीमा आ गयी तो उसने अपना एक पैर बाहर निकाला और चारों तरफ देखा।

फिर वह गाड़ी से बाहर निकल आया और गाड़ी के सहारे खड़ा हो गया। फिर वह गाड़ी के पहिये देखने लगा। उसकी समझ में यह नहीं आया कि कोई पहिया अपने आप ही कैसे घूम सकता है और कैसे पहिये के अन्दर की डंडियॉ एक दूसरी के पीछे भागती हैं जो उसको अपनी जगह पर लगे लगे पहिये को आगे बढ़ने में सहायता करती हैं।

वे जंगल पहुँच गये। जैक ने अपना सिर ऊपर उठाया और उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया। उसके दॉये बॉये जो पेड़ थे वे अपनी पूरी ताकत के साथ पीछे भागे जा रहे थे। उसने सोचा जरूर इनमें कोई जादू है।

जैक गाड़ी से नीचे कूद पड़ा तो फिर उसने अपने पैरों के नीचे जमीन महसूस की। लेकिन वह फिर मुँह खोले खड़ा रह गया। अब पेड़ तो खड़े हुए थे पर गाड़ी आगे और आगे बढ़ती जा रही थी। कुछ देर बाद वह चिल्लाया "पिता जी रुक जाइये रुक जाइये। ताकि मैं देख सकूँ कि पहिये कैसे घूमते हैं।"

पर अब तो डर के मारे उसके बाल ही खड़े हो गये क्योंकि अब उसको अपने चिल्लाने की आवाज चारों तरफ से गूँज गूँज कर आने लगी। यह सुन कर वह बहुत डर गया। उसका पिता बिना उसकी चीखों की तरफ ध्यान दिये हुए ही गाड़ी हॉके जा रहा था।

वह फिर चिल्लाया "पिता जी पिता जी।" उसने यह दस बार सुना। अब तो वह बहुत ज़्यादा डर गया। उसको लगा घर से ज़्यादा अच्छी जगह और कोई नहीं है सो वह पीछे की तरफ भागने लगा। उसके पीछे केवल धूल का बादल ही बादल था और कुछ भी नहीं। वह भागता गया भागता गया और फिर एक गलत मोड़।

अब तुम सोच सकते हो कि वे लोग कितने बदकिस्मत होते हैं जिनको अनुभव तो होता नहीं और वे अक्लमन्दों की सलाह मानते नहीं। जैक ने घर भागने की गलती की जबकि उसको जंगल में रास्ता नहीं मालूम था।

वह बहुत देर तक भागता रहा। फिर उसका भागना थोड़ा धीमा हो गया और आखीर में तो बिल्कुल बन्द हो गया। अब तो वह केवल चल ही रहा था एक जंगल के बाद दूसरा दूसरे जंगल के बाद तीसरा उसके बाद घास का मैदान। वह चलता रहा जब तक कि वह थक कर बिल्कुल चूर नहीं हो गया।

उसके मुँह से निकला "हे भगवान। मेरे ऊपर दया करो। मैं आगे से बड़ों का कहा मानूँगा।" जब उसके मुँह से ये शब्द निकले तो जरूर ही उसका दिल बहुत भारी रहा होगा।

उसके बाद वह आगे नहीं चल सका। कुछ दूर जा कर जंगल की सीमा पर एक गॉव था। जैक उसको देख कर खुश हो गया सो वह फिर आगे चल दिया और फिर तो वह गॉव के बीच में ही जा कर रुका।

वहॉ पहुँच कर वह घर घर गया और जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया उसने देखा कि वहॉ बहुत तरह के घर थे सिवाय उसके अपने जैसे घर के। अब तो वह खो गया था उसको नहीं पता था कि वह क्या करे। वह रोने लगा।

तभी एक आदमी अपने खेतों से एक चार बैल लगी गाड़ी ले कर घर वापस आ रहा था तो उसने उससे पूछा — "क्या बात है बेटे क्यों रो रहे हो।"

जैक ने उसको अपनी कहानी सुना दी। आदमी को उस पर दया आ गयी। उस दयालु किसान ने उससे उसका नाम पूछा तो लड़के न कहा "जैक।"

"पर तुम्हारे पिता का नाम क्या है।"

"पिता जी।"

"तुम किस गॉव में रहते हो।"

"गॉव में।"

इस तरह से जैक उसके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका सो वह आदमी भी उसकी कोई सहायता नहीं कर सका। सो वह उसको अपने घर ले गया और उसको अपने यहॉ बैलों को

रास्ता दिखाने वाले की तरह से काम पर रख लिया क्योंकि उसको एक ऐसा ही लड़का चाहिये थे कि जब वह हल के हैन्डिल पकड़ कर हल चला रहा हो तो वह बैलों को रास्ता दिखाता चले।

इस तरह से जैक गॉव के इस लायक आदमी के घर में काम करने लगा जो जंगल के किनारे ही था।

पर जैक तो किसी काम का नहीं था क्योंकि जब भी उसको कुछ करने के लिये कहा जाता तो वह उस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता था। और जो आदमी कोई भी काम ठीक से करना नहीं जानता तो उसको डॉट तो पड़ती ही है।

एक दिन जैक का मालिक बाजार जाने की तैयारी में था। उसने जैक से कहा — "जैक ज़रा गाड़ी में तेल[38] ठीक से लगा देना। कल हम लोग बाजार जायेंगे।"

"ठीक है।" उसने तेल लिया और अपना सिर खुजाना शुरू कर दिया क्योंकि उसको तो मालूम नहीं था कि गाड़ी में तेल कैसे लगाया जाता है।

उसके पिता ने जब उसे यह बात बतायी थी तब उसने कभी भी यह ठीक से सुना ही नहीं। और ना ही कभी अपने पिता को तेल लगाते देखा जो वह देख कर समझ जाता। सो अब उसे पता ही नहीं था कि वह क्या करे।

[38] Translated for the word "Grease" – grease is a kind semisolid ointment type thing which helps a cart's wheels rotating easily.

आखिर जो कुछ भी उसकी अक्ल में आया जो कुछ उसे याद आया उसी के अनुसार उसने सोचा कि गाड़ी के शुरू का हिस्सा तो जूआ होता है तो वह लट्ठा है। तो उसने सोचा कि अगर उसे यह काम ठीक से करना है तो इसे गाड़ी के शुरू से ही शुरू किया जाना चाहिये।

सो सबसे पहले उसने जूए के हिस्सों में तेल लगाना शुरू किया। फिर कुछ और जगह तेल लगाने के बाद उसने देखा कि उसका तेल तो खत्म हो गया सो वह और तेल मॉगने के लिये गया।

कमरे में घुसने के बाद वह बोला — "मालिक मुझे थोड़ा सा और तेल चाहिये।"

"मगर तुम्हें और तेल क्यों चाहिये। वह तो इतना सारा तेल था कि उसमें तो तीन गाड़ियों में तेल लगाया जा सकता था।"

तब जैक ने कहा कि वह तेल तो केवल जूए और डंडे आदि में लगाने में ही खत्म हो गया।

जब मालिक ने जैक के ये शब्द सुने तो उसने अपने सिर पर हाथ मारा जैक को कान से पकड़ा उसे बाहर ले गया और उसे इतना मारा कि वह ज़िन्दगी भर नहीं भूला कि उसको तो तेल गाड़ी के केवल ऐक्सिल में लगाना था।

खैर मॉ का लाड़ला बेचारा क्या करता। उसको तो मार खानी ही पड़ी उसको तो फिर ध्यान देना ही पड़ा नहीं तो वह गाड़ी मे तेल लगाना कैसे सीखता।

जब गाड़ी तैयार हो गयी तो उसमें बैल जोते गये। मालिक गाड़ी में बैठा पर जैक गाड़ी में पीछे की तरफ गुड़मुड़ी बन कर सिकुड़ा सा बैठा। मालिक की मार से वह इतना रोया था कि वह अभी तक सिसकियॉ भर रहा था।

उसके मालिक ने उसे डॉटते हुए कहा — "चुप रहो। मैं तुम्हारे मुॅह से एक और शब्द न सुनूॅ।"

जाने से पहले बस उनके ये ही आखिरी शब्द थे।

जैक गाड़ी में एक चूहे की तरह बैठा था। डर के मारे उसको तो सॉस भी ठीक से नहीं आ रही थी। बैठे बैठे वह थक गया तो वह फिर से पहियों की तरफ देखने लगा।

पर अब उसे अक्ल आ गयी थी सो अब उसे पहिये और पेड़ देख कर आश्चर्य नहीं हो रहा था। लेकिन फिर भी उसे कुछ ऐसा दिखायी दे गया कि उसे देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। वह उसे कुछ समझ नहीं सका।

उसने देखा कि वैसे तो जैसे जैसे पहिया गोल गोल घूमता था तो उसकी पिन उसमें से बाहर नहीं निकलती थी पर जब गाड़ी एक बड़े से पत्थर के ऊपर से हो कर निकली तो एक "क्लिर्र" की आवाज के साथ पिन ऐक्सिल से बाहर निकल कर जमीन पर गिर पड़ी।

देखने में तो उसको यह बड़ा अच्छा लगा पर लड़के की समझ में कुछ नहीं आया। वह मालिक से इस बारे में कुछ पूछना चाहता था पर मालिक ने तो उससे चुप रहने के लिये कह रखा था।

कुछ देर बाद उसका एक पेंच ढीला पड़ गया। जैक को लगा कि वह समझ गया कि ऐसा क्यों हुआ। वह फिर कुछ कहना चाहता था पर अपने मालिक की तरफ देख कर वह फिर चुप रहा गया। मालिक ने कहा था "एक शब्द और नहीं।"

पर एक बात उसकी समझ में आ गयी कि कील की वजह से अगर यह पेंच निकल गया तो इस पेंच के न होने की वजह से यह पहिया इस गाड़ी में से निकल जायेगा।

मुश्किल से अभी उसकी यह बात समझ में आयी ही थी कि "कैक"। पहिया गाड़ी से बाहर निकल कर धूल में जा पड़ा और गाड़ी के पीछे पड़ा रह गया।

गाड़ी कुछ दूर तक तो तीन पहियों पर चली फिर लड़खड़ा गयी। डंडे के दो टुकड़े हो गये। अब तो उनकी हालत बहुत खराब थी।

जैक डर के मारे चिल्लाया — "यह हो गया। क्या मैंने यह नहीं कहा था कि ऐसा ही होगा?"

अब हम इस बारे में कुछ और लिख कर अपना समय बर्बाद नहीं करेंगे। किसान को इतना गुस्सा आया कि बस... सड़क के बीच में टूटे हुए डंडे के साथ रुकना कोई मजाक नहीं है।

किसान ने जैक को पकड़ा और उसको फिर मार लगायी और कहा कि वह वहॉ से भाग जाये ताकि वह उसको और ज़्यादा परेशान न कर सके।

किसान वास्तव में गलत था क्योंकि उसी ने तो जैक से बोलने के लिये मना किया था। पर इसमें जैक की भी गलती थी। अगर वह हमेशा कहा मानता तो वह यह बात बहुत पहले ही सीख गया होता कि इस बात को मालिक को उसे क्यों नहीं बताना चाहिये था। वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही कहना मानने वाला हो गया था। और वह भी ऐसे समय पर। यह भी ठीक नहीं है।

जैसे भी वह रख सका किसान ने अपनी यात्रा जारी रखी पर जैक को वह सड़क के बीच में पैदल खड़ा छोड़ गया। पर बाद में उसे दुख हुआ। उसने सोचा कि वह तो उसने उससे मजाक में कहा था पर अब वह बेचारा वहॉ अकेला खड़ा क्या कर रहा होगा।

कहीं उसने कोई ऐसा रास्ता न ले लिया हो जिसे वह जानता न हो और वह सोचता हो कि वह उस रास्ते पर चल कर घर पहुॅच जायेगा।

जैक ने फिर से गलत रास्ता ले लिया था वह फिर से जंगल और मैदानों से हो कर चल दिया। वह बहुत दूर तक चलता रहा जब तक कि उसके पैर जवाब नहीं दे गये। इस बार वह एक सुन्दर से मैदान में बसे एक गॉव में निकल आया।

गॉव के बाहर एक आदमी अपनी भेड़ों की देखभाल कर रहा था। जैक ने उससे पूछा — "आप कैसे हैं?"

आदमी बोला — "मैं ठीक हूँ तुम कैसे हो। जल्दी जल्दी बड़े हो मेरे बच्चे।"

आगे बात बढ़ती गयी और जैक ने उसे अपनी सारी कहानी बता दी – शुरू से ले कर आखीर तक। किसान उसकी कहानी सुन कर बहुत खुश हुआ क्योंकि उसी समय उसको एक गड़रिये की जरूरत थी जो उसकी भेड़ों को चरा लाये पानी पिला लाये और उनकी देखभाल करे जिससे वे किसी और के भेड़ों के झुंड में न मिल जायें या खो न जायें।

वे उसकी एक खास नस्ल की भेड़ें थीं और वह उनको किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं पहुँचाने देना चाहता था। ऐसा कहा जाता था कि ऐसी भेड़ें केवल एक बादशाह के पास ही थीं और उसी से इस किसान ने एक उनका एक मेमना लिया था।

सो वे वे वाली भेड़ें थीं। कोई सोच सकता है कि वे कितनी सुन्दर भेड़ें होंगी क्योंकि वे एक बादशाह के मेमने की सन्तान थीं।

जैक बहुत खुश हुआ क्योंकि उसकी खुशकिस्मती से उसको यह जगह मिल गयी थी। उन लोगों का सौदा हो गया और जैक एक गड़रिया हो गया।

आदमी ने कहा — "तुम सारा दिन भेड़ों की देखभाल करना। उनको घाटी में नीचे नदी पर पानी पिलाने ले जाना और जब अँधेरा

होने लगे तब तुम इनको वापस ले आना। अगर तुम्हें ठंडा लगे तो भेड़ों के बाड़े में घुसने वाले दरवाजे पर आग जला लेना ताकि भेड़ें ठंड में जम न जायें। उनको बाड़े में छत के नीचे ले जाना।"

किसान की ये हिदायतें साफ साफ थीं। जैक ने उसको विश्वास दिलाया कि वह जैसा उसने कहा है वैसा ही करेगा। अगले ही दिन से वह भेड़ों को बाहर ले जाने लगा।

सारा दिन उसने भेड़ों की देखभाल की। जब उसको खुद को प्यास लगी तो वह उनको नदी पर पानी पिलाने के लिये ले गया। जब रात को अँधेरा हो आया तो उसने उनको ला कर बाड़े में अन्दर कर दिया।

यह बाड़ा भी अजीब था। जैक ने ऐसा बाड़ा पहले कभी नहीं देखा था। उसका बाड़ा बुनी हुई विलो की टहनियों से बना हुआ था। उसकी छत झाड़ियों से छवाई हुई थी ताकि उसमें से बारिश अन्दर आ कर जानवरों को कोई नुकसान न पहुँचा सके।

पर उसके एक तरफ एक खुली जगह छूटी हुई थी जिसकी छत सरकंडे[39] की थी और वह लट्ठों पर टिकी थी। जैक ने अपनी खोज पर खुश होते हुए सोचा कि यही इस बाड़े के अन्दर घुसने का दरवाजा होगा।

[39] Translated for the word "Reed". See its picture above.

जब उसे ठंड लगी तो उसने आग जलाने की सोची। उसने सोच कि सरकंडे की छत के नीचे आग जलाना ठीक रहेगा। सो उसने आग वहीं जला ली। अब आग तो बहुत बढ़िया चीज़ है। ठंड में जैक उसके पास बैठ कर आग की गर्मी लेने लगा।

कि तभी उसे याद आया कि उसके मालिक ने कहा था कि अगर उसे ठंड लगे तो वह भेड़ों को भी छत के नीचे ही ले आये जिससे कि वे भी ठंड से बच जायें।

यह तो सच था। उसने सोचा कि इससे ज़्यादा अच्छी गर्म जगह और कौन सी होगी सो उसने वही किया जो उसके मालिक ने कहा था। उसने सबसे बढ़िया भेड़ को चुना पकड़ा जिसके गले में घंटी बॅधी हुई थी और उसे छत के नीचे धकेल दिया।

पर वहॉ तो आग जल रही थी सो वह भेड़ तो उसकी गर्मी नहीं सहन कर सका और उसके शरीर के ऊपर की सारी ऊन जल गयी।

यह देख कर जैक चिल्लाया — "ओहो अब मेरी समझ में आया कि हर भेड़ को आग में से जाना चाहिये ताकि वे ठंड में जम न पायें।"

उसने सोचा कि वह ठीक कर रहा था उसने सारी भेड़ों को उस छत के नीचे धकेल दिया।

अचानक उसने देखा कि बाड़ा छत सरकंडे की छत सबने आग पकड़ ली थी और वह सब जगह बड़ी खुश खुश जल रही थी। जैक चुपचाप शान्त खड़ा था। उसने कभी पहले ऐसा दृश्य देखा

नहीं था सो वह मालिक के हुक्म मान कर बहुत खुश हो रहा था। क्योंकि वह यह भी देख रहा था कि अब भेड़ें आग के पास ठंड महसूस नहीं करेंगी।

सो वह बड़े सन्तोष के साथ अपने काम को देखता रहा जिसे उसने अभी अभी पूरा किया था। बस उसकी एक ही इच्छा थी कि अगर उसका मालिक यहॉ होता... तो वह कहता कि मैंने कितनी अच्छी तरह से भेड़ों की देखभाल की।

और उसकी इच्छा पूरी हुई। उसका मालिक तभी मेज पर खाना खाने बैठा था – अपनी रोटी और प्याज। क्योंकि उस दिन उसके उपवास का दिन था।

उसकी निगाह अपनी खिड़की के बाहर गयी तो उसने देखा कि बड़े ज़ोर की आग लगी हुई है। कुछ पल तो वह उसे देखता रहा फिर उसे लगा कि यह आग तो उसके अपने बाड़े की तरफ है।

यह उसको बड़ा अजीब लगा। अपने मुॅह में भरे हुए कौर के साथ वह अपने घर से अपनी भेड़ों के बाड़े की तरफ भाग लिया। पहले वह जल्दी जल्दी चला फिर भागा और पहाड़ी पर ऊॅचे चलता चला गया।

हॉफता हॉफता वह अपने बाड़े पर पहुॅचा तो उसने देखा कि उसकी तो छत ही जल गयी है। उसकी शाही भेड़ों की नस्ल सब भुन गयी है। उसको लगा जैसे वहॉ सब जगह कटे हुए तरबूज पड़े हों।

यह तो बहुत बुरा काम हुआ। कितना बुरा काम था। जैक ने यह सब कितनी बदमाशी की थी। पर वह खुशकिस्मत था कि केवल पिट कर ही वहॉ से निकल भागने में कामयाब हो गया।

तो यह हुआ उसके साथ।

किसान ने उस चालाक गड़रिये को पकड़ लिया और इतना पीटा कि जैक को लगा कि वह तो अब मर ही जायेगा। किस्मत से वह उसके हाथ से फिसल गया और अपनी पूरी ताकत से वहॉ से भाग लिया। उसने तब तक पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा जब तक वह जंगल नहीं पहुॅच गया।

लेकिन अब वह वहॉ क्या करे। जो लोग कुछ जानते नहीं हैं या कुछ सीखते नहीं है उनका यही हाल होता है। अगर वह ठीक होता तो घर में बैठा आराम से जौ खा रहा होता और दूध पी रहा होता।

जैक जंगल में चलता रहा चलता रहा। कभी वह दॉये मुड़ जाता तो कभी बॉये। कभी आगे चला जाता तो कभी पीछे। कभी इधर जाता तो कभी उधर। इसी तरह से वह बेचारा अपने घर का रास्ता ढूॅढता रहा।

वह इतना भूखा और प्यासा था कि वह जमीन पर गिरे हुए ओक के फल खा लेता और पत्तियों पर पड़ी ओस पी लेता था। पर उसके बाद वह

थक गया और कुछ डर भी गया। भगवान उसका भला करे जो जंगल में रास्ता भूल जाये।

जंगल में चलते चलते उसे रात हो गयी। जंगल का अँधेरा उसको डराने लगा। जब वह भालू भेड़िये या किसी और जंगली जानवर की आवाज सुनता तो उसके शरीर के बाल खड़े हो जाते और डर के मारे उसके सारे शरीर में सिहरन दौड़ जाती।

अब यहाँ से तो वह कहीं बच कर भाग नहीं सकता था। तभी उसे एक बड़ा सा पेड़ दिखायी दिया। उसने देखा कि उसमे काफी गहरा एक गड्ढा सा बना हुआ है।

उसने सोचा यही ठीक है यहाँ वह जंगल के जंगली जानवरों से छिप कर अपनी रात गुजार सकता है। जब हम बड़े बड़े खतरों से गुजर जाते हैं तो फिर छोटे खतरे हमारे लिये क्या मानी रखते हैं।

सो वह उस खोखले तने में घुस गया और सो गया। जैक बहुत थका हुआ था उसने सपने में देखा कि वह घर में जौ और दूध माँग रहा है। कि तभी पिफ़ पैफ़ पफ़ की आवाज सुन कर वह चौंक कर उठा बैठा।

हुआ क्या था कि पास ही में बारह बड़े भयानक दिखायी देने वाले डाकू वहाँ आ कर इकट्ठे हुए थे। उन्होंने आग जलायी खाने के लिये एक बैल भूना और पीने के लिये बढ़िया शराब निकाली।

जब जैक ने बैल को आग पर भुनते हुए देखा तो उसकी खुशबू से उसकी भूख जाग गयी। उस समय वह बहुत खुश होता अगर

वह एक लकड़ी खाने वाला कीड़ा बन जाता और सारा पेड़ ही खा जाता।

वह बेचारा लड़का अपने अनुभवहीन जीवन में यह नहीं जानता था कि डाकू कितने खतरनाक होते हैं। सो वह पेड़ के खोखले से बाहर निकल आया और उनकी तरफ बढ़ गया। पर यह कोई अक्लमन्दी का काम नहीं था। डाकुओं से खिलवाड़ करना कोई अच्छी बात नहीं होती।

जैक ने उनसे कहा कि उसको भूख लगी है वह भी कुछ खाना चाहता है।

डाकुओं ने उसको घूर कर देखा और फिर अपने अपने चाकू और तलवारें निकाल कर उन्हें तेज़ करने लगे ताकि वे उसे इससे भी पहले मार सकें जितनी देर में कोई "जैक रोबिन्सन" कहे। डाकुओं का यही तरीका है। उनको यह सब करने के लिये किसी रस्म की जरूरत नहीं पड़ती।

अचानक एक डाकू बोला — "रुको दोस्तों। क्या यह लड़का हमारे लिये किसी फायदे का नहीं हो सकता?"

दूसरे ने पूछा — "कैसे।"

पहला डाकू बोला — "शायद यह सातवॉ बच्चा हो और अगर यह है तो यह आयरनवौर्ट[40] ढूँढने में हमारी मदद कर सकता है।"

सब चिल्लाये — "हॉ यह तो ठीक है।"

[40] Ironwort – a kind of plant native to Mediterranean region

सो उन्होंने जैक से पूछा और यह सुन कर बहुत खुश हुए कि वह अपने माता पिता के सात बच्चों में से सातवॉ बच्चा है।

इस सवाल से उनका मतलब यह था कि उनको यह मालूम था कि बादशाह ने एक सौदागर से सोने के रूप में बहुत सारी सम्पत्ति हासिल की है जिसको उसे बहुत दिनों से बादशाह को देना था। और ये नीच लोग उसको चुराना चाहते थे।

पर बादशाह ने अपने उस खजाने को सात लोहे के मजबूत दरवाजों के अन्दर रखा हुआ था। हर दरवाजे पर सात सात ताले लगे हुए थे जिनको कोई खोल नहीं सकता था। इसलिये यह एक असली और मुश्किल मामला था जिसे करने के लिये बहुत सावधानी की जरूरत थी।

इसी लिये डाकू लोग एक जादूगरनी के पास गये थे कि या तो वह उनको कोई तरकीब बता दे या फिर कोई ऐसा ताबीज़ दे दे जिससे ये लोग सात दरवाजों के अन्दर बन्द उस खजाने को लूट कर ला सकें।

जादूगरनी ने कहा कि सिवाय आयरनवौर्ट के और कोई चीज़ उन दरवाजों को नहीं खोल सकती। और यह आयरनवौर्ट एक ऐसा भोलाभाला बच्चा ही ढूँढ सकता है जो अपने माता पिता का सातवॉ बच्चा हो। वह यह काम सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही करेगा जब यह पेड़ दूसरे पेड़ों के बीच चमक रहा होगा।

जिस किसी के पास भी यह पौधा हो वह अपनी एक उँगली में कट लगाये उस पौधे को उस कट में रखे और उसे वहीं रखा रहने दे जब तक घाव भरे। ताकि वह उसकी उँगली में ही रहे। इसके बाद कोई भी लोहे की चीज़ – ताला जंजीर दरवाजा उसके कहने पर खुल जायेगा।

अब ऐसा पौधा तो डाकुओं के लिये केवल आनन्द की ही नहीं बल्कि बड़े फायदे की चीज़ थी। सो उन्होंने जैक का बड़े आदर के साथ स्वागत किया उसको खिलाया पिलाया उसके लिये मुलायम बिछौना बिछाया जहाँ वह आराम से और ठीक से सो सके।

पर उन्होंने साथ में यह भी तय कर लिया कि अगर वह उस पौधे को न पा सका तो वे उसको मार देंगे।

जैक बेचारा सपने में सारी रात जंगल में उस पौधे को ढूँढता फिरा। सुबह सवेरे ही डाकुओं ने जैक को जगा दिया और उसे वह पौधा ढूँढने के लिये भेज दिया।

जैक सारे में अपने चारों हाथों पैरों पर चलता हुआ उस बूटी को ढूँढने लगा। इस हालत में जब वह उस बूटी को ढूँढ रहा था उसने तुरन्त ही एक पौधा देखा जो चमक रहा था। यह वही पौधा था जो उसको चाहिये था। वह आयरनवौर्ट था।

डाकुओं में एक डाकू काना था जिसको एक बार शाही तहखाने में बन्द कर दिया गया था। वह किसी तरह से वहाँ से भाग निकला था पर हथकड़ियाँ बेड़ियाँ अभी भी उसके शरीर पर थीं।

बाहर आ कर उसकी जंजीरें तो काटी जा सकीं पर उसकी हथकड़ी किसी खास लोहे की बनी थी जिसको आग गला नहीं सकी और कोई रेती भी नहीं घिस सकी।

जैक ने अपने हाथ में उस पौधे से उसकी हथकड़ी को छुआ तो उसकी हथकड़ी टूट कर जमीन पर गिर पड़ी। यह देख कर वह डाकू तो बहुत खुश हो गया बोला — "भगवान तुम्हें खुशकिस्मत बनाये। तुमने मुझे इस बेकार की चीज़ से आजाद कर दिया। भला हो तुम्हारा बेटा।"

पर जब डाकुओं के कप्तान ने उससे वह बूटी ले कर उस डाकू की दूसरी हथकड़ी खोलने की कोशिश की तो उससे कुछ नहीं हुआ। उसकी मेहनत बेकार गयी। वह लोहा उसका हुक्म ही नहीं मान रहा था। जादूगरनी ने उसको यह नहीं बताया था जो आदमी उसको ढूँढेगा केवल वही उसको इस्तेमाल कर सकता है।

इस तरह डाकुओं ने देखा कि आयरनवौर्ट उनके लिये तो किसी काम की नहीं। यह देख कर डाकू बहुत नाराज हुए और उस लड़के को मारने के लिये फिर से अपने चाकू और तलवारें तेज़ करने लगे।

तभी वह काना डाकू चिल्लाया — "रुक जाओ। तुम लोग कह रहे थे कि अगर उसने हमारे लिये पौधा ढूँढ लिया तो तुम उसे नहीं मारोगे। उसने वह पौधा ढूँढ लिया है तो अब हमें उसे क्यों मारना चाहिये।"

और उन्होंने उसको नहीं मारा क्योंकि डाकू अपनी बात के पक्के होते हैं चाहे वह कोई अच्छी बात हो या बुरी। जब उन्होंने कोई बात कह दी तो वे उसे करेंगे।

पर इस बात से डरते हुए कि जैक उनको कहीं बादशाह के सिपुर्द न कर दे उन्होंने उससे छुटकारा पाने का एक और रास्ता खोज लिया।

उन्होंने क्या किया? उन्होंने जैक को पकड़ लिया और एक खुले बक्से में रख दिया और फिर उसे बन्द कर दिया। उसको चारों तरफ से लोहे की पट्टियों से बॉध दिया और वहीं छोड़ कर चले गये। उन्होंने उसके साथ बहुत बुरा किया।

सो पहले तो जैक अच्छे से बुरी हालत में पहुॅचा था और अब तो बुरी से और बुरी हालत में पहुॅच गया। जब तक वह किसी शराब के बक्से में बॅधा हुआ नहीं पाया गया। उस बेचारे के साथ पता नहीं क्या क्या होना था। ज़रा सोचो शराब के बक्से में बन्द।

यहॉ तो अब सब कुछ खत्म हो गया। जैक रोने लगा चीखने लगा जब तक कि भूखे भेड़ियों ने उसको नहीं सुन लिया। वे यह सोचते हुए वे तुरन्त ही दौड़े आये कि वे उसको मार कर खा जायेंगे। पर वे उसका कुछ न बिगाड़ सके बस होठ चाटते ही रह गये।

जैक तो बक्से में बन्द था। जैसे ही उसको लगा कि वहॉ भेड़िये मौजूद हैं उसने छेद में से बाहर देखा और बिल्कुल बिना हिले डुले चुपचाप बैठ गया।

यह देख कर भेड़िये बैल के बचे हुए टुकड़ों पर टूट पड़े। एक भेड़िये ने जो उन सबमें बड़ा और भयानक था एक हड्डी उठायी और जैक के बक्से के पास जा कर बैठ गया। जैक तो सॉस भी मुश्किल से ले पा रहा था।

अचानक जैक ने देखा कि भेड़िये की बालों वाली पूँछ उसके छेद से हो कर अन्दर तक आ रही थी। यह देख कर तो वह बहुत ही डर गया। उसकी पूँछ और अन्दर तक आती जा रही थी और जैक और ज़्यादा परेशान होता जा रहा था।

आखिर भेड़िये ने अपने आपको हिलाया और वहॉ से कुछ दूर जा कर बैठ गया। पर इस तरह बैठने से उसकी सारी की सारी पूँछ अन्दर आ गयी और जैक की नाक छूने लगी। यह तो उसके साथ बहुत बुरा हो रहा था।

वह डर के मारे कॉप उठा। इसी डर में उसने उसकी पूँछ अपने दोनों हाथों से अपनी पूरी ताकत के साथ पकड़ ली और पकड़े रहा। यह देख कर भेड़िया भी बहुत डर गया और वहॉ से भाग लिया। अब भेड़िया आगे आगे और बक्से में बन्द जैक उसके पीछे पीछे।

यह तो एक देखने वाला दृश्य था। भेड़िया तो अब बहुत ही भयानक हो गया था। उसके पीछे पीछे बक्सा पेड़ों से टकराता चल जा रहा था। भेड़िया पहाड़ी के ऊपर जा रहा था घाटी में नीचे जा रहा था बक्सा उसके पीछे पीछे जा रहा था और जा रहा था उसमें बैठा जैक। यह सब कुछ तो देखने लायक था।

अचानक बक्सा एक दीवार से टकराया और खुल गया। भेड़िया तो भागता ही रहा पर जैक को अपना घर मिल गया था। वह अभी भी अपने हाथ में भेड़िये की पूँछ पकड़े थे हालाँकि वह अब टूट गयी थी।

तो माँ के लाड़ले जैक के साथ यह सब हुआ। कौन जानता है कि उसके साथ कुछ और भी हुआ हो जिसे उसकी कहानी में न जोड़ा गया हो पर हमें उसका क्या पता।

13 मुर्गीखाने में लोमड़ा और साही[41]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के रोमेनिया देश में कही सुनी जाती है।

"एक बार ही वहॉ जाना काफी नहीं है।" मुर्गीखाने जाने के बारे में कम से कम लोमड़ा तो ऐसा ही सोचता था। और हर आदमी जानता था कि वह मुर्गीखाने में मुर्गे मुर्गियों से मिलने नहीं जाता था बल्कि वह अपने अगले खाने के लिये जाता था।

जब वह मुर्गों के बाड़े के पास इधर उधर घूम रहा था तो सबसे पहले साही[42] को इस बात का शक हुआ कि यह लोमड़ा मुर्गीखाने में केवल उनसे मिलने ही नहीं जाता था बल्कि वह कुछ और भी करने जाता था।

सो वह लोमड़े से बोला — "अरे लोमड़े भाई, तुम इस समय यहॉ क्या कर रहे हो?"

लोमड़े ने अपने होठों पर अपना पंजा रखते हुए कहा — "ए साही भाई, इतनी ज़ोर से मत बोलो। मैं यहॉ दावत खाने आया हूँ।"

---

[41] Fox and Hedgehog at the Hen House – a folktale from Romania, Europe.
Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/romania/romania_folktale1.html
Collected and retold by Phillip Martin

[42] Translated for the word "Hedgehog". See its picture above.

"मुर्गीखाने में? नहीं नहीं, तुम इस तरह से वहॉ नहीं जा सकते।"

लोमड़ा फुसफुसाया — "तुम देखो तो सही साही भाई। तुम मेरे साथ आओ तो तुमको भी उतना खाने को मिल जायेगा जितना तुम चाहते हो। और सबसे अच्छी बात तो यह है कि खाना अगली बार के लिये भी काफी रहेगा।"

अब साही कोई बेवकूफ तो था नहीं। उसने लोमड़े को सावधान किया — "देखो अपना ख्याल रखना। जिन आदमियों का यह मुर्गीखाना है वह तुमको ऐसे ही नहीं जाने देंगे।"

लोमड़ा बोला — "मैं उन आदमियों से कहीं ज़्यादा अक्लमन्द हूॅ जिनका ये मुर्गीखाना है। मैं उनकी वजह से अपना खाना नहीं छोड़ने वाला। अब यह बताओ कि तुम मेरे साथ आ रहे हो या नहीं?"

हालॉकि साही लोमड़े से ज़्यादा अच्छे तरीके से सोचता था पर इस समय वह लोमड़े के पीछे पीछे मुर्गीखाने की तरफ चल दिया।

पर जिन लोगों का वह मुर्गीखाना था वे भी इतने बेवकूफ नहीं थे जितना कि लोमड़ा सोचता था। अबकी बार वे लोमड़े के वहॉ आने के लिये तैयार बैठे थे।

उन्होंने मुर्गीखाने के सामने एक बहुत गहरा गड्ढा खोद रखा था और उसको ढक रखा था। साही और लोमड़े ने उस गड्ढे को

देखा नहीं और वे जब वहॉ जा रहे थे तो दोनों उस गड्ढे में गिर पड़े – साही नीचे और लोमड़ा उसके ऊपर।

जैसे ही साही ने अपने आपको लोमड़े के नीचे से निकाला वह लोमड़े से बोला — "मैं न कहता था कि ये लोग तुम्हारे लिये तैयार होंगे।"

लोमड़े ने उसे चुप करते हुए कहा — "अब उन सब बातों को कहने का कोई फायदा नहीं। असलियत यह है कि हम इस समय गड्ढे की तली में पड़े हैं और अब यह सोचो कि हम यहॉ से कैसे निकलें।"

साही मुस्कुरा कर बोला — "पर लोमड़े भाई तुम तो हमेशा ही बहुत होशियार रहे हो तुम इतने छोटे से साही से यह उम्मीद कैसे करते हो कि वह तुमको बताये कि तुमको यहॉ से कैसे निकलना है।"

लोमड़ा बोला — "तुम केवल साही ही नहीं हो तुम तो बहुत ही होशियार जानवर हो। ज़रा सोचने में मेरी सहायता करो न।"

साही बोला — "नहीं नहीं, मुझे नहीं लगता कि मैं इस काम में तुम्हारी कोई सहायता कर सकता हूँ। गिरने से और फिर तुम्हारे मेरे ऊपर गिरने से मेरा तो जी घबरा रहा है। ज़रा ध्यान रखना मेरा जी बहुत ही घबरा रहा है।"

लोमड़ा चिल्लाया — "नहीं नहीं, तुम बीमार नहीं हो सकते, कम से कम इस गड्ढे में तो नहीं। इस गड्ढे में तो जगह ही कहाँ है? और फिर जो कुछ तुम करोगे वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

कह कर लोमड़े ने साही को तुरन्त ही अपने मुँह में दबा लिया और उसको गड्ढे के बाहर फेंक दिया।

साही ने जब देखा कि वह मुर्गीखाने के मालिकों के जाल में से सुरक्षित निकल आया है तो उसने गड्ढे के किनारे के ऊपर से गड्ढे के अन्दर लोमड़े की तरफ देखा और बोला — "अब बताओ अक्लमन्द कौन है? तुम कि मैं? तुम कहते थे कि तुम बहुत अक्लमन्द हो पर अक्लमन्द तो मैं निकला जो तुमको धोखा दे कर इस गड्ढे के बाहर निकल आया।"

लोमड़ा बोला — "ठीक है ठीक है। तुम ही अक्लमन्द हो पर अब तुम मुझे भी तो कम से कम यहाँ से बाहर निकलने का कोई तरीका बताओ।"

साही बोला — "मेरे पास एक तरीका है पर वह तभी काम करेगा जब तुम उस पर ठीक से काम करोगे। तुमको बहाना बनाना पड़ेगा कि तुम मर गये हो। तुम बिल्कुल अकड़े हुए पड़े रहो चाहे जो कुछ हो जाये।

जब आदमी लोग आयेंगे तो वे तुमको मरा हुआ समझ कर सड़क के दूसरी तरफ बाहर कूड़े में डाल देंगे। फिर तुम वहाँ से

भाग जाना पर तब तक तुमको बिल्कुल ही चुपचाप मरे जैसा पड़े रहना पड़ेगा।"

साही तो वाकई में अक्लमन्द साबित हुआ। जैसा उसने सोचा था वैसा ही हुआ।

जब आदमी लोग वहॉ आये और उन्होंने लोमड़े का देखा तो वह उनको मरा हुआ लगा। बस उन्होंने उसको गड्ढे से बाहर निकाल कर सड़क के दूसरी तरफ कूड़े में फेंक दिया।

लोमड़ा जैसे ही धरती पर गिरा वैसे ही वह उठ कर वहॉ से भाग गया। उसके बाद उसने न तो पीछे मुड़ कर देखा और न ही फिर मुर्गीखाने की तरफ देखा।

इस मुर्गीखाने की घटना के बाद लोमड़ा समझ गया कि "बस एक बार ही काफी था।"

14 मौत की आवाज[43]

यह सुन्दर कहानी रोमेनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसकी केवल एक ही इच्छा थी और वह थी अमीर बनने की। दिन रात वह अमीर बनने के अलावा कुछ और सोचता ही नहीं था।

लो एक दिन उसकी इच्छा पूरी हुई और वह अमीर हो गया। अमीर होने पर और अपने पास कितना सारा खोने के लिये पाने पर वह यह सोचने लगा कि इतना सारा पैसा अपने पीछे छोड़ कर अब मरना ठीक नहीं है।

सो उसने अपने दिमाग में कुछ इरादा किया और उसके अनुसार उसने तय किया कि वह यह पता लगाये कि कहीं कोई ऐसी जगह है या नहीं जहॉ मौत न हो।

वह अपनी यात्रा के लिये तैयार हुआ। उसने अपनी पत्नी से विदा ली और चल दिया। जब भी कभी वह किसी नये देश में आता वहॉ उसका पहला सवाल यही होता कि क्या उस देश में कभी कोई मरा था। और जब वह यह सुनता कि वहॉ तो लोग मरते ही रहते हैं तो वह निराश हो कर आगे चल देता।

[43] Voice of the Death – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site: https://fairytalez.com/the-voice-of-death/ Taken from : Andrew Lang's Fairy Books

आखिर वह एक ऐसे देश में पहुँचा जहाँ वही सवाल पूछने पर लोगों ने कहा कि वे तो इस शब्द के मायने भी नहीं जानते। तो हमारा यह यात्री यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

वह बोला — "तब तो तुम्हारे देश में बहुत सारे लोग होंगे क्योंकि यहाँ तो कोई मरता ही नहीं है।"

लोग बोले — "नहीं इतने सारे लोग तो नहीं हैं। समय समय पर एक आवाज सुनायी देती है जो पहले एक को पुकारती है फिर दूसरे को। जो कोई वह आवाज सुनता है वह यहाँ से चला जाता है और फिर कभी वापस नहीं आता।"

आदमी ने पूछा — "क्या जिस आदमी का नाम पुकारा जाता है उस आदमी ने कभी उसको देखा है जो उसे पुकारता है या फिर वह केवल आवाज ही सुनता है।"

लोग बोले — "नहीं नहीं वे सुनते भी हैं और उसको देखते भी हैं जो उनको पुकारता है।"

जब उस आदमी ने यह सुना तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये लोग कितने बेवकूफ हैं जो केवल आवाज का कहा मानते हैं जबकि वे जानते हैं कि वे एक बार वहाँ से गये तो वापस नहीं लौटेंगे।

यहाँ से वह अपने घर वापस चला गया। अपना सारा सामान उठाया अपनी पत्नी और बच्चों को लिया और तय किया कि वह उन सबके साथ उसी देश में जा कर रहेगा जहाँ मौत कभी नहीं

आती। बल्कि जहॉ वे एक आवाज सुनते हैं और उस आवाज को सुन कर उसके पीछे पीछे चले जाते हैं जहॉ से वे फिर कभी वापस नहीं लौटते।

क्योंकि उसने अपने मन में यह तय किया हुआ था कि जब उसने या उसके किसी परिवार के आदमी ने यह आवाज सुनी तो वे उस पर कोई ध्यान ही नहीं देंगे चाहे वह कितनी भी ज़ोर से क्यों न पुकारे इसलिये वह निश्चिन्त था।

जब वह अपने नये घर में बस गया और अपना सब सामान ठीक कर लिया तब उसने अपनी पत्नी और परिवार से कहा कि जब तक वे खुद मरना न चाहें उनको उस आवाज को सुन कर उस पर कोई ध्यान देने की जरूरत नहीं है जिसको वे किसी न किसी दिन जरूर सुनेंगे।

कुछ साल तक सब कुछ ठीकठाक चलता रहा। सब अपने नये घर में खुशी से रह रहे थे। लेकिन एक दिन जब वे सब मेज के चारों तरफ बैठे हुए थे उसकी पत्नी यकायक उठ खड़ी हो गयी और ज़ोर से चिल्लायी — "मैं आ रही हूॅ। मैं आ रही हूॅ।"

और उसने अपने फ़र के कोट को ढूॅढना शुरू कर दिया। पर उसका पति उछल उठा। उसने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया और उसे रोकते हुए डॉटते हुए कहा — "क्या तुमको याद नहीं कि मैंने तुमसे क्या कहा था। तुम वहीं रुकी रहो जहॉ तुम हो जब तक तुम मरना न चाहो।"

पत्नी बोली — "अरे तुम सुन नहीं रहे कि वह आवाज मुझे बुला रही है। मैं तो केवल यह देखने जा रही हूँ कि वहाँ मेरी क्या जरूरत है। मैं बस अभी आयी।"

कह कर वह वहाँ जाने के लिये जहाँ वह आवाज उसे बुला रही थी जबरदस्ती अपने पति के हाथ से अपना हाथ छुड़ाने लगी। पर आदमी ने भी उसका हाथ बहुत कस कर पकड़ा हुआ था वह उसको छोड़ नहीं रहा था। उसने घर के दरवाजे खिड़कियाँ सब बन्द करवा दिये थे।

जब पत्नी ने यह देखा तो उसने अपने पति से कहा — "बहुत अच्छे मेरे प्रिय पति। मैं वहीं करूँगी जो तुम कहोगे और वहीं रहूँगी जहाँ मैं हूँ।"

उसके पति ने सोचा कि यह ठीक कह रही है। उसने यह अच्छा सोचा कि उसने उस आवाज को जीत लिया। पर कुछ मिनट बाद ही वह फिर अचानक से एक दरवाजे की तरफ भागी उसे खोला और तीर की तरह से भागी चली गयी। पति उसके पीछे पीछे था।

पति ने उसे उसके फ़र कोट से पकड़ लिया। उससे बहुत विनती की कि वह न जाये क्योंकि अगर एक बार वह चली गयी तो फिर वह उसके पास कभी लौट कर नहीं आयेगी। वह कुछ नहीं बोली उसके हाथ पीछे की तरफ लटक गये। वह खुद अचानक

आगे की तरफ झुक गयी। वह खुद तो अपने कोट में से फिसल गयी और उसका कोट पति के हाथों में ही रह गया।

आदमी बेचारा तो पत्थर सा हो गया जबसे उसने उसे दरवाजे की तरफ भागते हुए देखा और उसको कोट में से निकल जाते हुए देखा। जाते जाते वह चिल्लाती जा रही थी "मैं आ रही हूँ। मैं आ रही हूँ।"

जब वह ऑखों से ओझल हो गयी तब आदमी को होश आया वह बुड़बुड़ाता हुआ अपने घर वापस चला गया "अगर वह इतनी बेवकूफ थी कि जो मरना ही चाहती थी तो मैं क्या कर सकता था।

मैंने उसको चेतावनी भी दी थी उससे विनती भी की थी कि वह उस आवाज की तरफ वह कोई ध्यान न दे चाहे वह कितनी भी ज़ोर से पुकारे पर उसने सुना ही नहीं।"

इस घटना के बाद दिन हफ्ते महीने और साल गुजर गये। घर को परेशान करने वाली फिर ऐसी कोई घटना नहीं घटी। लेकिन एक दिन वह आदमी नाई की दूकान पर था और अपनी हजामत बनवा रहा था। उसकी दूकान में और बहुत सारे आदमी भी थे।

नाई ने उस आदमी की ठोढ़ी पर बस अभी साबुन लगाया ही था कि अचानक वह आदमी कुर्सी से उठ गया और चिल्लाने लगा "मैं नहीं आऊँगा मैं नहीं आऊँगा।"

नाई और दूसरे लोगों ने उसे चिल्लाते हुए सुना तो आश्चर्य में पड़ गये। पर वह फिर से दरवाजे की तरफ देखते हुए चिल्लाया "मैं नहीं आऊँगा। सुना तुमने? मैं नहीं आऊँगा। मैं तुमसे बार बार कह रहा हूँ कि मैं नहीं आऊँगा। चले जाओ यहाँ से।"

पर कुछ मिनट बाद उसने फिर पुकारा तो आदमी फिर चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से वरना इसका नतीजा तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा। तुम मुझे कितना ही पुकारो पर तुम मुझे बुला नहीं पाओगे।"

और वह इतना गुस्सा हो गया कि शायद तुम लोग समझ रहे होगे कि कोई सचमुच में दरवाजे पर खड़ा था और उसको तंग कर रहा था।

आखिर वह कूदा और नाई से रेज़र छीनता हुआ बोला — "मुझे रेज़र दो मैं उसे जा कर सिखाता हूँ कि वह लोगों को यहाँ शान्ति से रहता छोड़ दे।"

वह दूकान से बाहर ऐसे भागा चला गया जैसे किसी के पीछे भाग रहा हो। नाई ने सोच रखा था कि वह अपना रेज़र ऐसे ही नहीं जाने देगा सो वह अपने रेज़र के लिये उसके पीछे पीछे दौड़ा।

दोनों अपनी पूरी रफ्तार से भागे जा रहे थे। भागते भागते वे शहर से बाहर निकल गये और अचानक वह आदमी एक पहाड़ी की चोटी से नीचे गिर गया और फिर कभी नहीं देखा गया।

इस तरह से वह आदमी भी अपनी मर्जी के बगैर उस आवाज के पीछे भागने पर मजबूर हो गया।

नाई सीटी बजाता हुआ अपने आपको बधाई देता हुआ घर पहुँचा कि वह बच गया था। घर जा कर उसने बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

और फिर तो देश विदेशों में सब जगह यह बात फैल गयी कि जो लोग चले गये हैं और फिर वापस नहीं आये हैं वे किसी गड्ढे में जा कर गिर गये हैं। क्योंकि उस समय तक इस बात का किसी को नहीं पता था कि आवाज के पुकारने पर जो लोग जाते थे वे कहाँ जाते थे।

सो शहर के लोगों ने वहाँ जा कर उस गड्ढे को देखने का फैसला किया कि जिसने इतने सारे आदमियों को खा लिया था और फिर भी अभी तक भरा नहीं था। पर वहाँ तो कुछ नहीं था। वहाँ तो दूर दूर तक बड़ा सा मैदान फैला पड़ा था।

ऐसा लग रहा था जैसे वह मैदान वहाँ दुनियाँ बनने के समय से ही ऐसा था। उस दिन के बाद से उस देश में भी लोग सामान्य लोगों की तरह से मरने लगे।

15 कुत्ता, बिल्ली, चूहा[44]

यह लोक कथा भी हमने तुम्हारे लिये यूरोप के रोमेनिया देश की लोक कथाओं से चुनी है।

एक बार की बात है कि एक कुत्ता, एक बिल्ली और एक चूहा तीनों बड़े अच्छे दोस्त थे। पर यह बहुत पुरानी बात है आज तो जैसा कि तुम जानते हो वे अब आपस में दोस्त नहीं हैं।

अगर तुमको नहीं मालूम कि उन तीनों के बीच क्या हुआ जो उनकी दोस्ती टूट गयी तो फिर सुनो यह कहानी कि उनके बीच क्या हुआ।

एक दिन बिल्ली कुत्ते से बोली — "तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि हम दोस्त हैं और मैं यह दोस्ती बनाये रखना चाहती हूँ।"

कुत्ता बोला — "हॉ हम अच्छे दोस्त हैं पर तुम कहना क्या चाहती हो।"

बिल्ली बोली — "यह बहुत सादा सी बात है। हम लोगों को इस बारे में एक समझौता लिख लेना चाहिये। उस कागज में लिखा होगा कि हम सबके क्या क्या काम हैं। ऐसा होने के बाद फिर हम लोगों में कभी झगड़ा नहीं होगा।"

---

[44] Dog, Cat, Mouse – a folktale from Romania, Europe. Translated from the Web Site : http://www.themuralman.com/romania/romania_folktale2.html
Collected and retold by Phillip Martin

सो दोनों दोस्तों ने मिल कर यह निश्चय किया कि कुत्ता घर की और घर के बाहर की हर चीज़ की रखवाली करेगा और बिल्ली घर के अन्दर रहेगी और आग की देखभाल करेगी।

उसके बाद दोनों ने उस कागज पर अपने अपने पंजों के निशान बनाये और बिल्ली ने उस कागज को सुरक्षित रूप से घर की सबसे ऊपर वाली मंजिल के कमरे में रख दिया।

जैसे जैसे समय बीता कुत्ते ने सोचा कि वह कागज बेकार का कागज है — "मैं ही हमेशा बाहर ठंड और बारिश में क्यों रहूँ जब कि यह बिल्ली अन्दर आग की गर्मी में आराम से सोती रहे।

मैं छोटे छोटे टुकड़े और हड्डियॉ खाऊँ और वह बिल्ली दूध मलाई खा खा कर मोटी होती रहे। मैं चोरों से घर की हिफाजत करूँ और यह बिल्ली केवल गर्म आग की ही हिफाजत करे। नहीं नहीं मैं इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं हूँ।"

पर बिल्ली बोली — "पर समझौता तो समझौता है।"

कुत्ता भौंका — "मैं उस समझौते को फिर से देखना चाहता हूँ।"

बिल्ली अपना मुँह बनाती हुई और अपनी पूँछ हिलाती हुई ऊपर वाले कमरे मे गयी। पर वहॉ जा कर जो उसने देखा तो वह तो उसके लिये बिल्कुल ही तैयार नहीं थी।

वह समझौते का कागज तो वहीं रखा था जहॉ वह रख कर गयी थी पर वह वहॉ वैसे नहीं रखा था जैसे वह उसे वहॉ रख कर

गयी थी। चूहे ने उसको अपना बिस्तर बनाने के लिये सारा का सारा कुतर दिया था।

अब कुत्ते को दिखाने के लिये वहाँ कुछ भी नहीं था।

बिल्ली चिल्लायी — "ओ आलसी चूहे, अगर मैं तुमको पकड़ लूँ और मैं तुमको खा जाऊँ तो।" जैसे ही बिल्ली ने चूहे को वहाँ से भगाया तो उस कमरे की दीवारें हिल गयीं।

बिल्ली ने अपने मुँह से जोर से हवा निकाली तो उस समझौते के कागज कुछ टुकड़े उड़ कर नीचे वहाँ जा पड़े जहाँ कुत्ता बिल्ली का इन्तजार कर रहा था।

यह जानने के लिये कि ऊपर क्या हो रहा था कुत्ता ऊपर गया और उस कमरे में झाँका और भौंका — "यहाँ क्या हो रहा है?"

बिल्ली बोली — "उस चूहे ने हमारे समझौते का कागज खा लिया और उसके टुकड़ों का अपना बिस्तर बना लिया।"

कुत्ते ने पूछा — "सो अब कोई समझौता नहीं?"

बिल्ली चिल्लायी — "क्या हो गया है तुमको? तुमको सुनायी नहीं पड़ रहा? चूहे ने हमारा समझौता खा लिया।"

बिल्ली जिस तरीके से कुत्ते से बोली वह कुत्ते को अच्छा नहीं लगा। इसके अलावा वह उस समझौते से पहले ही नाखुश था सो वह उस कमरे के अन्दर घुस गया और बिल्ली को बाहर खदेड़ दिया।

उस कमरे के लकड़ी के तख्ते और ज़ोर से हिले, बाल हवा में उड़े और कुत्ते ने बिल्ली को गर्दन से दबोच लिया और फिर वह उस तब तक हिलाता रहा जब तक उसका गुस्सा खत्म नहीं हो गया।

उस दिन से ले कर आज तक जब भी कुत्ता बिल्ली को देखता है वह उस समझौते की वजह से उसको भगाता है और इसी चक्कर में बिल्ली भी चूहे के पीछे भागती है।

16 छोटा आधा मुर्गा[45]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

स्पेन[46] में एक मुर्गी सुबह से अपने बड़े से घोंसले में अपने बहुत ही खास अंडों के ऊपर बैठी हुई थी।

वे अंडे खास इसलिये थे क्योंकि ये अंडे वह पहली बार से रही थी। इससे पहले उसके अंडे एक किसान ले जाया करता था और उसका अपना बच्चा कहने के लिये कोई नहीं था।

सुबह ही उसके एक अंडे में से एक बच्चा निकला था। वह बहुत ही प्यारा चूज़ा था छोटे छोटे पंखों से ढका हुआ। उसके बाद उसके और भाई बहिन भी आना शुरू हो गये।

उसके सब बच्चे पहले बच्चे के बराबर ही सुन्दर थे और वह मुर्गी अपने बच्चों को देख कर बहुत खुश थी।

अब वह अपने आखिरी अंडे पर बैठी हुई थी कि उसने उसके लुढ़कने की आवाज सुनी और साथ में अन्दर से खट खट की आवाज भी।

---

[45] Little Half-Chick – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=56
Retold and written by Mike Lockett.

[46] Spain is a country on the Western coast of Europe

और फिर वह अंडा टूट गया और बच्चे की चोंच का आखिरी हिस्सा उसको दिखायी दिया। जैसे जैसे वह बच्चा उस अंडे में से बाहर निकलता रहा धीरे धीरे उस अंडे का खोल टूटता रहा। और उसके बाद मॉ ने बच्चे की "पीप" की आवाज सुनी।

पर उस बच्चे को देख कर मॉ मुर्गी की खुशी चिन्ता में बदल गयी क्योंकि यह बच्चा उसके और सब बच्चों से अलग था। वह अभी भी उसके पंखों के नीचे था।

यह चूज़ा ऐसा लग रहा था जैसे कि वह दो हिस्सों में बॅटा हुआ हो क्योंकि वह केवल आधा ही चूज़ा था। उसकी केवल एक टॉग थी, एक पंख था और एक ऑख थी।

उसने सोचा — "ओह बेचारा मेरा बच्चा, यह तो केवल आधा ही चूज़ा है। यह तो कभी ठीक से बड़ा भी नहीं होगा और कभी अपने दूसरे भाइयों और बहिनों जैसा भी नहीं हो पायेगा।

इसके भाई बहिन तो अपने आप खेतों आदि में खूब दौड़ेंगे पर इसको हमेशा ही घर के आस पास ही रहना पड़ेगा जहॉ मैं उसकी देखभाल कर सकूॅ।"

उसको देख कर वह बहुत दुखी हो गयी पर वह क्या करती। वह उसको हमेशा आधा चूज़ा कह कर ही बुलाती।

हालॉकि वह आधा चूज़ा देखने में बहुत अजीब सा और मजबूर सा लगता पर वह अपनी मॉ की देखभाल में नहीं रहना चाहता था। वह अपनी मर्जी की करता था और मॉ का कहा नहीं मानता था।

जब मॉ और सब चूज़ों को बुलाती तो वे सब उसके पास तुरन्त ही आ जाते पर वह आधा चूज़ा जब उसकी इच्छा होती तभी आता और बाकी समय उसकी आवाज को अनसुना कर देता।

वह यह दिखाने के लिये एक तरफ को घूम जाता कि क्योंकि उसका एक ही कान था इसलिये उसने उसकी आवाज सुनी ही नहीं।

जब उसकी मॉ अपने बच्चों को ले कर घूमने निकलती तो आधा चूज़ा कहीं झाड़ी में छिप जाता या फिर किसी मक्की के खेत में छिप जाता।

इससे सब चिन्ता में पड़ जाते कि वह आधा चूज़ा कहॉ गया पर मॉ मुर्गी का दिल कभी उसको सजा देने को नहीं करता। ना ही वह कभी उससे गुस्सा होती।

उसको हमेशा ही ऐसा लगता कि उसकी यह हालत केवल उसकी अपनी वजह से थी क्योंकि उसने उसको अपना कहना मानना नहीं सिखाया था। और इसी लिये उसका बर्ताव दिन पर दिन और बुरा होता जा रहा था।

वह आधा चूज़ा जिस किसी से भी मिलता उसी के साथ बुरा बर्ताव करता और इस तरह से वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता था। वह दूसरे चूज़ों और जानवरों से लड़ता भी बहुत था।

जब मॉ मुर्गी अपने दूसरे चूज़ों को बाहर घुमाने ले जाती तो वह गायब हो जाता जिससे उसकी मॉ को चिन्ता हो जाती।

उसके भाई बहिन यह सोचते कि शायद वह हमेशा के लिये ही गायब हो गया हो और फिर वापस न आये खास कर के जब जबकि उनकी मॉ हमेशा उनको यह याद दिलाती रहती कि वह एक खास चूज़ा है और उससे कोई आशा रखना बेकार है।

पर उसके अन्दर खास चीज़ केवल एक यही थी कि वह बहुत नीच था नहीं तो वह आधा चूज़ा सबके साथ मिल कर रहता।

एक बार वह आधा मुर्गा खेतों से मुर्गीखाने में आया और अपनी मॉ से बोला — "मॉ, मैं इस मुर्गीखाने और यहॉ की हर चीज़ से थक गया हूँ सो मैं मैड्रिड[47] जा रहा हूँ राजा के पास, उसके महल में रहने के लिये।

मेरे जैसे खास मुर्गे को खास जगह पर ही रहना चाहिये। तुम देखना कि एक दिन मैं इतना बड़ा हो जाऊँगा कि सब मेरे नीचे होंगे।"

उसकी मॉ बोली — "बेटे, तुम मैड्रिड नहीं जा सकते। मैड्रिड बहुत दूर है। तुम्हारे केवल एक ही टॉग है और एक ही पंख है। तुम वहॉ तक जाते जाते थक जाओगे।"

हालॉकि उसके भाई बहनों को यह सब बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था जैसा कि वह कर रहा था पर फिर भी उन्होंने उससे रुक जाने के लिये कहा और उनकी अन्दर से भी यही इच्छा थी कि उसको कोई नुकसान न पहुँचे।

[47] Madrid is the capital of Spain where its King and Queen also live.

पर वह आधा मुर्गा तो किसी की सुन ही नहीं रहा था। वह बोला — "देखना, मैं किसी दिन तुम सबको महल में बुला लूँगा।" और वह अपनी एक टॉग पर कूदता हुआ और अपना एक पंख फड़फड़ाता हुआ वहॉ से चल दिया।

पीछे से उसकी मॉ चिल्लायी — "सबके साथ अच्छी तरह से रहना बेटे।"

पर जैसी कि उसकी आदत थी वह तो अपने आप में ही खोया रहता था और इस समय तो वह वैसे भी जल्दी में था। उसने तो पीछे मुड़ कर बाई बाई कहने की भी चिन्ता नहीं की।

चलते चलते वह एक छोटे नाले के पास से गुजरा। उस नाले में बहुत सारी घास और पानी के पौधे उग आये थे जिससे उसके पानी का बहाव कुछ रुक सा गया था।

उस नाले का पानी बोला — "ओ आधे मुर्गे, क्या तुम मेहरबानी कर के मेरे अन्दर से ये घास और पौधे बाहर निकाल दोगे ताकि में ठीक से बह सकूँ? मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। अगर तुम आज मेरी सहायता करोगे तो किसी दिन मैं भी तुम्हारी सहायता करूँगा।"

आधा मुर्गा बोला — "मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहायता में अपना समय बरबाद नहीं कर सकता। मैं तो राजा को मिलने के लिये मैड्रिड जा रहा हूँ। तुम यह सब कूड़ा अपने आप ही निकाल लो।"

और वह चलता चला गया कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ राजा को देखने के लिये।

कुछ देर बाद वह एक आग के पास आ पहुँचा जिसको कैम्प लगाने वाले जंगल में जलता छोड़ गये थे। वह अब बहुत धीरे धीरे जल रही थी और बस अब बुझने ही वाली थी।

उसने आधे मुर्गे को वहाँ से जाते देखा तो चिल्लायी — "ओ आधे मुर्गे, मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। क्या तुम मेरे अन्दर कुछ लकड़ियाँ नहीं डालोगे?

अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं बुझ जाऊँगी। और अगर तुम कुछ लकड़ी मेरे अन्दर डाल दोगे तो मैं किसी दिन तुम्हारे काम आऊँगी।"

आधा मुर्गा बोला — "मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहायता में अपना समय बरबाद नहीं कर सकता। मैं तो राजा से मिलने के लिये मैड्रिड जा रहा हूँ। तुम अपने लिये लकड़ियाँ अपने आप इकट्ठी कर लो।"

और वह चला गया कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ राजा को देखने के लिये। उसके बाद चलते चलते वह एक पेड़ के पास आ पहुँचा। आधे मुर्गे ने उसमें से आती हुई एक कराह की आवाज सुनी।

जब उसने ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि हवा उस पेड़ की शाखाओं में उलझ कर रह गयी है।

हवा बोली — "ओ आधे मुर्गे, मैं यहाँ इस पेड़ की शाखाओं में अटक गयी हूँ। मेहरबानी कर के यहाँ ऊपर आ कर इन शाखाओं को ज़रा हटा दो ताकि मैं यहाँ से निकल जाऊँ। इसके बदले में मैं एक दिन तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

आधा मुर्गा बोला — "मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहायता में अपना समय बर्बाद नहीं कर सकता। मैं तो राजा से मिलने के लिये मैड्रिड जा रहा हूँ। तुम ये शाखाएँ अपने आप हटा लो।"

और वह चला गया कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ राजा से मिलने के लिये।

आखिर वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ से वह स्पेन की राजधानी मेड्रिड देख सकता था।

उसको देख कर वह बोला — "यही मेरी जगह है। मैं यहाँ से ऊँचा खड़ा हो कर इस शहर को रोज देखूँगा न कि उस बेवकूफ मुर्गीखाने में कूदता रहूँगा। मुझे मालूम है कि राजा मुझे देख कर बहुत खुश होगा।"

वह कूदा, उसने अपने पंख फड़फड़ाये और शहर के दरवाजे में घुसा। शहर में घुस कर उसने बहुत सारी बहुत शानदार इमारतें देखीं और बहुत सारे सुन्दर सुन्दर घर देखे।

वह कूदता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ एक सबसे सुन्दर घर के पास आया। उस घर के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार थी

जिस पर मीनारें लगी हुई थीं। उन मीनारों पर पहरेदार खड़े थे जो वहॉ से सारे शहर को देख रहे थे।

उस दरवाजे के अन्दर लकड़ी के दो दरवाजे और थे जिन पर सिपाही खड़े पहरा दे रहे थे।

आधे मुर्गे ने सोचा — "यही राजा का महल होगा।" और यह सोच कर वह कूदता और अपना पंख फड़फड़ाता हुआ उन दरवाजों के पहरेदार सिपाहियों के पास जा पहुॅचा।

वह उनसे बोला — "एक तरफ हटो और महल का दरवाजा खोलो। मैं यहॉ राजा से मिलने आया हूॅ। वह मुझको बहुत बड़ा ओहदा देगा और बहुत जल्दी ही तुम सब मेरे नीचे काम करने वाले हो।"

यह सुन कर सारे पहरेदार इस जिद्दी आधे मुर्गे पर ज़ोर से हॅस पड़े।

वह आधा मुर्गा महल के दरवाजे के सामने आगे पीछे कूदता और अपना एक पंख फड़फड़ा कर कहता रहा — "राजा मुझसे बहुत जल्दी ही मिलना चाहता है, मुझे अन्दर जाने दो। वह दिन बहुत जल्दी ही आने वाला है जब तुम सब मेरे नीचे होगे और मेरा हुक्म मानोगे।"

तभी किसी ने महल की खिड़की से झॉका और आधे मुर्गे को महल के दरवाजे के सामने कूदते और अपना पंख फड़फड़ाते हुए देखा तो वह ज़ोर से चिल्लाया — "जल्दी। इस आधे मुर्गे को जल्दी

महल में आने दो। राजा ऐसे ही मुर्गे की तलाश में है और वह उससे मिलना चाहता है।"

सिपाहियों ने उस आधे मुर्गे के सामने सिर झुकाया और वह आधा मुर्गा ऊपर तक उड़ कर उनके ऊपर चिल्लाया — "मैंने तुमसे कहा था न कि मैं बहुत ही खास हूँ। तुमने सुना न कि राजा मुझे ढूँढ रहा है और मुझसे अभी अभी मिलना चाहता है। सो जल्दी से दरवाजा खोलो मैं तुम लोगों के ऊपर राज करने वाला हूँ।"

सो पहरेदारों ने उसके लिये महल का दरवाजा खोल दिया और वह कूदता और अपना पंख फड़फड़ाता हुआ अन्दर घुस गया।

जैसे ही वह अन्दर घुसा तो उसने एक आदमी को खुली बाँहों और बड़ी सी मुस्कुराहट लिये अपनी तरफ आते देखा।

वह आदमी बोला — "आओ, आओ। तुम्हारा यहाँ स्वागत है। राजा तुमसे अभी अभी मिलना चाहते हैं।" कह कर उसने उस आधे मुर्गे को अपनी बाँहों में उठा लिया और उसे रसोई की तरफ ले चला।

उसने कहा — "राजा ने आज शाम के खाने में मुर्गे का सूप खाने की इच्छा प्रगट की है और मैं राजा का रसोइया हूँ।"

कह कर उसने उस मुर्गे को पानी से भरे एक बर्तन में डाल कर आग पर रख दिया ताकि उसको पकाने से पहले उसकी खाल मुलायम हो जाये और वह उसके पंख आसानी से निकाल सके।

पानी ठंडा था उससे उसके पंख उसके शरीर से चिपक गये। आधा मुर्गा चिल्लाया — "ओ पानी, मुझे इस तरह से भिगोना छोड़ो। तुम मुझे बहुत परेशान कर रहे हो। मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।"

पानी बोला — "मैं जब उस छोटे नाले में बह रहा था और मैंने तुमसे अपनी घास निकालने के लिये कहा था जो मेरे बहाव को रोक रही थी तब तुमने मेरी घास निकालने से मना कर दिया था और तुमने मेरी कोई सहायता नहीं की थी।

और जब मैंने तुमसे कहा कि एक दिन मैं तुम्हारी सहायता करूँगा तब तुमने कहा था कि तुमको मेरी सहायता की जरूरत नहीं है सो अब तुम अपनी सहायता अपने आप करो।

अब जब तुम्हारे साथ यह सब हो रहा है तो अब तुमको अपने आस पास के लोगों के साथ खराब बर्ताव करने की सजा मिल रही है। भुगतो।"

वह पानी का बर्तन आग पर रखा था सो कुछ ही देर में पानी गर्म होने लगा और पानी की गर्मी उस आधे मुर्गे के शरीर को जलाने लगी। वह गर्म पानी के उस बर्तन में इधर से उधर कूदने लगा।

वह फिर चिल्लाया — "ओ आग, मेहरबानी कर के मुझे इतनी तकलीफ मत दो। तुम तो बहुत ही गर्म हो। मेहरबानी कर के मुझे जलाना बन्द करो।"

बर्तन के नीचे से आग बोली — "ओ आधे मुर्गे, क्या तुमको याद नहीं है जब मैं मर रही थी और मैंने तुमको अपनी सहायता के लिये पुकारा था?

तुमने कहा था कि तुम अपनी सहायता अपने आप कर लो। तुमने यह भी कहा था कि तुमको किसी की सहायता की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे लगता है कि किसी के साथ अच्छा बर्ताव न करने की तुम्हारी यही सजा है।"

तभी रसोइया वहॉ आया और उसने यह देखने के लिये बर्तन का ढक्कन उठाया कि मुर्गा उसके पंख निकालने और राजा का खाना बनाने के लायक हो गया कि नहीं।

देख कर वह बोला — "ओह, इस मुर्गे से तो बिल्कुल काम नहीं चलेगा।"

क्योंकि वह आधा मुर्गा तो जल गया था और छेद वाले पत्थर[48] जैसा हो गया था। वह तो पूरा का पूरा ही काला हो गया था। उसने उसको उठा कर महल की खिड़की से बाहर फेंक दिया।

हालॉकि वह आधा मुर्गा छेदों वाले पत्थर जैसा हो चुका था पर फिर भी वह इस लायक था जो वह हवा को पुकार सकता सो उसने हवा को पुकारा — "ओ हवा, मेहरबानी कर के मुझे जमीन पर गिरने और मरने से पहले ही पकड़ लो।"

[48] Translated for the words "Pumice stone" – it has many small holes and is very low in density that is why it can float on water.

हवा ने आधे मुर्गे की पुकार सुनी और उसको उठा लिया और महल की ऊँची दीवार पर ले गयी और बोली — "तुमने मेरी सहायता करने से मना कर दिया था जब मैं पेड़ की शाखाओं में फँस गयी थी।

तुमने मुझसे कहा था कि मैं अपनी सहायता अपने आप कर लूँ। और साथ में तुमने मुझसे यह भी कहा था कि तुमको किसी की सहायता की जरूरत नहीं है।

सो ऐसा लगता है कि तुम्हारी कहानी अब बदल गयी है। मुझे तुम्हारी सहायता नहीं करनी चाहिये थी पर तुम्हारी माँ, भाई और बहिन दुखी होते अगर मैं तुमको इतनी ऊपर से गिर जाने देती तो।"

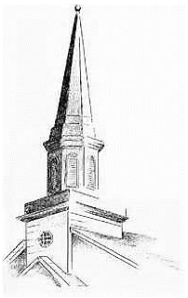

हवा फिर उस आधे मुर्गे को शहर के सबसे ऊँचे चर्च पर ले गयी और वहाँ उस चर्च के कास के ऊपर[49] बिठा कर बोली — "तुमने एक बार कहा था कि तुम सबको नीचे देखोगे और तुम सबके ऊपर होगे।

सो आज तुम्हारी वह इच्छा पूरी हुई। दूसरे लोग तुमको हमेशा ऊपर की तरफ देखेंगे और मुस्कुरायेंगे कि अब तुम किसी को कोई दुख नहीं पहुँचा सकते।" कह कर हवा उसको उस कास के ऊपर बिठा कर चली गयी।

[49] Translated for the word "Steeple". See its picture above.

तुम लोग जब कभी मैड्रिड जाओगे तो वहाँ उस आधे मुर्गे को उस कास के ऊपर एक टॉग से बैठा पाओगे। अपनी एक ऑख से वह सबको नीचे देखता रहता है।

वह अभी भी अपने आपको बहुत ऊँचा समझता है पर हवा उसकी शान को अपने कन्ट्रोल में रखती है। वह जब चाहे उसको अपने ज़ोर से किधर भी घुमा देती है। आज हम उस आधे मुर्गे को हवा की दिशा बताने वाला कहते हैं।

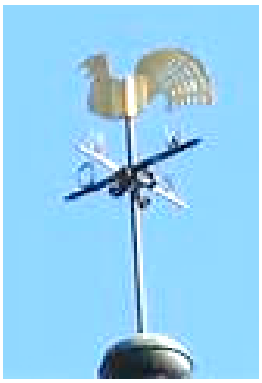

17 बादशाह के नये कपड़े[50]

यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह एक ऐसे बादशाह की कहानी है जिसको दो जुलाहों ने उसके हमेशा नये कपड़े पहनने के शौक की वजह से बेवकूफ बना दिया।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बादशाह था। उसको नये नये कपड़े पहनने का बहुत शौक था। उसका बहुत सारा पैसा अच्छे अच्छे कपड़े खरीदने पर खर्च हो जाता था।

वह अपने सिपाहियों की भी कोई परवाह नहीं करता था – जब वे थियेटर जा रहे होते या फिर जब वे उसकी गाड़ी के साथ जा रहे होते तो बस वह हर समय अपने नये कपड़े ही उनको दिखाना चाहता था।

उसके पास दिन के चौबीस घंटों में बदलने के लिये चौबीस कोट थे। जैसा कि बादशाहों के लिये कहा जाना चाहिये कि "बादशाह अपने दरबार में बैठे हैं।" इस बादशाह के बारे में यह कहा जाता था कि "बादशाह अपने तैयार होने वाले कमरे में है।"

---

[50] The Emperor's New Clothes – a fairy tale from Spain, Europe.
By Hans Christian Andersen, based on "Conde Lucanor", 1335 – a medieval collection of 51 tales collected from various sources by Juan Manuel, Prince of Villena. Hans Andersen did not know Spanish but read this tale in a German translation. This tale taken from the Web Site : http://www.andersen.sdu.dk/vaerk/hersholt/TheEmperorsNewClothes_e.html
Collected by Hans Christian Andersen. Translated in English by Jean Hersholt

उसके शहर में ज़िन्दगी हमेशा ही रंगीन रहती थी। वहॉ रोज ही बहुत सारे लोग बाहर से आते थे। एक दिन वहॉ दो जुलाहे आये जो यह दावा करते थे कि वे दुनियॉ का सबसे अच्छा कपड़ा बुन सकते थे।

उनके कपड़े के न केवल रंग और डिजाइन असाधारण रूप से बढ़िया थे बल्कि उनके बनाये इस कपड़े के कपड़े पहन कर वह आदमी भी लोगों की नजरों से छिप सकता था जो अपने दफ्तर में बैठने के लायक न हो या फिर बिल्कुल ही बेवकूफ हो।

यह सुन कर बादशाह ने सोचा "ऐसे कपड़े मेरे लिये बहुत अच्छे रहेंगे। अगर मैं उनको पहन लूँगा तो मैं अपने सब काम करने वालों से छिप कर उनके ऊपर नजर रख सकूँगा कि वे अपनी जगह के लायक हैं या नहीं और अपना काम ठीक से कर रहे हैं या नहीं।

इसके अलावा मैं अक्लमन्दों को बेवकूफों से भी अलग कर सकूँगा। इसलिये मुझे तुरन्त ही उन जुलाहों को बुला कर अपने लिये उनसे वैसे कपड़े बनवाने चाहिये।"

सो उसने उन जुलाहों को बुलवाया और उनको उनका काम शुरू करने के लिये काफी सारा पैसा दिया। उन्होंने भी दो खड्डियॉ[51] लगायीं और अपना काम शुरू करने का बहाना किया हालॉकि उनकी खड्डियों पर कुछ भी नहीं था।

[51] Translated for the word "Loom" – Machines by which one weaves the cloth. See its picture above.

जो भी सबसे अच्छा रेशम का धागा और पुराना धागा उन्होंने बादशाह के कपड़े बनाने के लिये बादशाह से माँगा था वह सब तो उन्होंने अपने थैलों में रख लिया। और वे रात भर उन खाली खड्डियों पर ही काम करते रहे।

इस बीच बादशाह ने सोचा "चलो, मैं ज़रा देख कर आता हूँ कि ये जुलाहे कैसा काम कर रहे हैं।" पर उसको वहाँ जाते में थोड़ा अजीब सा लगा क्योंकि जुलाहों ने कहा था कि जो लोग अपना काम करने के लायक नहीं हैं वे उस कपड़े को नहीं देख सकते।

और यह तो हो ही नहीं सकता था कि वह इस बात के लिये अपने ऊपर शक करता कि वह अपना काम करने लायक नहीं है पर फिर भी उसने सोचा कि यह देखने के लिये वहाँ कैसा चल रहा है उसको किसी और को तो वहाँ भेजना ही चाहिये।

सारे शहर में उस कपड़े की खासियत की बात फैल चुकी थी और सारे लोग इस बात को जानने के लिये उत्सुक थे कि उन सबके पड़ोसी कितने बेवकूफ थे।

बादशाह ने सोचा "मैं अपने सबसे ईमानदार बूढ़े मन्त्री को उन जुलाहों के पास भेजता हूँ। वही सबसे अच्छा आदमी रहेगा जो मुझे यह बता पायेगा कि वह कपड़ा कैसा है। वही एक समझदार आदमी भी है और वह अपना काम भी ठीक से करता है।"

सो बादशाह ने अपने मन्त्री को बुलाया और उसको उन जुलाहों के पास यह देखने के लिये भेजा कि "जाओ ज़रा देख कर आओ कि वे लोग कैसा कपड़ा बुन रहे हैं।"

वह बूढ़ा ईमानदार मन्त्री वहॉ गया जहॉ वे दानों जुलाहे अपनी खाली खड्डी पर कपड़ा बुन रहे थे। उसने वहॉ जा कर जो कुछ देखा तो उसकी ऑखें तो खुली की खुली रह गयीं।

उसके मुँह से निकला — "हे भगवान मेरी सहायता करो। मुझे तो यहॉ कुछ भी नही दिखायी नहीं दे रहा। मैं क्या करूँ।" पर वह यह बात कह तो नहीं सकता था।

जब उन दोनों जुलाहों ने मन्त्री जी को आते देखा तो उनका स्वागत किया और उनको अपनी खड्डी के पास ले जा कर उस कपड़े के रंग और डिजाइन को देखने की प्रार्थना की। और ऐसा कहते हुए उन्होंने अपनी खाली खड्डी की तरफ इशारा किया।

मन्त्री ने उस खड्डी में कपड़ा देखने की बहुत कोशिश की पर उसे तो वहॉ कुछ भी दिखायी नहीं दिया। दिखायी कैसे देता। अगर वहॉ कुछ होता तब तो दिखायी देता न।

"हे भगवान मुझ पर दया करो। क्या मैं इतना बेवकूफ हूँ? मुझे तो ऐसा कभी लगा ही नहीं कि मैं इतना बेवकूफ हूँ। और अब यह बात तो किसी को मालूम भी नहीं होनी चाहिये। क्या मैं मन्त्री होने के लायक भी नहीं हूँ? पर मैं यह बात किसी को बता भी नहीं सकता कि मुझे कपड़ा दिखायी नहीं दे रहा।"

यही सोच कर मन्त्री कुछ देर तो चुप खड़ा रहा। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे।

तभी उसके मन को भॉप कर उन जुलाहों में से एक जुलाहा बोला — "मन्त्री जी, आप हमको यह बताने में हिचकिये नहीं कि आपको यह कपड़ा कैसा लगा।"

मन्त्री जैसे सोते से जागा और अपने चश्मे में से झॉकते हुए बोला — "हॉ हॉ, यह कपड़ा तो बहुत सुन्दर है। इसका रंग और डिजाइन दोनों ही बहुत सुन्दर हैं। मैं बादशाह को जा कर यह जरूर बताऊॅगा कि इस कपड़े को देख कर आज मुझे कितनी खुशी हो रही है।"

जुलाहे भी यह सुन कर बहुत खुश हुए और बोले — "हमें भी यह सुन कर बहुत खुशी हुई जनाब कि आपको यह कपड़ा पसन्द आया।" फिर उन्होंने मन्त्री जी को उस कपड़े में लगे रंगों के नाम और उसके डिजाइन के बारे में बताया।

मन्त्री जी ने उनकी बातें बहुत ध्यान से सुनी ताकि वे सब बातें बादशाह को बता सकें और उन्होंने फिर ऐसा ही किया।

जुलाहों ने जब देखा कि मन्त्री जी उनके काम से सन्तुष्ट हैं तो उन्होंने उनसे और पैसे, और रेशम और और सोने का धागा मॉगा ताकि वे अपना काम जारी रख सकें।

मन्त्री जी ने उस सबका इन्तजाम कर दिया पर वह सब भी उनकी जेबों में गया। एक धागा भी खड्डी पर नहीं चढ़ा। क्योंकि

कपड़ा तो वे कोई बुन ही नहीं रहे थे। हॉ, दिखाने के लिये वे बड़ी मेहनत से काम जरूर कर रहे थे।

मन्त्री से कपड़े के बारे में जानने के बाद बादशाह ने फिर से अपने एक और विश्वास के आदमी को वहॉ भेजने का निश्चय किया कि वह देख कर आये कि वहॉ काम कैसा चल रहा है और अब उनका काम खत्म होने में कितनी देर है।

उसके साथ भी वही हुआ जो मन्त्री जी के साथ हुआ था। उसने भी बहुत ऑखें फाड़ फाड़ कर देखा पर उसको भी कहीं कुछ दिखायी नहीं दिया। क्योंकि वहॉ कुछ था ही नहीं।

जुलाहों ने उस कपड़े के रंग और डिजाइन बताते हुए उससे भी वही कहा जो उन्होंने मन्त्री जी से कहा था और फिर उससे पूछा — "क्या यह सुन्दर नहीं है?"

उस आदमी ने भी यही सोचा कि "मैं बेवकूफ तो नहीं हूॅ इसका मतलब यह है कि मैं अपना काम ठीक से नहीं कर पा रहा हूॅ तभी तो मुझे यह कपड़ा दिखायी नहीं दे रहा।

पर यह भी तो बड़ी अजीब सी बात है कि मैं बेवकूफ न होते हुए भी अपना काम ठीक से नहीं कर पा रहा। पर यह बात किसी को मालूम नहीं होनी चाहिये।"

सो उसने उस कपड़े की तारीफ करनी शुरू कर दी जो उसको दिखायी ही नहीं दे रहा था। उसने कहा कि वह उस कपड़े के सुन्दर रंग और बढ़िया डिजाइन देख कर बहुत खुश था।

उसने बादशाह से भी जा कर यही कहा — "मैं तो वह कपड़ा देख कर भौंचक्का रह गया। वह कपड़ा तो बहुत ही सुन्दर था।"

अब क्या था सारे शहर में उन जुलाहों के उस बढ़िया कपड़े का ही जिक्र होने लगा। बादशाह ने भी जब उस कपड़े की इतनी तारीफ सुनी तो उसको सुन कर उस कपड़े को खुद अपनी आखों से उसी समय देखना चाहा जबकि वह बुना जा रहा था।

बस उसने अपने कुछ बाजे वाले अपने साथ लिये और वे दोनों आदमी साथ लिये जो पहले ही आ कर वहॉ वह कपड़ा देख गये थे और चल दिया जुलाहों के पास कपड़ा देखने के लिये।

उसने भी वही देखा जो पहले दो आदमियों ने देखा था कि खड्डी में कोई धागा नहीं था और जुलाहे बड़ी मेहनत से काम कर रहे थे।

इससे पहले कि बादशाह कुछ कहते वे दोनों जुलाहे खाली खड्डियों की तरफ देख कर और उसकी तरफ इशारा कर के बोले — "बढ़िया बढ़िया, बहुत ही बढ़िया। ज़रा देखिये तो हुजूर, कितने सुन्दर रंग हैं और कितना सुन्दर डिजाइन है।"

बादशाह ने उस खाली खड्डी को देख कर सोचा — "या तो यह खड्डी ही खाली है या फिर मैं बेवकूफ हूँ और या फिर मैं बादशाह बनने के काबिल नहीं हूँ?" पर उसका मन इन तीनों बातों में से किसी बात को भी मानने के लिये तैयार नहीं था।

फिर भी वह खाली खड्डी की तरफ देख कर बोला — "अरे यह तो बहुत सुन्दर है। मैं इस कपड़े की बहुत तारीफ करता हूँ।"

इस समय कोई भी उससे वहाँ यह नहीं कहला सकता था कि उसको वहाँ कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

सारे लोग वहाँ खड़े खड़े यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि शायद उन्हें कहीं कुछ दिखायी दे जाये पर किसी को एक दूसरे से कुछ भी ज़्यादा दिखायी नहीं दिया पर कोई किसी से कुछ कहने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा था।

पर सब बादशाह की हाँ में हाँ मिलाते हुए बोले — "ओह, यह कपड़ा तो बहुत ही सुन्दर है।"

फिर उन्होंने बादशाह को सलाह दी कि अगली बार जब उसका जुलूस निकले तो उसको उसी कपड़े की बनी हुई पोशाक पहननी चाहिये। चारों तरफ से "बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, बहुत सुन्दर" की आवाजें आ रहीं थी।

उन दोनों जुलाहों के काम से खुश हो कर बादशाह ने दोनों जुलाहों को एक एक कास दिया जो वे अपने सामने के बटन के छेद में लगा सकते थे और "सर जुलाहा" का टाइटिल दिया।

बादशाह का जुलूस निकलने वाले दिन से पहले वाले दिन दोनों जुलाहों ने सारी रात अपनी खड्डियों के सामने बैठे बैठे छह मोमबत्तियाँ फूँक दीं बस यह दिखाने के लिये वे बादशाह के कपड़े बनाने के लिये आखिरी रात में कितना ज़्यादा काम कर रहे थे।

वे दिखा रहे थे कि उन्होंने खड्डी से कपड़ा निकाला, उसको काटा और फिर सिला। उसके बाद वे बोले — "अब बादशाह के कपड़े तैयार हैं।"

बादशाह खुद अपने कुछ कुलीन लोगों को साथ ले कर अपनी पोशाक लेने के लिये वहॉ आया। दोनों जुलाहों ने अपनी अपनी बॉहें ऐसे उठायीं जैसे वे कोई पोशाक पकड़े हों और बोले — "यह आपका पाजामा है, यह आपका कोट है और यह आपका ऊपर ओढ़ने वाला शाल है।

ये सब इतने हल्के हैं जितना कि मकड़ी का जाला होता है। कोई भी इनको पहन कर यह सोच सकता है कि उसने कुछ भी नहीं पहना हुआ। यही इन कपड़ों की खासियत है और इनकी यही खासियत इन कपड़ों को बहुत बढ़िया और नाजुक बनाती है।"

सारे कुलीन लोगों ने अपना सिर हिला कर जुलाहों की बातों में हॉ में हॉ मिलायी हालॉकि उनको अभी भी कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। पर दिखायी भी कैसे देता अगर वहॉ कुछ होता तब तो उनको दिखायी देता न।

जुलाहों ने फिर कहा — "अगर बादशाह सलामत अपने कपड़े उतार दें तो हम उनको इस लम्बे शीशे के सामने खड़ा कर के इन नये कपड़ों को पहनने में उनकी सहायता कर सकते हैं।"

बादशाह ने अपने कपड़े उतार दिये और जुलाहों ने उनको एक के बाद एक नये कपड़े पहनाने का नाटक किया। उन्होंने यह नाटक

भी किया जैसे कि वे उनकी कमर में कुछ बॉध रहे हों। बादशाह ने शीशे में घूम घूम कर अपने कपड़े देखने की लाख कोशिश भी की पर... ।

सब तरफ से आवाजें आ रही थीं — "ओह हुजूर, आपके ये नये कपड़े कितने अच्छे लग रहे हैं। इनका डिजाइन कितना सुन्दर है। और इनका रंग तो हुजूर पर बहुत ही अच्छा लग रहा है। यह तो बहुत ही शानदार पोशाक है।"

उसी समय जुलूस के मन्त्री ने आ कर कहा — "बादशाह की सवारी उनके जुलूस के लिये बाहर इन्तजार कर रही है।"

बादशाह बोले — "मैं तो तैयार हूँ।" और यह कह कर उन्होंने एक बार फिर से अपने आपको शीशे में देखा।

बादशाह शीशे में देख कर बोले — "इस पोशाक की फिटिंग कितनी अच्छी है।" उनको अपनी वह नयी पोशाक बहुत अच्छी लग रही थी।

कुलीन लोग जो उनका शाल उठाने वाले थे उन्होंने काफी नीचे झुक कर उनका वह शाल उठाया। जब वे उसे उठाने का नाटक कर रहे थे तब किसी की यह हिम्मत नहीं हुई कि कोई यह कह सकता कि उसने तो कुछ भी नहीं पकड़ा हुआ था।

बादशाह अपने जुलूस के लिये चले। उनकी गाड़ी पर शानदार छत्र सजा हुआ था। शहर की हर सड़क से और हर खिड़की से बस यही आवाजें आ रही थीं — "ओह बादशाह के कपड़े कितने अच्छे

हैं। कितनी अच्छी तरह से वे उनके ऊपर फिट हैं। और उनके शाल का पीछे वाला हिस्सा तो देखो कितना सुन्दर है।"

पर कोई यह नहीं कह रहा था कि उसे बादशाह के शरीर पर कोई कपड़ा दिखायी नहीं दे रहा था क्योंकि इससे या तो यह साबित होता कि वह अपने पद के लायक नहीं था और या फिर बेवकूफ था। इससे पहले बादशाह की किसी पोशाक की इतनी तारीफ कभी नहीं हुई।

पर तभी एक बच्चा बोला — "अरे बादशाह ने तो कुछ भी नहीं पहना हुआ?"

उस बच्चे के पिता ने कहा — "क्या पहले कभी किसी ने इतना भोला वाक्य सुना है?"

तभी एक और आदमी बोला — "अरे तुमने सुना? एक बच्चे ने कहा कि बादशाह ने कुछ नहीं पहना हुआ।"

और बस फिर क्या था सारी भीड़ चिल्ला पड़ी — "बादशाह ने तो कुछ भी नहीं पहना हुआ।"

बादशाह तो यह सुन कर कॉप गया क्योंकि उसको भी यही शक था कि उसने कुछ नहीं पहना हुआ और वे सच कह रहे थे।

पर उसने सोचा कि यह जुलूस तो पूरा होना ही चाहिये सो वह और अकड़ कर खड़ा हो गया। और उसके शाल पकड़ने वालों ने उसका शाल और ऊँचा पकड़ लिया जो वहॉ था ही नहीं।

18 तीन सुनहरे सन्तरे[52]

यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

डूबता हुआ सूरज अपना सुनहरा साया एक सादे से कलई किये गये मकान पर पड़ रहा था कि उस समय तीन भाई सैनटियागो, टोमस और मैटियास[53] खेतों से अपने घर की तरफ लौट रहे थे।

दोनों बड़े भाई आगे आगे जल्दी जल्दी चल रहे थे क्योंकि उनके पास ले जाने के लिये कोई बोझा नहीं था और उनका छोटा भाई उनके पीछे धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि उसके कन्धे पर गेंहू की बालियॉ रखी हुई थीं।

जब वे तीनों घर पहुँचे तो उनकी मॉ सैरा ने कहा — "बैठ जाओ बेटे और थोड़ा आराम कर लो। मैं तुम तीनों से कुछ बात करना चाहती हूँ।"

जब वे थोड़ी देर आराम कर चुके तो वह बोली — "मैं अब दादी बनना चाहती हूँ। इसलिये मैंने तय कर लिया है कि अब समय आ गया है जबकि तुम्हारे लिये लड़कियॉ ढूँढी जायें ताकि तुम लोग

[52] The Three Golden Oranges – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the book : "The Three Golden Oranges", by Almaflor Ada. NY, Atheneum Books for Young Readers. 1999. unnumbered 30 pages. A 1-story picture book.

[53] Santiago, Tomas and Matias – names of the three brothers

अपना परिवार शुरू कर सको। इसलिये तुम लोग अपने लिये तुरन्त ही लड़कियॉ ढूँढना शुरू कर दो।"

तीनों भाइयों ने कुछ सोचते हुए एक दूसरे की तरफ देखा। वे जानते थे कि सारी घाटी में जो पहाड़ों से ले कर समुद्र तक फैली हुई थी एक भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसकी शादी न हुई हो।

जब वे अगले दिन खेतों पर गये तब भी यह मामला उनके दिमाग में घूम रहा था। मैटियास बोला — "क्यों न हम चल कर उस बुढ़िया से पूछें जो समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी पर रहती है।"

मैटियास के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसके भाई उसकी कही बात पर राजी हो गये क्योंकि वे तो कभी उसकी बात सुनते भी नहीं थे।

तीनों भाई उस पहाड़ी पर जाने वाले तंग रास्ते पर चढ़ते चले गये जहॉ से समुद्र दिखायी देता था। वह बुढ़िया अपनी गुफा के सामने जहॉ वह रहती थी बैठी बैठी ऊन कात रही थी।

उसने अपना काम जारी रखते हुए उन भाइयों से पूछा — "कैसे आये हो?"

मैटियास ने सादे और नम्र तरीके से उसको बताया — "हम शादी करना चाहते हैं और इस बारे में हम आपसे सलाह लेने आये हैं।"

बुढ़िया ने पूछा — "और तुमको कैसी पत्नियॉ चाहिये?"

सैनटियागो तुरन्त बोला — "मुझको बहुत सुन्दर लड़की चाहिये।"

टोमस भी तुरन्त बोला — "मुझे ऐसी लड़की चाहिये जो अमीर हो और सुन्दर हो।"

बुढ़िया ने देखा कि मैटियास कुछ नहीं बोला तो उसने उसकी तरफ मुँह कर के पूछा — "और तुम्हें?"

मैटियास बोला — "मुझे तो एक ऐसी जवान लड़की चाहिये जो दयालु हो खुशमिजाज हो और ऐसी हो जिसको मैं बहुत प्यार कर सकूँ।"

बुढ़िया जवाब में बोली — "तुममें से हर एक को तुम्हारी पसन्द की लड़की मिल जायेगी पर तुम लोगों को इसके लिये एक साथ काम करना पड़ेगा।"

फिर वह एक नंगी ढालू जमीन जिसकी चोटी बादलों में छिपी हुई थी की तरफ इशारा करते हुए बोली — "तीन दिन तक तुम लोग उस पहाड़ी की तरफ जाओगे। उस पहाड़ी के दूसरी तरफ एक किला है जो सन्तरे के बाग से घिरा हुआ है।

उसमें सारे सन्तरे अभी हरे होंगे पर उनमें से एक पेड़ पर केवल एक शाख पर तुमको तीन सुनहरे सन्तरे लटके दिखायी देंगे।

वे तीनों सन्तरे तुम शाख को बिना कोई नुकसान पहुँचाये तोड़ लेना और तोड़ कर उनको

मेरे पास ले आना तो तुमको अपनी अपनी पसन्द की पत्नियॉ मिल जायेंगी। पर याद रखना अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो पछताओगे।"

तीनों भाई अगले दिन के सफर की तैयारी करने के लिये जल्दी ही घर लौट आये। अगले दिन उन सबने अपनी अपनी जेबें गिरियों, खजूरों और डबल रोटियों[54] से भरीं और अपने सफर पर चल दिये।

वे सारे दिन चले। जब रात हुई तो रात काटने के लिये वे एक अनाज रखने वाली जगह में रुक गये। वहॉ वे एक भूसे का बिस्तर बना कर सो गये।

पर थोड़ी ही देर में सैनटियागो चॉद की एक किरन के अन्दर आने से जाग गया। वह किरन उस अनाजघर के दरबाजे से हो कर अनाजघर में आ रही थी।

उसने अपने आपसे पूछा — "मैं यहॉ अपने भाइयों के साथ अपना समय क्यों बर्बाद कर रहा हूँ? जब हमको सन्तरे मिलेंगे तो शायद हम लोग उनमें से सबसे अच्छा सन्तरा लेने के लिये लड़ें।

अगर मैं वहॉ सबसे पहले पहुँच जाता हूँ तो मैं उनमें से जो भी मुझे सबसे अच्छा सन्तरा लगेगा मैं वह सन्तरा ले लूँगा। फिर मेरे भाई लोग उन दो सन्तरों के ऊपर लड़ते रहें।"

[54] Nuts (see their picture above), dates and bread

यह सोच कर सैनटियागो उठा और सारी रात चलता रहा। तीसरे दिन सुबह सवेरे ही वह किले पर आ गया। तब तक सूरज की किरनें भी उस सन्तरे को बाग पर नहीं पड़ी थीं।

सन्तरे के सफेद फूल सुबह की रोशनी में चमक रहे थे। और जैसा उस बूढी स्त्री ने कहा था सारे सन्तरे अभी भी हरे थे।

सैनटियागो उन सुनहरे सन्तरों की खोज में लग गया। तभी एक पेड़ की सुनहरी चमक ने उसका ध्यान खींचा जो किले के दरवाजे के पास लगा था।

वे तीनों सन्तरे पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर असली सोने के सन्तरों की तरह चमक रहे थे। यह शाख बहुत ऊँची थी वह उस शाख तक नहीं पहुँच सकता था पर वह उनको छोड़ने वाला भी नहीं था।

उसने पेड़ को पकड़ा और यह देखने की कोशिश की कि वह उसको हिला कर वे सन्तरे तोड़ सकता था कि नहीं। पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसका तो हाथ ही उस पेड़ के तने से चिपक गया। वह तो वहाँ फँस गया था।

उसी समय किले में से निकल कर एक बूढ़ा बहुत सारे चौकीदारों के साथ वहाँ आया। उसने अपनी जादू की छड़ी उस पेड़ से धीरे से छुआई और सैनटियागो को पेड़ से छुड़ा दिया। पर फिर उसको तुरन्त ही उन चौकीदारों ने पकड़ लिया और एक तहखाने में डाल दिया।

उस तहखाने से सैनटियागो ने सुना कि वह बूढ़ा अपने आपसे रो रो कर कह रहा था — "ओ मेरी प्यारी पत्नी, मेरी कीमती बेटियॉ। तुम कब तक इस तरह से कैद रहोगी?"

उधर अगले दिन टोमस और मैटियास सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि सैनटियागो तो उनको धोखा दे कर भाग गया था। वे उठ कर अपने सफर पर चल दिये। उस दिन शाम को रात को ठहरने के लिये उनको पहाड़ी के एक तरफ एक गुफा मिली सो वे लोग वहीं ठहर गये।

जब मैटियास सो गया तो टोमस दबे पॉव उठा और यह सोच कर वहॉ से चल दिया — "सैनटियागो तो पहले ही चला गया है पर मैं उसको पकड़ लूँगा। मैं इस बेवकूफ मैटियास को यहीं छोड़ जाऊँगा फिर यह जो चाहे करे।"

तीसरे दिन दोपहर को टोमस किले पर पहुँच गया पर उसको सैनटियागो वहॉ कहीं नहीं दिखायी दिया। टोमस को वहॉ की सन्तरों की खुशबू बहुत ही अच्छी लगी।

उसने भी देखा कि जैसा कि उस बुढ़िया ने कहा था अभी सारे सन्तरे कच्चे थे। तभी उसकी निगाह किले के दरवाजे के पास लगे एक पेड़ पर पड़ी जिससे रोशनी निकल कर आ रही थी। वह उधर ही खिंचा चला गया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि वह रोशनी तो उस पेड़ पर लगे तीन सुनहरी सन्तरों में से आ रही थी। उन सुनहरे सन्तरों को देख

कर तो वह पागल सा हो गया और पेड़ की तरफ लपका। जैसे ही वह पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ से लिपटा उसका सारा शरीर पेड़ से चिपक गया और वह तो हिल भी नहीं सका।

कुछ पल बाद ही वह पहले वाला बूढ़ा फिर वहॉ अपने चौकीदारों के साथ आया और अपनी जादू की छड़ी टोमस के शरीर से छुआ कर उसको पेड़ पर से छुड़ा लिया।

उसके चौकीदारों ने उसको भी ले जा कर उसी तहखाने में डाल दिया जहॉ उसका बड़ा भाई सैनटियागो पड़ा हुआ था।

इस बार दोनों ने उस बूढ़े को रोते हुए सुना — "ओ मेरी पत्नी, ओ मेरी कीमती बेटियों। एक भयानक जादूगर ने तुमको इस तरह कैद कर रखा है। कब आजाद होगी तुम?"

उधर अगले दिन जब मैटियास सो कर उठा तो उसने देखा कि टोमस भी उसको छोड़ कर भाग गया है। उसने सोचा कि अब उसको जल्दी करनी चाहिये क्योंकि उस समुद्र के किनारे वाली बुढ़िया ने कहा था कि सबको साथ साथ रहना है।

फिर भी किले पर पहुॅचते पहुॅचते उसको तीसरे दिन का तीसरा पहर हो गया। उसको भी सन्तरों के फूलों की खुशबू आयी तो उनका पीछा करते करते वह भी उन सुनहरे सन्तरों के पेड़ के सामने आ पहुॅचा।

उसने सोचा कि उसको वे सन्तरे जल्दी से तोड़ लेने चाहिये और फिर उसको अपने भाइयों को ढूॅढना चाहिये। वह सन्तरे तोड़ने के

लिये उछला और उछल कर वह शाख पकड़ ली जिस पर सन्तरे लगे हुए थे।

उसके पकड़ने से वह शाख टूट गयी और पेड़ चिल्ला उठा। उस पेड़ के चिल्लाते ही वह बूढ़ा आदमी अपने कई चौकीदारों के साथ एक बार फिर से बाहर आ गया।

वह बूढ़ा आदमी बोला — "तुमने तो सन्तरे पहले ही तोड़ लिये इसलिये अब मैं तुमको गिरफ्तार नहीं कर सकता।"

मैटियास ने पूछा — "मेरे भाई कहॉ हैं?"

बूढ़ा आदमी बोला — "ये सन्तरे सारे दरवाजे खोल देंगे। तुम केवल डबल रोटी और पानी ले लो और कुछ नहीं। और हॉ देखो इन सन्तरों को कोई नुकसान नहीं पहुॅचाना नहीं तो वे सारे दरवाजे बन्द हो जायेंगे।"

मैटियास किले की तरफ दौड़ा तो उस बूढ़े के कहे अनुसार किले के लोहे के भारी दरवाजे उसके आगे आगे अपने आप खुलते चलते गये।

किले के अन्दर किले की ऊॅची ऊॅची दीवारें बढ़िया परदों से ढकी हुई थीं। मैटियास का ध्यान एक खास परदे की तरफ गया जिसमें एक नौजवान लड़की एक घाटी में एक सन्तरे के बागीचे में खड़ी थी।

हालॉकि उसका मन वहॉ से हटने के लिये नहीं कर रहा था पर फिर भी वह अपने भाइयों की खोज जारी रखने के लिये वहॉ से

आगे बढ़ा। आखिर उसने उनको पा ही लिया। उस तहखाने का दरवाजा जिसमें उसके भाई कैद थे अपने आप ही खुल गया था।

सैनटियागो और टोमस दोनों उसके सामने गिड़गिड़ाये — "तुमको अकेला छोड़ने के लिये हमें माफ कर दो।"

मैटियास बोला — "अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। अब तो बस हमें इन सन्तरों को समुद्र के पास रहने वाली उस बुढ़िया के पास ले कर जल्दी ही पहुँचना चाहिये।"

सो सैनटियागे और टोमस उस किले की शान से प्रभावित होते हुए बेमन से मैटियास के पीछे पीछे हो लिये। मैटियास बोला — "हमको किसी चीज़ को छूना नहीं है। सफर के लिये केवल डबल रोटी और पानी ले लो।"

पर जब वे मैटियास के पीछे किले के बाहर जा रहे थे तो उन्होंने अपनी जेबें जो भी सोने और चाँदी की चीज़ें उनके हाथ लगीं उनसे भर लीं।

मैटियास जल्दी जल्दी बिना खाने और पीने के लिये रुके चला जा रहा था। हालाँकि सूरज बहुत गर्म था पर सन्तरे ताजा ही रहे।

पर इससे पहले कि वे किले से बहुत दूर पहुँचें मैटियास के दोनों भाइयों ने अपनी डबल रोटी खा कर खत्म कर ली थी और अपना सारा पानी भी खत्म कर लिया था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि सफर के अभी दो दिन और बचे हैं।

वह रात तीनों भाइयों ने एक चरवाहे की झोंपड़ी में बिताने का निश्चय किया पर सैनटियागो को रात भर नींद नहीं आयी।

वह इस बात से बहुत दुखी था कि उसका सबसे छोटा भाई वे सन्तरे ले कर जा रहा था जबकि वह सबसे बड़ा था और वह इस काम को नहीं कर सका।

सो आधी रात को वह उठा और अपने छोटे भाई के हाथ में लगी सन्तरों की शाख में से सबसे बड़ा सन्तरा तोड़ा और अपने सफर पर चल दिया।

सैनटियागो सारी रात चला और फिर अगली सारी सुबह चला। जल्दी ही सूरज ज़ोर से चमकने लगा और सैनटियागे को प्यास लग आयी। उसको लगा कि वह तो प्यास के मारे मर ही जायेगा।

जब वह प्यास और नहीं सह सका तो उसने वह रसीला सन्तरा खाने का निश्चय किया। पर जब उसने सन्तरे को बीच में से फाड़ा तो उसमें से एक बहुत ही सुन्दर जवान लड़की निकल पड़ी।

सन्तरे में से निकलते ही उसने उससे डबल रोटी माँगी।

सैनटियागो केवल यही कह सका — "डबल रोटी तो मेरे पास नहीं है वह तो मैंने सारी खा ली।" फिर उसने उससे थोड़ा सा पानी माँगा।

वह फिर बोला — "मैंने तो पानी भी सारा पी लिया।"

"तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ और फिर अपने पेड़ में।"

यह कह कर वह लड़की उसी सन्तरे में गायब हो गयी और फिर सन्तरा भी उसके हाथ से निकल कर गायब हो गया।

उसके जाने के बाद बाद वह धूल के एक तेज़ तूफान में फॅस गया। अचानक उसके चारों तरफ किले की दीवारें खड़ी हो गयीं।

उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा था। इतने में ही वे चौकीदार फिर से आ गये और उन्होंने उसको फिर से पकड़ कर उसी तहखाने में डाल दिया।

इस बीच टोमस सुबह उठा। जब उसने देखा कि सैनटियागो एक सन्तरा ले कर वहॉ से गायब है तो उसने भी अपने बड़े भाई की देखा देखी वही करने की सोची।

उसने भी बचे हुए दो सन्तरों में से बड़ा वाला सन्तरा शाख पर से तोड़ा और उसे ले कर वहॉ से चल दिया। मैटियास आराम से सोता रहा।

टोमस को भी पथरीला रास्ता और खूब गर्म सूरज मिला। जब उससे भी वह गर्मी नहीं सही गयी तो उसने भी मरने की बजाय सन्तरा खाना ज़्यादा अच्छा समझा।

जब उसने सन्तरा छीलना शुरू किया वह भी आश्चर्यचकित रह गया जब अचानक ही उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसमें से निकल कर खड़ी हो गयी।

इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी। उसके कीमती जवाहरातों और कपड़ों से लग रहा था कि वह बहुत अमीर थी।

निकलते ही उस लड़की ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मुझे थोड़ी डबल रोटी दो।"

टोमस तो बस इतना ही बोल सका — "मेरे पास तो कोई डबल रोटी नहीं है। मैंने तो अपनी सारी डबल रोटी खा ली।"

वह लड़की फिर बोली — "तो फिर थोड़ा सा पानी ही दे दो।"

वह दुखी हो कर बोला — "मेरे पास तो वह भी नहीं है। मैंने तो वह भी सारा पी लिया।"

वह लड़की बोली — "तब मैं पहले अपने सन्तरे में और फिर अपने पेड़ में वापस जाती हूँ।" यह कह कर वह उस सन्तरे में गायब हो गयी और सन्तरा वापस पेड़ पर चला गया।

उसके गायब हो जाने के बाद टोमस ने भी अपने आपको धूल के तूफान में घिरा पाया। उसके चारों तरफ भी किले की दीवार खड़ी हो गयीं और वे चौकीदार उसको भी पकड़ कर उसी तहखाने में डाल आये जहाँ सैनटियागो पड़ा हुआ था।

जब मैटियास सुबह जागा तो उसने देखा कि उसकी शाख पर अब केवल एक ही सन्तरा रह गया है। वह अपने भाइयों के लिये बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा कितने जल्दबाज हैं ये लोग।

डबल रोटी और पानी जो उसने बचा कर रखा था उसके सहारे मैटियास वह गर्म सूखी घाटी पार कर गया। शाम तक वह समुद्र के पास और फिर उस बूढ़ी स्त्री की गुफा तक पहुँच गया।

वह बूढ़ी स्त्री बोली — "मैं देख रही हूँ कि तुम तो पूरी शाख की शाख ही तोड़ लाये हो और तुमने तीनों सन्तरों को अलग अलग कर दिया है।

क्योंकि तुमने मेरा कहा नहीं माना इसलिये इससे जो आफत आने वाली है उससे मैं तुममें से किसी को नहीं बचा पाऊँगी।"

मैटियास ने पूछा — "पर मेरी पत्नी का क्या होगा? और मेरे भाई?"

वह बूढ़ी स्त्री बोली — "अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। तुम अपने घर वापस जाओ और अपने खेतों पर जाओ। इन्तजार करो और हमेशा अपने दिल की सुनो।" इतना कह कर वह अपनी गुफा में चली गयी।

मैटियास दुखी हो कर अपने घर लौट आया और अपनी माँ को आ कर उसने अपने सफर का हाल और अपनी मुसीबतों के बारे में बताया।

हालाँकि सैरा अपने बड़े बेटों के गायब हो जाने के बारे में सुन कर बहुत दुखी हुई पर वह मैटियास को वापस आया देख कर खुश भी थी।

हर सुबह जब मैटियास खेतों पर चला जाता तो एक सफेद फाख्ता आ कर सैरा के कन्धे पर बैठ जाती जैसे वह उसको तसल्ली दे रही हो।

जब सैरा अपने घर का काम करती रहती तो वह फाख्ता उसके साथ सारा दिन रहती। इससे सैरा को ऐसा लगता कि सब कुछ ठीक हो जायेगा।

एक सुबह जब गर्मियॉ खत्म हो रही थीं तो मैटियास खेत छोड़ कर जल्दी ही घर आ गया और मॉ से बोला — "मॉ मैं एक बार फिर से उस किले पर जाना चाहता हूॅ जहॉ में पहले गया था। मैं जा कर देखता हूॅ कि मैं अपने बड़े भाइयों को वहॉ फिर से पा सकता हूॅ या नहीं।"

फिर उसकी निगाह उस फाख्ता पर जा कर ठहर गयी जो उसकी मॉ के कन्धे पर बैठी हुई थी।

उसने मॉ से पूछा — "मॉ यह फाख्ता कहॉ से आयी?"

मॉ बोली — "यह तो मेरे पास रोज आती है और जब तुम खेतों पर होते हो तो यह सारा दिन मेरे साथ ही रहती है। मैं इसको ब्लैनक्विटा[55] कह कर पुकारती हूॅ।"

मैटियास ने अपना हाथ बढ़ाया तो वह फाख्ता उसके हाथ पर आ कर बैठ गयी। वह उसके ऊपर प्यार से हाथ फेरने लगा तो उसने उसकी गर्दन में एक कॉटा सा चुभा हुआ महसूस किया।

[55] Blanquita – name of the dove

उसने वह कॉटा बड़ी सावधानी से खींच कर निकाल दिया तो वह फाख्ता तो एक लड़की बन गयी।

वह लड़की बोली — "मेरा नाम ब्लैन्काफ्लोर[56] है" हम लोगों को यहॉ से तुरन्त ही चलना चाहिये। हमारे पास समय नहीं है। मैं खुद तुम्हारे साथ उस किले तक चलूॅगी।"

सो वे दोनों किले की तरफ चल दिये। इस बार वहॉ तक का सफर मैटियास को बहुत छोटा लगा।

जब वे दोनों किले की तरफ जा रहे थे तो ब्लैन्काफ्लोर ने मैटियास को बताया कि कैसे उसकी दो बहिनें और मॉ और वह खुद भी एक नीच जादूगर के शाप में जकड़ी हुई थीं क्योंकि उसके पिता ने अपनी किसी भी लड़की की शादी उससे करने से मना कर दिया था।

वह लड़की आगे बोली — "यह तो स्त्री का अधिकार है न कि वह किसी से भी शादी करे जिससे उसका मन करे। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?"

मैटियास की समझ में नहीं आया कि वह उसको उसकी इस बात का क्या जवाब दे जो वह उसको चुन ले।

जब वे उस सन्तरे के बाग में पहुॅच गये तो उन्होंने देखा कि बाग के सारे सन्तरे पक गये हैं पर ब्लैन्काफ्लोर मैटियास को सीधे

[56] Blancaflor – name of the princess

उसी पेड़ के पास ले गयी जिस पेड़ की शाखा वह पहले तोड़ कर लाया था। वहॉ दो सन्तरे लटके हुए थे।

मैटियास ने ब्लैन्काफ्लोर को ऊपर उठाया ताकि वह उस शाख तक पहुॅच सके। ब्लैन्काफ्लोर ने सावधानी से वे दोनों सन्तरे तोड़ लिये और उनको घास पर रख दिया।

जैसे ही उसने उनको घास पर रखा वे दोनों दो लड़कियों में बदल गये। ये दोनों लड़कियॉ ब्लैन्काफ्लोर की बहिनें थीं। उसी समय वह बूढ़ा भी किले में से बाहर आ गया और अपनी तीनों बेटियों को देख कर बहुत खुश हुआ।

इतने में वह पेड़ भी हिला और सबकी ऑखों के सामने देखते देखते वह एक स्त्री बन गया। तीनों बहिनें चिल्लायीं "मॉ"।

उस बूढ़े आदमी ने भी अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपनी बेटियों को उनके दोनों गालों पर चूमा।

ब्लैन्काफ्लोर बोली — "मेरे माता पिता से मिलो और मेरी बहिनों से – ज़ैनाइडा और ज़ोराइडा[57]।"

मैटियास बोला — "अब मुझे अपने भाइयों को ढूॅढना है।"

बूढ़े ने किले के दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "अब किले के सारे दरवाजे खुले हैं तुम अन्दर जा सकते हो।"

मैटियास ने देखा कि उसके भाई सैनटियागो और टोमस दोनों उस किले के दरवाजे में से बाहर चले आ रहे हैं।

[57] Zenaida and Zoraida – names of the two elder sisters out of the three daughters of the King

मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों ने दोनों भाइयों को नमस्ते की पर जब सैनटियागो ने ज़ैनाइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने जवाब दिया — "एक बेवकूफ बेकार के आदमी से शादी करने की बजाय तो मैं अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

और जब टोमस ने ज़ोराइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने भी यही कहा — "मैं किसी बेवकूफ लालची आदमी से शादी करने की बजाय अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।" इसलिये महल में केवल एक ही शादी हुई।

शादी के बाद मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों अपने उस सफेद घर को लौट आये जो समुद्र के पास था जहाँ की खिड़कियों के पत्थरों पर उन्होंने जिरेनियम के फूलों से भरे गमले रखे और सैरा का दिल खुशियों से भर दिया।

किसी को नहीं पता कि सैनटियागो और टोमस का क्या हुआ पर अगर हमें उनके बारे में कुछ भी पता चला तो हम तुम लोगों को उनके बारे में जरूर बतायेंगे।

19 जादुई शीशा[58]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार ग्रेनेडा[59] के राजा ने सोचा कि वह शादी करेगा। तो सबसे पहले यह खबर उसके नाई को दी गयी। उसके बाद उसके रात के पहरेदार को और उसके बाद उस शहर की सब बूढ़ी स्त्रियों को दी गयी।

नाई ने यह खबर अपने सब जानने वालों को दी जिन्होंने यह खबर अपने सब दोस्तों को दी। उस रात रात वाले पहरेदार ने यह खबर बहुत ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर सब नौजवान लड़कियों को दी जिससे वे खुशी के मारे सारी रात सो न सकें।

बड़ी बूढ़ी स्त्रियॉ नौजवान लड़कियों को हमेशा याद दिलाती रहीं कि राजा ने शादी करने का फैसला कर लिया है।

बूढ़ी स्त्रियॉ नाई से पूछतीं — "राजा अपनी पत्नी कैसे चुनेगा।"

तो नाई जवाब देता — "राजा के लिये अच्छी पत्नी ढूँढने में तो मुझे बहुत मुश्किल होगी।"

---

[58] The Magic Mirror – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/351/preview

[59] Granada is an island in Caribbean Sea.

स्त्रियॉ आश्चर्य से कहतीं — "क्या तुम? क्या तुम राजा की पत्नी चुनोगे? मगर राजा की पत्नी ढूँढने में तुम क्या करोगे?"

इस पर नाई जवाब देता — "मैं एक अकेला ही आदमी तो हूँ जो शाही चेहरे को छूता हूँ। और इससे ज़्यादा क्या।

मेरे पास एक जादुई शीशा है। अगर किसी लड़की का बहुत सुन्दर चेहरा है पर उसका चरित्र अच्छा नहीं है तो उसके चरित्र के धब्बे उस शीशे की सतह पर धब्बों की शक्ल में दिखायी दे जायेंगे। इससे पता चल जायेगा कि वह लड़की कैसी है।"

सब स्त्रियों ने पूछा — "लड़की चुनने की क्या कई शर्तों में से यह भी एक शर्त है?"

नाई बोला — "कई नहीं बस यही एक शर्त है। कोई भी लड़की जो अठारह साल से ऊपर की हो वह राजा से शादी करने के लिये ठीक है। पर वे सब रानी बनने के लायक होनी चाहिये। हर लड़की मेरे साथ शीशा देखेगी और जिसके चेहरे के साथ कोई धब्बा दिखायी नहीं देगा वही राजा की रानी बनेगी।"

इस तरह जो भी ग्रेनेडा की रानी बनेगी उस पर यह एक शर्त लगायी गयी और सबको बतायी गयी। बड़ी अजीब सी बात कि कोई भी लड़की नाई के पास उस शीशे में अपना चेहरा देखने के लिये नहीं आयी।

दिन और हफ्ते निकलते चले गये और राजा को अभी अपनी पत्नी को पाने का कहीं कुछ अता पता भी नहीं था। कुछ स्त्रियों ने

कुछ लड़कियों को नाई के पास जाने के लिये कहा भी कि वे वहॉ जा कर उस शीशे में अपना चेहरा देखें पर किसी की ऐसी कोई हिम्मत ही नहीं पड़ी।

राजा बहुत सुन्दर था। उसकी प्रजा भी उसको बहुत प्यार करती थी। इसलिये यह एक बड़े आश्चर्य की बात थी कि उसके दरबार में आने वाली कोई भी लड़की उसकी पत्नी बनना नहीं चाहती थी।

बहुत सारी लड़कियों ने बहुत सारे बहाने बनाये जैसे कि कुछ ने कहा कि उनकी शादी तो पहले ही पक्की हो चुकी है। कुछ ने कहा कि वे नाई की दूकान में जाना ही पसन्द नहीं करतीं। कुछ ने अपनी दोस्तों को कहा कि वे अकेली रहना ज़्यादा पसन्द करेंगीं।

हर सुबह राजा नाई से पूछता कि क्या कोई लड़की उसके शीशे में अपना चेहरा देखने के लिये आयी पर नाई का जवाब वही रहता कि बहुत सारी लड़कियॉ तो यही देखती रहतीं हैं कि दूसरे कितने लोग उसकी दूकान के अन्दर आते हैं पर वे खुद नहीं आतीं।

राजा नाई से बोला — "ओह ग्रेनेडा ओह ग्रेनेडा। क्या इस देश में कोई ऐसी लड़की नहीं है जो राजा की पत्नी बन सके। मुझे मालूम है कि दूसरे देशों के राजाओं को शादी करने में कोई मुश्किल नहीं पड़ती फिर मुझे इतनी मुश्किल क्यों पड़ रही है।"

नाई ने जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, एक बात सम्भव हो सकती है। पहाड़ों की तरफ एक भेड़ चराने वाली रहती है वह इस

शीशे में देखने का खतरा मोल ले सकती है। पर क्या आप उतनी नीची लड़की से शादी करेंगे?"

राजा बोला — "ठीक है उस भली भेड़ चराने वाली को आने दो और मेरे दरबार में उसको अपने शीशे में अपना चेहरा देखने दो।"

सो नाई उस भेड़ चराने वाली को ले कर दरबार में आया। सारे शहर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया गया कि आज दरबार में एक भेड़ चराने वाली का इम्तिहान लिया जायेगा।

तुरन्त ही शाही दरबार शानदार स्त्रियों से और राजा के परिवार के नाइट्स से भर गया। जब वह भेड़ चराने वाली लड़की दरबार में घुसी तो वह अपने आपको इतने सारे अमीरों से घिरी हुई देख कर बहुत शर्मा रही थी।

राजा ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया और उससे कहा कि अगर उसको राजा से शादी करनी है तो उसको एक जादुई शीशे में देखना पड़ेगा। अगर उसने कभी भी कोई भी बुरा काम किया होगा तो यह शीशा उतने ही धब्बे अपने ऊपर दिखा देगा।

भेड़ चराने वाली लड़की ने कहा — "गलतियॉ हर एक से होती हैं राजा साहब और मैं कोई अलग नहीं हूँ। मैंने अपने भेड़ों के झुंड के साथ कुछ गलतियॉ की हैं पर मैं यह सोचती हूँ कि उन्हें मेरी वे गलतियॉ माफ कर देनी चाहिये क्योंकि वे रोज मुझे अपनी देखभाल करने देती हैं।

क्योंकि अगर इनको कोई खतरा महसूस होता भी है तो भी ये अपनी सुरक्षा के लिये मेरे ही पास दौड़ी आती हैं। मैं अपनी भेड़ों से बहुत प्यार करती हूँ और उनके लिये हमेशा सबसे अच्छा करने को तैयार रहती हूँ।

सच तो यह है कि मेरी रानी बनने की कोई इच्छा नहीं है फिर भी मुझे उस शीशे में देखने में कोई डर नहीं है।"

कह कर वह शीशे की तरफ बढ़ी और उसने उसमें देखा। शायद अपनी शक्ल देख कर वह शर्मा गयी।

दरबार की दूसरी स्त्रियाँ उसके चारों तरफ घिर आयीं। उन्होंने देखा कि शीशे ने तो कोई धब्बा नहीं दिखाया तो उन्होंने उससे वह शीशा छीन लिया और एक दूसरे को उनको अपना चेहरा देखने के लिये देने लगीं।

वे उस शीशे में अपना चेहरा देखती जाती थीं और कहती जाती थीं — "अरे देखो तो जब हम लोग भी इस शीशे में अपना चेहरा देख रही हैं तो इस शीशे पर भी कोई धब्बा नहीं है। लगता है कि यह कोई जादू का शीशा नहीं है बल्कि ऐसे ही सादा सा शीशा है। यह तो हमारे साथ चाल खेली गयी है।"

राजा बोला — "ओ स्त्रियों तुम सब लोग ठीक कहती हो। इस शीशे में कोई जादू नहीं है पर अगर तुम लोगों में अपने चरित्र में उतना ही विश्वास होता जितना इस भेड़ चराने वाली लड़की को है जो अब मेरी रानी बनने जा रही है तो तुम लोगों ने शीशे में देखने से

कभी मना नहीं किया होता। अब मुझे मालूम हुआ कि मेरी पत्नी तुम सब लड़कियों में सबसे अच्छी है।"

20 चूहा और हाथी[60]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के तुर्की देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक छोटे से चूहे ने जंगल की जमीन पर अपना पैर मारा, फिर उसके ऊपर अपना कान लगा कर यह सुनने की कोशिश की कि उसके पैर मारने से दुनियॉ हिल रही थी या नहीं। उसको लगा कि उसके पैर मारने से सारी दुनियॉ हिल गयी थी।

वह चिल्लाया — "मैं दुनियॉ का सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मेरे तो केवल पैर मारने से ही सारी जमीन हिल गयी।"

चूहे का चाचा वहीं बैठा था बोला — "ज़रा धीरे बोल कहीं ऐसा न हो कि हाथी सुन ले। हाथी बहुत ताकतवर होता है उसको तेरी यह डींग सुन कर अच्छा नहीं लगेगा।"

छोटे चूहे ने पूछा — "कहॉ है हाथी? मैं उसको ढूँढ कर यह दिखा दूँगा कि कौन सबसे ज़्यादा ताकतवर है, वह या मैं। मैं उसको हरा दूँगा आप देखियेगा चाचा जी।" यह कह कर वह छोटा चूहा हाथी को ढूँढने चल दिया।

---

[60] The Mouse and the Elephant – a folktale from Turkey, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=210
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

चलते चलते उसको एक गिरगिट मिला तो उसने उससे पूछा — "क्या तुम हाथी हो?"

गिरगिट बोला — "नहीं मैं गिरगिट हूँ।"

छोटा चूहा बोला — "तुम खुशकिस्मत हो कि तुम गिरगिट हो वरना मैं तुमको अभी हरा देता। मुझे जब हाथी मिल जायेगा तो मैं उसको हरा दूँगा।"

गिरगिट उस डींग मारने वाले चूहे पर बहुत ज़ोर से हँसा। पर चूहे ने अपना पैर फिर जमीन पर पटका तो उसके पैर पटकते ही बादलों में गर्ज की आवाज गूँज गयी। उसको लगा कि वह गरज की आवाज चूहे के पैर पटकने की आवाज थी।

यह आवाज सुन कर गिरगिट डर गया और भाग गया। चूहे ने सोचा — "मैंने उसको दिखा दिया कि मैं कितना ताकतवर हूँ।" और वह फिर हाथी की खोज में चल दिया।

आगे जा कर उसको एक कुत्ता मिला। उसने कुत्ते से पूछा — "क्या तुम हाथी हो?"

कुत्ता बोला — "नहीं, मैं हाथी नहीं हूँ मैं तो कुत्ता हूँ।"

छोटा चूहा बोला — "तुम खुशकिस्मत हो कि तुम कुत्ता हो वरना मैं तुमको हरा देता। मुझे जब हाथी मिल जायेगा तो मैं हाथी को हरा दूँगा।"

कुत्ते ने भी चूहे की घमंड भरी बातें सुन कर हँसना शुरू कर दिया। पर चूहे ने एक बार फिर अपना पैर जमीन पर मारा और

जैसे ही उसने अपना पैर जमीन पर मारा कि कुत्ते के मालिक ने अपनी सीटी बजायी।

सीटी की आवाज सुन कर कुत्ता बड़ी तेज़ी से दूसरी तरफ भाग गया। चूहे ने सोचा — "मैंने उस कुत्ते को भी दिखा दिया कि मैं कितना ताकतवर हूँ।" और वह फिर हाथी की खोज में चल दिया।

चलते चलते वह एक नदी के पास आया। वहाँ भूरे रंग का एक बहुत बड़ा जानवर खड़ा हुआ था। वह तो पहाड़ जितना बड़ा था। उसकी टाँगें पेड़ जितनी बड़ी थीं। उसके बहुत बड़े बड़े कान थे और उसकी बहुत लम्बी नाक थी।

वह हाथी नदी के ऊपर झुका हुआ पानी पी रहा था जब उसने चूहे को देखा। उसको वह चूहा एक बहुत छोटे से बिन्दु की तरह घूमता नजर आ रहा था।

चूहा उससे बोला — "क्या तुम हाथी हो? मैं दुनियाँ का सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। अगर तुम हाथी हो तो मैं तुमको हरा दूँगा।"

यह सुन कर हाथी बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। जैसे ही वह हँसा तो उसकी नाक से पानी उछला और इधर उधर बिखर गया।

उस पानी के ज़ोर ने चूहे को गिरा दिया और वह लुढ़कता हुआ रास्ते पर नीचे की तरफ गिरता चला गया। उसको लगा कि वह पानी में डूबता जा रहा है।

जब तक वह सँभल कर उठ कर खड़ा हुआ तब तक हाथी जा चुका था। उसने सोचा — "मुझे लगता है कि हाथी यह जान गया था कि मैं कितना ताकतवर हूँ। इसी लिये वह इस भयानक तूफान से डर कर भाग गया। वह जान गया था कि मैं उसको हरा दूँगा।"

छोटा चूहा अपने चाचा के पास गया और उसको बताया कि बजाय लड़ने के हाथी किस तरह उससे डर कर भाग गया।

यह सुन कर चूहे के चाचा ने यह सब अपने दोस्तों को बताया कि किस तरह से उसके भतीजे ने एक हाथी को डरा कर भगा दिया। उसके दोस्तों ने अपने जानने वालों को बताया ।और फिर उन्होंने अपने जानने वालों को बताया। यहाँ तक कि चूहे की यह कहानी आदमी लोगों ने भी सुनी कि एक हाथी एक चूहे से डर कर भाग गया।

इसके बाद सब लोग जान गये कि हाथी चूहों से डरते हैं। पर यह तो हाथी को ही ज़्यादा पता था कि असलियत क्या थी। अब जब भी हाथी पानी पीता है वह हमेशा हँसता है और अपनी नाक से पानी बिखेर देता है और चूहा अपने घमंड में यह सोचता है कि उसने हाथी का डरा दिया।

21 गाय का सिर[61]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के यूक्रेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

ओक्साना अपने पिता, अपनी सौतेली मॉ और अपनी सौतेली बहिन के साथ शहर के किनारे के एक छोटे से गॉव में रहती थी। ओक्साना की सौतेली मॉ ओक्साना को बिल्कुल नहीं चाहती थी वह बस अपनी बेटी ओलीना[62] को ही ज़्यादा प्यार करती थी।

अपने पिता की दूसरी शादी के जल्दी ही बाद ओक्साना को यह पता चल गया कि अब घर का सारा काम उसी के कन्धों पर आ पड़ा है जबकि ओलीना अपना सारा दिन आराम से गुजारती।

ओक्साना का पिता एक बहुत ही कम बोलने वाला आदमी था और अपनी पत्नी के सामने उसके खिलाफ नहीं बोल सकता था सो वह ओक्साना के लिये कुछ नहीं कर सकता था।

औक्साना ओलीना के पुराने कपड़े पहनती थी। ठंड में काम करते करते उसके हाथ लाल हो जाते थे और फट जाते थे जबकि ओलीना अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर पार्टियों में जाती रहती थी।

---

[61] Cow's Head – a folktale from Ukraine, Europe. Adapted from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/07/cows_head.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

[62] Oksana and Olena – names of the two step sisters

इस तरह से ओलीना आलसी भी होती जा रही थी और बिगड़ती भी जा रही थी।

एक साल जब जाड़ों में बर्फ बहुत ज़्यादा पड़ रही थी तो ओक्साना के परिवार के पास पैसा खत्म हो गया। सो ओक्सना की सौतेली मॉ ने ओक्साना के पिता से कहा कि वह ओक्साना को कहीं भेज दे क्योंकि वे दो लड़कियों को एक साथ नहीं रख सकते थे।

न चाहते हुए भी ओक्साना का पिता ओक्साना को वहॉ से भेजने पर राजी हो गया। वह उसको जंगल के काफी अन्दर एक घर में ले गया और वहॉ छोड़ आया।

ओक्साना बहुत डरी हुई थी क्योंकि वह जंगल राक्षसों से भरा हुआ था। लेकिन ओक्साना जानती थी कि उसको क्या करना है। वह उस मकान में अपनी एक छोटी सी पोटली ले कर घुसी।

उसको वहॉ पर एक आग जलाने की जगह[63] मिल गयी, एक छोटी मेज दिखायी दे गयी और एक जंग लगा बर्तन मिल गया। ओक्साना ने अपनी डबल रोटी, चाकू और चीज़ का टुकड़ा जो उसके पिता ने उसको चलते समय दिया था एक तरफ को रख दिया।

उसने अपना कम्बल आग जलाने की जगह के पास तह कर के रख दिया। फिर उसने कुछ लकड़ियॉ इकट्ठी कीं और आग जलायी।

[63] Fireplace – where fire is burnt in winter to keep the house warm

ओक्साना जानती थी कि उसकी वह डबल रोटी और चीज़ सारे जाड़े तो चल नहीं पायेगी सो उसने पेड़ की पतली शाखाओं से एक जाल बनाया जिससे उसने एक जाड़े वाला खरगोश[64] पकड़ा।

उसने बरफ खोद कर खाने के लिये कुछ जड़ें और बैरी[65] ढूँढी। जब तक अँधेरा हुआ उसने थोड़ा सा बर्फ पिघला कर पीने के लिये पानी भी बना लिया था।

सो ओक्साना ने आराम से खाया पिया और रात बिताने के लिये आग के पास लेट गयी। वह हवा के बहने की आवाज सुनती रही और यह सोचती रही कि वह जंगल से नहीं डरती।

आधी रात को दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। खट खट खट। उस अँधेरे मकान में वह आवाज गूँज गयी और ओक्साना अचानक ही जाग गयी।

उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसको लगा कि बाहर कहीं कोई राक्षस न हो। वह आवाज फिर आयी – खट खट खट। सुन कर उसने अपना सिर कम्बल में छिपा लिया और प्रार्थना करने लगी कि इस समय जो भी बाहर है वह वहाँ से चला जाये।

---

[64] Snow rabbit – it lives in cold climate

[65] Roots and Berries. See the picture of berries above.

खट खट खट। ओक्साना उठी। उसने पेड़ की एक शाख अपने हाथ में उठा ली और धीरे धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ी। घर की चिमनी से आती हुई हवा बड़ी अजीब सी आवाज कर रही थी।

उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था जैसे ही उसने बाहर झॉक कर देखा। फिर उसने नीचे देखा तो डर के मारे ओक्साना की एक ज़ोर की चीख निकल गयी और वह पीछे की तरफ हट गयी। डंडी उसके हाथ से छूट गयी।

वहॉ तो एक राक्षस खड़ा था - एक बुरी आत्मा। उसका कोई शरीर नहीं था। ओक्साना हकला कर बोली — "तुम कौन हो?"

वह बोला — "मैं गाय का सिर हूँ।"

ओक्साना ने फिर से देखा, हॉ वह तो सचमुच वही था। वह सिर भूरा था और उसके अजीब से सींग थे और डरावनी ऑखें थीं।

गाय के सिर ने पूछा — "मुझे बहुत ठंड लग रही है और भूख भी। क्या मैं तुम्हारी आग के पास सो सकता हूँ?" उसकी आवाज ठंडी और मरी हुई सी थी।

ओक्साना ने अपने डर को हटाया और बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

गाय का सिर बोला — "तुम मुझे दरवाजे से ऊपर उठाओ।"

ओक्साना ने वैसा ही किया।

"अब तुम मुझे आग के पास रख दो।"

अब ओक्साना का डर निकल गया था और उसके दिल में उस राक्षस के लिये दया पैदा हो गयी थी। उसने उस सिर को दरवाजे से ऊपर उठाया और उसको आग के पास रख दिया।

गाय का सिर फिर बोला — "मुझे भूख लगी है। मुझे कुछ खिला दो।"

ओक्साना ने अपने थोड़े से खाने की तरफ देखा। उसके पास जो सूप था वह उसके सुबह के नाश्ते के लिये था पर वह उसने उसे उस गाय के सिर को पिला दिया।

"अब मैं सोऊँगा।" राक्षस की आवाज में ओक्साना के लिये नम्रता की कोई भावना नहीं थी फिर भी ओक्साना ने गाय के सिर को जितने आराम से रख सकती थी रखने की कोशिश की।

उसने अपना कम्बल भी गाय के सिर को ओढ़ा दिया था और खुद वह अपना कोट पहने ही एक ठंडे कोने में सिकुड़ी सी सो गयी थी।

सुबह को जब वह उठी तो गाय का सिर तो वहाँ से चला गया था पर जहाँ वह सोया था वहाँ एक बहुत बड़ा बक्सा रखा था जो बहुत सुन्दर सुन्दर पोशाकों से भरा हुआ था। और उन पोशाकों के नीचे बहुत सारा सोना और बहुत सारे जवाहरात थे।

ओक्साना तो उस सबको देखते ही आश्चर्य में पड़ गयी।

तभी उसके कानों में अपने पिता की आवाज पड़ी — "बेटी, मैं तुम्हें लेने आया हूँ।"

ओक्साना अपने पिता की आवाज सुन कर बहुत खुश हुई और बक्सा भूल कर अपने पिता से लिपट गयी। वह बोली — "आइये पिता जी।"

उसके पिता ने उसकी सौतेली मॉ को किसी तरह इस बात पर मना लिया था कि वह ओक्साना को वापस घर ले आये। इसलिये वह ओक्साना को घर ले जाने के लिये आया था।

ओक्साना अपने पिता को घर के अन्दर ले गयी और बक्सा दिखाते हुए बोली — "देखिये पिता जी।"

फिर उसने अपने पिता को सब समझाया कि पिछली रात उसके साथ क्या क्या हुआ था।

उसका पिता उसको घर वापस ले गया। अपने गॉव में उसके अपने दया के बर्ताव की वजह से बड़ी इज़्ज़त हुई। कई लड़के उससे शादी की इच्छा से आने लगे सो जल्दी ही उसकी शादी भी हो गयी।

उसका खजाना देख कर ओक्साना की सौतेली मॉ ने अपनी बेटी ओलीना को भी उस जंगल वाले मकान में भेजा और वहॉ एक रात गुजारने के लिये कहा। पर जब गाय का सिर वहॉ आया वह आलसी होने की वजह से उसकी सेवा नहीं कर सकी। अगली सुबह उसके अपने कपड़े चिथड़ों में बदल चुके थे और जो कुछ उसके पास था वह भी सब मिट्टी में मिल गया था। पर ओक्साना काफी बड़ी उमर तक ज़िन्दा रही और खुशी से रही।

List of Stories of the Book “Folktales of Europe-1”

1. Apple of Contentment
2. The Beggar and Bread
3. Two Brothers and a White-Bearded Man
4. Darning Needle
5. Promise of Eagles
6. The Prince and the Pea
7. A Prince and the Apple
8. Half Rooster
9. The Singing Rose
10. Why Man Lives 80 years
11. The Porridge Pot
12. Long, Broad and Sharpsighted
13. The Clever Princess
14. The Soldier and the Devil
15. The Orphan Boy and Hell-Hounds
16. Royal Herd-boy
17. Half a Blanket
18. One or Two Pinch Salt
19. Beauty and the Beast
20. How the Bear Learnt to Eat Meat
21. Six Candles
22. The White Cat

List of Stories of the Book “Folktales of Europe-2”

1. The King Midas
2. The Cardplayer
3. North Wind and the Sun
4. The Hungry Wolf
5. Brabo and the Giant
6. The Prince Kindhearted
7. The Mouse
8. Baker's Idle Son
9. The Three Citrons of Love
10. Vain Queen
11. Boys With Golden Stars
12. Mother's Darling Jack
13. Fox and Hedgehog at the Henhouse
14. Voice of the Death
15. Dog, Cat and Mouse
16. Little Half Chick
17. The Emperor's New Clothes
18. The Three Golden Oranges
19. The Magic Mirror
20. The Mouse and the Elephant
21. Cow's Head

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022